श्री जैन स्तुति.

सुधारो करी लखनार खंभात संप्रदायना
मुनिश्री छगनलालजी महाराज.
मु. खंभात.

छपावी प्रसिद्ध करनार,
त्रीभोवनदास रुगनाथदास शाह.
आकाशेठना कुवानी पोळ—अमदावाद.

(आवृत्ति ४ थी.)

सत्यविजय प्रिन्टिंग प्रेसमां—सांकलचंद
हरिलाले छाप्युं—अमदावाद.

संवत १९७०—सने १९१४—प्रत ४०००

किम्मत. ०—४—६

आ पुस्तकमां अनुपूर्वी, छंदसंग्रह, सज्झायसंग्रह, स्तोत्रसंग्रह, अध्ययनसंग्रह, तथा नित्यनियमादिप्रकरणनो समावेश थाय छे.

प्रस्तावना.

सर्वे सुज्ञ जैन धर्माभीलाषीओने सविनय नीवेदन करवानुं के, आ पुस्तकनी गुजराती तेमज देवनागरी लिपीमां चार आवृत्ति छपाइ बहार पडेल छे, अने ते दरेक जैन बंधुने अत्यंत उपयोगी अने वांचवा लायक छे.

अमे दरेक आवृत्तिमां सुधारो वधारो करताज आव्या छीए. परन्तु आ आवृत्तिमां वांचकवर्गनी सुगमता सारु, छंद संग्रहादिक पांच विभाग पाडवामां आव्या छे. तेमज अनुक्रमणिका पण करेली छे, जेथी कोइ पण छंद के सज्झाय विगेरे अनुक्रमणिकामां जोवाथी तरतज दरेक विषय सहेलाइथी समजाशे.

संस्कृतमां भक्तामर स्तोत्र, अने किंकर्पूर स्तोत्र भावार्थ सहित तेमज दशवैकालीकनुं चोथुं अध्ययन, नित्य नियमादि प्रकरण, आ-

टली बाबतो नवीन दाखल करेली छे, तेथी पुस्तकनुं कद २२४ पृष्ठनुं थयुं छे, अने पुंठुं पाकुं सुशोभीत, उत्तम कागळ, सुंदर छपाइ साथे तैयार करवामां, हालना बारीक वखतमां कागळ विगेरे तमाम चीजनो भाव एकदम वधी जवाथी, अमोने ज्यादे खर्च लागल छे ते उपर ध्यान न आपतां किंमतमां फक्त एक आनानो वधारो करेल छे. परमात्मानी स्तुति करवांनी कया पुरुषने इच्छा नहीं होय? आवा अमुल्य रत्ननी अमे वधारे प्रशंसा करवा मागता नथी, अमे आशा राखीए छीए के वांचक महाशय तेहेनी कदर समजशे.

जैन बुकसेलर.

त्रीभोवनदास रुगनाथदास शाह.

१-१०-१४ गुरुवार. } आकाशेठना कुवानी पोळ. अमदावाद.

अनुक्रमणिका.



नंबर.	विषय.	पृष्ठ.
१	अनुपूर्वी	२.
	छंद संग्रह—प्रकरण १ लुं.	
२	सिद्ध प्रभुनो छंद	१२
३	पार्श्वनाथनो छंद	१४
४	पार्श्वनाथनो छंद	२१
५	शांतिनाथनो छंद	२३
६	गौत्तम स्वामिनो छंद	२७
७	सोळ सतिनो छंद	२९
८	चिंतामणि पार्श्वनाथनो छंद	३२
९	महाविर स्वामिनो छंद	३८
१०	पांसठीया यंत्रनो छंद	३९

११	नवकारनो छंद	४१
१२	वीरजीन छंद	४३
१३	पार्श्वनाथनो छंद	४५
१४	शांतिनाथनो छंद	४७
१५	श्री महाविर छंद	४८
१६	चिंतामणि पार्श्व०नो छंद	४९
१७	पार्श्वनाथनो छंद	५३
१८	चोवीस तिर्थंकरनुं स्तवन	५४
१९	तिर्थंकरनुं स्तवन	५७
२०	चोवीस तिर्थंकरनुं स्तवन	५९
२१	नवकारनो छंद	६१
२२	शांतिनाथनो छंद	६६
२३	चार शरणां	७१
२४	ज्वर (ताव) नो छंद	७२
२५	श्री महाविर छंद	७७

२६ चौद स्वप्न ८१
२७ महाविर जीन छंद ८२
२८ शांतिनाथनो छंद ८५

सज्झाय संग्रह—प्रकरण बीजुं.

२९ दिवाळीनुं स्तवन. ८९
३० श्री विरनुं हालरीयुं. ९२
३१ जीवराशीनी सझाय. ९८
३२ महाविरनुं चोढालीयुं. १०४
३३ लघु साधु वंदना. ११७
३४ म्होटी साधु वंदना. ११९
३५ दया सुखनी वेलडी. १३५

स्तोत्र संग्रह—प्रकरण त्रीजुं.

३६ भक्तामर स्तोत्र. १३८
३७ किंकर्पूरमय स्तोत्र भावार्थ सहीत. १५१

अध्ययन संग्रह–प्रकरण चोथुं.

३८ श्री दशवैकालिकनुं १–२–३–४
अध्ययन. १६४
३९ श्री उत्तराध्ययननुं ३–४ अध्ययन. १८८
४० श्री महावीर स्तुति (पुछीसुणं) १९३
४१ प्रस्ताविक गाथाओ. १९९
४२ पंच परमेष्ठी वंदणा. २०३
४३ श्री चोवीश तीर्थंकरनी स्तुति. २०७
४४ श्री चोविश तिर्थंकर देवना नाम २०८
४५ विश विहरमान तिर्थंकरना नाम २०९
४६ नित्य नियम चिंतवना २१०



आनुपूर्व्वि.

ज्यां १ छे त्यां नमो अरिहंताणं कहेवुं.

ज्यां २ छे त्यां नमो सिद्धाणं कहेवुं.

ज्यां ३ छे त्यां नमो आयारियाणं कहेवुं.

ज्यां ४ छे त्यां नमो उवझायाणं कहेवुं.

ज्यां ५ छे त्यां नमोलोए सव्वसाहुणं कहेवुं.

चोपाइ तथा दोहरा.

आनुपूर्व्वि गणज्यो जोय, छमासी तपनुं फल होय; संदेह नव आणो लगार, नीर्मल मने जपो नवकार ॥ १ ॥ शुद्ध वस्त्र धरी वीवेक, दीन दीन प्रत्ये गणवी एक; एम आनुपूर्वि जे गणे, ते पांचसे सागरना पापने हणे ॥ २ ॥ अशुभ कर्म के हरणकुं, मंत्र बडो नवकार ॥ वाणी द्वादश अंगमें; देख लीयो तत्व सार ॥ ३ ॥

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
୩	୩	୩	୩	୩	୩
୪	୪	୨	୨	୧	୧
୨	୧	୪	୧	୪	୨
୧	୨	୧	୪	୨	୪

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
୪	୪	୪	୪	୪	୪
୩	୩	୨	୨	୧	୧
୨	୧	୩	୧	୩	୨
୧	୨	୧	୩	୨	୩

൫	൫	൫	൫	൫	൫
൧	൧	൧	൧	൧	൧
൪	൪	൩	൩	൨	൨
൩	൨	൪	൨	൪	൩
൨	൩	൨	൪	൩	൪

൫	൫	൫	൫	൫	൫
൨	൨	൨	൨	൨	൨
൪	൪	൩	൩	൧	൧
൩	൧	൪	൧	൪	൩
൧	൩	൧	൪	൩	൪

๘	๘	๘	๘	๘	๘
๓	๓	๓	๓	๓	๓
๖	๖	๒	๒	๑	๑
๒	๑	๖	๑	๖	๒
๑	๒	๑	๖	๒	๖

๘	๘	๘	๘	๘	๘
๖	๖	๖	๖	๖	๖
๓	๓	๒	๒	[illegible]	๑
๒	๑	๓	๑	๓	๒
๑	๒	๑	๓	๒	๓

๘	๘	๘	๘	๘	๘
๒	๒	๒	๒	๒	๒
๔	๔	๓	๓	๔.	๑
๓	๑	๔	๑	๔	๓
๑	๓	๑	๔	๓	๔

๘	๘	๘	๘	๘	๘
๑	๑	๑	๑	๑	๑
๔	๔	๓	๓	๒	๒
๓	๒	๔	๒	๔	๓
๒	๓	๒	๔	๓	๔

༣	༣	༣	༣	༣	༣
༤	༤	༤	༤	༤	༤
༥	༥	༢	༢	༡	༡
༢	༡	༧	༡	༥	༢
༡	༢	༡	༥	༢	༥

༣	༣	༣	༣	༣	༣
༥	༧	༧	༧	༧	༧
༤	༤	༢	༢	༡	༡
༢	༡	༤	༡	༤	༢
༡	༢	༡	༤	༢	༤

៣	៣	៣	៣	៣	៣
២	២	២	២	២	២
៥	៥	៤	៤	១	១
៤	១	៥	១	៥	៤
១	៤	១	៥	៤	៥

៣	៣	៣	៣	៣	៣
១	១	១	១	១	១
៥	៥	៤	៤	២	២
៤	២	៥	២	៥	៤
២	៤	២	៥	៤	៥

၁	၁	၁	၁	၁	၁
၈	၈	၈	၈	၈	၈
၃	၃	၅	၅	၄	၄
၅	၄	၃	၄	၃	၅
၄	၅	၄	၃	၅	၃

၁	၁	၁	၁	၁	၁
၃	၃	၃	၃	၃	၃
၈	၈	၅	၅	၄	၄
၅	၄	၈	၄	၈	၅
၄	၅	၄	၈	၅	၈

๘	๘	๘	๘	๘	๘
๑	๑	๑	๑	๑	๑
๔	๔	๒	๒	๓	๓
๒	๓	๔	๓	๔	๒
๓	๒	๓	๔	๒	๔

๘	๘	๘	๘	๘	๘
๓	๓	๓	๓	๓	๓
๔	๔	๒	๒	๑	๑
๒	๑	๔	๑	๔	๒
๑	๒	๑	๔	๒	๔

൧	൧	൧	൧	൧	൧
൪	൪	൪	൪	൪	൪
൫	൫	൩	൩	൨	൨
൩	൨	൫	൨	൫	൩
൨	൩	൨	൫	൩	൫

൧	൧	൧	൧	൧	൧
൫	൫	൫	൫	൫	൫
൪	൪	൩	൩	൨	൨
൩	൨	൪	൨	൪	൩
൨	൩	൨	൪	൩	൪

४३४८-

๑	๑	๑	๑	๑	๑
๒	๒	๒	๒	๒	๒
๔	๔	๘	๘	๓	๓
๘	๓	๔	๓	๔	๘
๓	๘	๓	๔	๘	๔

๑	๑	๑	๑	๑	๑
๓	๓	๓	๓	๓	๓
๔	๔	๘	๘	๒	๒
๘	๒	๔	๒	๔	๘
๒	๘	๒	๔	๘	๔

छंद संग्रह.

ॐ आसिआउसाय नमः

प्रथम सिद्ध परमात्मानी स्तुति.

(हरीगीत छंद.)

तुमे तरण तारण दुःख निवारण भविक जीव आराधनं, श्री नाभीनंदन जगत वंदन नमो सिद्ध निरंजनं ॥ १ ॥ जगत भुषण वि-गत दुषण प्रवण प्राण निरुपकं, ध्यान रुप अनोप उपम नमो० ॥ २ ॥ गगन मंडळ मुक्ति पदवी सर्व उर्द्ध निवासनं, ज्ञान ज्यो-ति अनंत राजे नमो० ॥ ३ ॥ अज्ञान निंद्रा विगत वेदन दाकिन मोह नीरायुषं, नाम गोत्र

निरंतरायं नमो० ॥ ४ ॥ विकट क्रोधा मान योधा माया लोभ विसर्जनं, राग द्वेष विमर्द अंकुर नमो० ॥ ५ ॥ विमल केवळ ज्ञान लोचन ध्यान शुकल समीरितं, योगीना तिगम्य रुपं नमो० ॥ ६ ॥ योग ने समोसरण मुंद्रा परी पल्य कासनं, सर्व दीसे तेज रुपं नमो० ॥ ७ ॥ जगत जीनके दास दासी तास आस निरासनं, चंद्रपे परमानंद रुपं नमो० ॥ ८ ॥ स्व समय समकित द्रष्टी जिनकी सोए योगी अयोगीकं, देखतामां लीन होवे नमो० ॥ ९ ॥ तिर्थ सिद्धा अतिर्थ सिद्धा भेद पंच दशादिकं, सर्व कर्म विमुक्त चैतन नमो० ॥ १० ॥ चंद्र सूर्य दीप मणीकी ज्योति येन उलंघितं, ते ज्योतिथी अपरम ज्योति नमो० ॥ ११ ॥ एकमांहि

अनेक राजे अनेकमांहि एकीकं, एक अनेक-
की नांहि संख्या नमो० ॥ १२ ॥ अजर
अमर अलक्ष अनंतर निराकार निरंजनं, प-
रिब्रह्म ज्ञान अनंत दर्शन नमो० ॥ १३ ॥
अतुल सुखकी लहेरमें प्रभु लीन रहे निरं-
तरं, धर्म ध्यानथी सिद्ध दर्शन नमो० ॥१४॥
ध्यान धुपं मनः पुष्प पंचेद्रीय हुताशनं, क्षमा
जाप संतोष पुजा पुजो देव निरंजनं० ॥१५॥
तुम्मे मुक्ति दाता कर्म घाता दीन जाणी दया
करो, सिद्धारथ नंदन जगत वंदन, महावीर
जीनेश्वरं ॥ १६ ॥ इति ॥

श्री पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद.

[तोटक वृत्तनी देशीमां]

जय जय जग नायक पार्श्वजिनं, प्रणता

खिल मानव देवगणं ॥ जीन शासन मंडन स्वामी जयो, तुम दरीशन देखी आनंद भयो ॥ १ ॥ अश्वसेन कुळांबर भानुनिभं, नव हस्त शरीर हरित प्रतिभं, धरणेंद्र सुसेवित पाद युगं, भर भासुर कांति सदा सुभगं ॥ २ ॥ निज रूप विनिर्जित रंभ पति, वदनो द्युती शारद शोभतति ॥ नयनांबुज दीप्त विशाळतरा, तिळकुसुम सन्निभ नासा प्रवरा ॥ ३ ॥ रसनामृत कंद समान सदा, दशनावळि अनार कळि सुखदा ॥ अधरारुण विद्रुम रंग घनं, जय पुरुसादाणी पार्श्वजिनं ॥ ४ ॥ अतिचारु मुकुट मस्तक दीपे, काने कुंडळ रवीशशि जीपे ॥ तुज महिमा महिमंडळ गाजे, नित पंच शब्द वाजां वाजे ॥ ५ ॥ सुरकिन्नर विद्याधर आवे, नर नारी

तोरा गुण गावे ॥ तुज सेवे चोसठ इंद्र सदा, तुज नामे नावे कष्ट कदा ॥ ६ ॥ जे सेवे तुजने भाव घणे, नव निधी थाय घर तेह तणे ॥ अडवडीआ तुं आधार कह्यो, समरथ साहिब में आज लह्यो ॥ ७ ॥ दुखियाने सुखदायक तुं दाखे, अशरणने शरणे तुं राखे ॥ तुज नामे संकट वीकट टळे, विछडीयां व्हालां आवी मळे ॥८॥ नटविट लंपट दुरे नासे, तुज नामे चोर चरड त्रासे ॥ रण राउळ जय तुज नाम थकी, सघळे आगण तुज सेव थकी ॥ ९ ॥ यक्ष राक्षस किन्नर सवी उरगा, करी केसरि दावानळ विहगा ॥ वधबंधन भय सघळा जावे, जे एक मने तुजने ध्यावे ॥ १० ॥ भुत प्रेत पिशाच छळी न शके, जगदीश तणा भिध जाप थके ॥

महोटा जोटींग रहे दुरे, दैत्यादिकना तुं मद चुरे ॥ ११ ॥ डायणि सायणि जाय हटकी, भगवंत थाय तुज भजन थकी ॥ कपटी तुज नाम किया कंपे, दुरजन मुखथी जीजी जंपे ॥ १२ ॥ मानी मच्छराळा मुह मोडे, ते पण आगळथी करजोडे ॥ दुर मुख दुष्टादिक तुंहि दमे, तुज नामे म्होटा मलेच्छ नमे ॥ १३ ॥ तुज नामे माने नृप सबळा, तुज जश उज्वळ जेम चंद्रकळा ॥ तुज नामे पामे रुद्धि घणी, जय जय जगदीश्वर त्रिजगधणी ॥१४॥ चिंतामणि काम सवी पामे, हयगय रथ पायक तुज नामे ॥ जनपद ठकुराइ तुं आपे, दुर्जन जनना दारिद्र कापे ॥ १५ ॥ निर्धनने तुं धनवंत करे, तूठयो कोठार भंडार भरे ॥ घर पुत्र कलत्र परिवार घणो, ते सहु

महिमा तुम नाम तणो ॥ १६ ॥ मणी माणेक मोती रत्न जडयां, सोवन भुषण बहु सुघड घडयां ॥ वळी पहेरण नवरंग वेष घणां, तुम नामे नवि रहे कांइ मणा ॥ १७॥ वैरी विरुआ नवि ताकि शके, वळी चोर चुगल मनथी चमके ॥ छळ छिद्र कदा केहनो न लगे, जीनराज सदा तुज ज्योति जगे ॥ १८ ॥ ठग ठाकुर सवि थर हर कंपे, पाखंडी पण को नवि फरके ॥ लुंटारादिक सहु नासी जाये, मारग तुज जपतां जय थाये ॥ १९ ॥ जड मुरख जे मति हिन वळी, अज्ञान तिमिर तस जाय टळी ॥ तुज समरणथी डाह्या थाए, पंडित पद पामी पूजाए ॥ २० ॥ खस खांसी खयन पीडा नासे, दुरबळ मुख दीनपणुं त्रासे ॥ गद

गुंबड कुष्ट जिके सबळा, तुज जापे रोग समे सघळा ॥ २१ ॥ गहिला गुंगा बहिराय जिके, तुज ध्याने गत दुःख थाय तिके ॥ तनु कांति कळा सुविशेष वधे; तुज समरण शुं नवनिधि सधे ॥ २२ ॥ करि केसरी अहिरण बंध सया, जळ जलण जलोदर अष्ट भया ॥ रांगण पमुहा सवि जाय टळी, तुज नामे पामे रंगरळी ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीँ अर्हं श्री पार्श्वनमो, नमिउण जपंता दुष्ट दमो ॥ चिंतामणी मंत्र जिके ध्याये, तिणघर दिन दिन दोलत थाये ॥ २४ ॥ त्रीकरण शुद्धे जे आराधे, तस जश कीर्त्ति जगमां वाधे ॥ वळी कामीत काम सवे साधे, समीहीत चिंतामणि तुज लाधे ॥ २५ ॥ मद मच्छर मनथी दूर तजे, भगवंत भलीपरे जेह भजे ॥ तस घर

कमळा कील्लोल करे, बळि राज्य रमणि बहु लीलवरे ॥ २६ ॥ भय वारक तारक तुं भ्राता, सज्जन मन गति मतिनो दाता ॥ मात तात सहोदर तुं स्वामी, शीव दायक नायक हित कामी ॥ २७ ॥ करुणाकर ठाकुर तुं म्हारो, निशिवासर नाम जपु त्हारो ॥ सेवक शुं परम कृपा करज्यो, वालेशर वंछित फळ देज्यो ॥ २८ ॥ जीनराज सदा तुं जयकारी, तुज मूर्त्ति अति मोहनगारी ॥ मुगत मेहेल मांहि तुंही बीराजे, त्रिभुवन ठकुराइ तुज छाजे ॥ २९ ॥ इम भाव भक्ते जांनव गायो, वामा सुत देखी बहु सुख पायो ॥ रवि शशि मुनिसंवच्छर रंगे, जय देव सुरमा सुख संगे ॥ ३० ॥ जय पुरुसादाणी पार्श्व प्रभो, सकळार्थ समिहित देहि

विभो ॥ बुध हर्ष रुची विजयाय मुदा, तव लब्धी रुचि सुख थाय सदा ॥ ११ ॥

कळश (वसंततिलका वृत्तम.)

इत्थं स्तुतः सकळ कामित सिद्धिदाता, यक्षाधिराज नत पार्श्वप्रभोधिराज ॥ स्वस्ति श्री हर्ष रुचि पंकज सुप्रसादात, शिष्येण लब्ध रुचीने तमुिदा प्रसन्नः ॥ १ ॥

अथ श्री पार्श्वनाथ स्वामीनो छंद.

आपण घर बेठा लील करो, निज पुत्र कलत्र शुं प्रेम धरो ॥ तुमे देश देशांतर कांइ दोडो, नित्यपास जपो श्री जीन रुडो ॥ १ ॥ मनवंछित सघळां काज सरे, शीर उपर

छत्र चामर धरे, कलमल आगळ चाले घोडो ॥ नित्य० ॥ २ ॥ भूत प्रेत पिशाच वळी, सायणि ने डायणी जाय टळी ॥ छळ छिद्र न कोइ लागे जुडो ॥ नित्य० ॥ ३ ॥ एकांतर ताव सियोदाह, औषध विण जाय क्षण मांह ॥ नवि दुःखे माथुं पग गुडो ॥ नित्य० ॥ ४ ॥ कंठमाळ गड गुंबड सबळा, तस उदर रोग टळे सघळा ॥ पीडा न करे फिन गळ फोडो ॥ नित्य० ॥ ५ ॥ जागतो तिर्थंकर पास बहु, एम जाणे सघळो जगत सहु ॥ ततक्षण अशुभ कर्म तोडो ॥ नित्य० ॥ ६ ॥ पास वाणाराशिपुरी नगरी, तिहां उदयो जिनवर उदय करी ॥ समय सुंदर कहे करजोडो ॥ नित्य० ॥ ७ ॥

अथ श्री शांतिनाथ स्वामीनो छंद.

शारद माय नमुं शिरनामी, हुं गुण गाउं त्रिभुवन के स्वामी ॥ शांति शांति जपे सब कोइ, ते घेर शांति सदा सुख होइ ॥ १ ॥ शांति जपी जे कीजे काम, सोही काम होवे अभिराम ॥ शांति जपी परदेश सीधावे, ते कुशळे कमळा लेइ आवे ॥ २ ॥ गर्भ थकी प्रभु मारि नीवारी, शांतिजी नाम दियो हितकारी ॥ जे नर शांती तणा गुण गावे, ऋद्धि अचिंती ते नर पावे ॥ ३ ॥ जे नरकुं प्रभु शांति सहाइ, ते नरकुं क्या आरती नाही ॥ जो कछु वंछे सोही पुरे, दुःख दारिद्र मिथ्या मति चुरे ॥ ४ ॥ अलख निरंजन ज्योत प्रकाशी, घट घट अं-

तर के प्रभु वासी ॥ स्वामी स्वरुप कह्युं नावि जाय, कहेतां मुज मन अचरीज थाय ॥ ५ ॥ डार दीये सवही हथियारा, जीत्या मोह तणा दळ सारा ॥ नारी तजी शिवशुं रंग राचो, राज तज्यो पण साहिब साचो ॥ ६ ॥ महा बळवंत कहीजे देवा, कायर कुंथु एक हणेवा ॥ रुद्धि सबळ प्रभु पास कहीजे, भिक्षा आहारी नाम कहीजे ॥ ७ ॥ नींदक पुजककुं सम भायक, पण सेवककुं हे सुख-दायक ॥ तजी परिग्रह हुवा जगनायक, नाम आतिथि सर्वे सिद्धि लायक ॥ ८ ॥ शत्रु मित्र सम चित्त गणीजे, नाम देव अरिहंत भणीजे ॥ सकळ जीव हितवंत कहीजे, सेव-क जाणी माहापद दीजे ॥ ९ ॥ सायर जेसा होत गंभिरा, दुषण एक न माहे श-

रीरा, मेरु अचळ जिम अंतर जामी, पण न रहे प्रभु एकण ठामी ॥ १० ॥ लोक कहे जिनजी सब देखे, पण सुपनांतर कबहु न पेखे ॥ रीस विना बावीश परीसा, सेना जीती ते जगदीशा ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनाइ, माया विना शिव शुं लय लाइ, लोभ विना गुण राशि ग्रहिजे, भिक्षु भावे त्रिगडो सेविजे ॥ १२ ॥ निर्ग्रंथपणे शिर छत्र धरावे, नाम यति पण चमर ढळावे ॥ अभयदान दाता सुख कारण, आगळ चक्र चाले आरदारण ॥ १३ ॥ श्री जिनराज दयाळ भणीजे, कर्म सर्वको मूळ खणीजे ॥ चउविह संघह तिरथ थापे, लच्छी घणी देखे नवि आपे ॥ १४ ॥ विनयवंत भगवंत कहावे, नांहि कीसीकुं शीश नमावे ॥ अ-

कंचनको बीरुद् धरावे, पण सोवन पद पं-
कज ठावे ॥ १५ ॥ राग नहि पण सेवक
तारे, द्वेष नहीं निगुणा संग वारे ॥ तजी
आरंभ निज आतम ध्यावे, शिव रमणीको
साथ चळावे ॥ १६ ॥ तेरो महिमा अद्भुत
कहीए, तेरा गुणको पार न लहिए ॥ तुं
प्रभु समरथ साहेब मेरा, हुं मन मोहन से-
वक तेरा ॥१७॥ तुंरे त्रिलोक तणो प्रति-
पाळ; हुंरे अनाथ ने तुंरे दयाळ ॥ तुं शर-
णागत राखत धीरा, तुं प्रभु तारक छे वड
वीरा ॥ १८ ॥ तुंही समो वड भागज पायो,
तो मेरो काज चडयोरे सवायो ॥ करजोडी
प्रभु वीनवुं तमशुं, करो कृपा जिनवरजी अ-
मशुं ॥ १९ ॥ जनम मरणना भय निवारो,
भव सागरथी पार उतारो ॥ श्री हत्थीणा-

पुर मंडळ सोहे, त्यां श्री शांति सदा मन मोहे ॥ २० ॥ पद्म सागर गुरुराय पसाया, श्री गुण सागर कहे मन भाया ॥ जे नर नारी एक चित्त गावे, ते मनवांछित निश्चे पावे ॥ २१ ॥ इति ॥

अथ श्री गौतम स्वामीनो छंद.

वीरजिणेशर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिश ॥ जो कीजे गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामे गिरिवर चडे, मनवंछित हेळा संपडे, गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी वीरुआ वंकडा, तस नामे नावे ढुंकडा ॥ भूत प्रेत नवि मंडे

प्राण, ते गौतमना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निर्मळकाय, गौतम नामे बाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामे जय जयकार ॥ ४ ॥ शाळ दाळ सुरहा घृत गोळ, मनवंछित कापड तंबोळ ॥ घर सु घरणी निर्मळ चित्त, गौतम नामे पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उग्यो अविचळ भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ म्होटा मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफळ वीहाण ॥ ६ ॥ घर मयंगळ घोडानी जोड, वारु पहोंचे वंछित कोड ॥ महियळ माने म्होटाराय, जो त्तुठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्या पातीक टळे, उत्तम नरनी संगत मळे ॥ गौतम नामे निर्मळ ज्ञान, गौतम नामे बाधे वान ॥ ८ ॥ पुन्यवंत अवधारो सहु, गुरु

गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय करजोड, गौतम तूठे संपति कोड ॥ ९ ॥

अथ श्री सोळ सतीनो छंद.

आदिनाथ आदे जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजिए ॥ प्रभाते उठी मंगळिक कामे, सोळ सतिना नाम लीजीए ॥ १ ॥ बाळकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी भरतनी बेनडीए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रुपे, सोळ सतिमां जे वडीए ॥ २ ॥ बाहु बळ भगिनी सतीय शिरोमणी, सुंदरी नामे ऋषभ सुताए॥ अंक स्वरुपी त्रिभुवन मांहे, जेह अनोपम गुण जुताए ॥ ३ ॥ चंदनबाळा बाळपणेथी,

शीयळवंती शुद्ध श्राविकाए ॥ अडदना बा-
कुळा वीर प्रतिलाभ्या, केवळ लही व्रत
भाविकाए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुया धारिणी
नंदनी, राजेमती नेम वल्लभा ए ॥ जोबन
वेशे कामने जीत्यो, संजम लेइ देव दुल्लभाए
॥ ५ ॥ पंच भरतारी पांडव नारी, द्रुपद
तनया वखाणीए ॥ एकसो आठे चीर पुराणा,
शीयळ महिमा तस जाणीये ए॥ ६ ॥ दशरथ
नृपनी नारी नीरुपम, कौशल्या कुळ चंद्रि-
काए ॥ शीयळ सलूणी राम जनेता, पुन्य
तणी प्रनाळीकाए ॥ ७ ॥ कोसंबिक ठामे
संतानिक नामे, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥
तस घर घरणी मृगावती सती, सुर भुवने
जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुळशा साची
शीयळे न काची, राची नही विषयारसे ए ॥

मुखडुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामिनी, जनकसूता सीतासतीए ॥ जग सहू जाणे धीज करंता, अनळ शीतळ थयो शीयळथी ए ॥ १० ॥ सुरनर वंदित शीयळ अखंडित शीवा शीव पद गामनीए ॥ जेहने नामे निर्मळ थइए, बलीहारी तस नामनी ए ॥ ११ ॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूप थकी जळ काढीयुं ए ॥ कलंक उतारवा सतीय सुभद्रा, चंपा बार उघाडीयुं ए ॥ १२ ॥ हस्तीनागपुरे पांडु रायनी, कुंता नामे कामीनीए ॥ पांडव माता दसे दसारनी, व्हेन पतीव्रता पद्मनीए ॥ १३ ॥ शीळवती नामे शीळव्रत धारीणी, त्रीवीधे तेहने वंदीये ए ॥ नाम जपंता पातक जाए,

दरीसणे दुरीत नीकंदी ए ॥ १४ ॥ नीष-
धानगरी नळह नरींदनी, दमयंती तस गे-
हीनी ए ॥ संकट पडतां शीयळज राख्युं,
त्रीभुवन कीर्ती जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग
अजीता जग जन पुजीता, पुफचुळा ने प्र-
भावती ए ॥ वीश्व वीख्याता कामीत दाता,
सोळमी सती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरे
भांखी शास्त्रे साखी, उदय रतन भाखे मुदा
ए ॥ व्हाणु वातां जे नर भणशे, ते लेशे
सुख संपदा ए ॥ १७ ॥ इति ॥

अथ श्री चिंतामणी पार्श्वनाथनो छंद.

(दोहा.)

कल्पवेल चींतामणी, कामधेनु गुण खाण ॥

अलख अगोचर अगम गती, चीदा-
नंद भगवान ॥ १ ॥ परम ज्योती पर-
मात्मा, नीराकार कीरतार, नीर्भय रूप
ज्योतीसरूप, पुरण ब्रह्म अपार ॥ २ ॥ अ-
वीनाशी साहीब धणी, चींतामणी श्री पास ॥
अरज करुं कर जोड के, पुरो वंछीत
आश ॥ ३ ॥ मन चींतीत आशा फळे,
सकल सीद्धवे काम ॥ चींतामणीको जाप
जप, चींताहरे ए नाम ॥ ४ ॥ तुम सम मे-
रेको नही, चींतामणी भगवान ॥ चेतनकी
एह वीनती, दीजे अनुभव ज्ञान ॥ ५ ॥

(चोपाइ.)

प्राणत देवलोकथी आये, जन्म वणा-
रशी नगरी पाये ॥ अश्वसेन कुळ मंडन

स्वामी, त्रीहु जगके प्रभु अंतरजामी ॥ ६ ॥ वामा देवी माताके जाये, लंछन नाग फणी मणी पाये ॥ शुभ काया नव हाथ वखाणो, नील वरण तनु नीर्मळ जाणो ॥ ७ ॥ मानव जक्ष सेवे प्रभु पाय, पद्मावती देवी सुखदाय ॥ इंद्र चंद्र पारस गुण गावे, कल्प वृक्ष चींतामणी पावे ॥ ८ ॥ नीत समरो चींतामणी स्वामी, आशा पुरे अंतरजामी ॥ धन धन पारश्व पुरीसादाणी, तुम सम जगमे को नहीं नाणी ॥ ९ ॥ तुमारो नाम सदा सुखकारी, सुख उपजे दुःख जाय वीसारी ॥ चेतनको मन तुमारे पास, मन वंछीत पुरो प्रभु आश ॥ १० ॥

(दोहा.)

ॐ भगवंत चींतामणी, पार्श्व प्रभु जीनराय ॥ नमो नमो तुम नामसें, रोग शोग मीट जाय ॥ ११ ॥ वात पीत दुरें टळे, कफ नही आवे पास ॥ चींतामणीके नामसें मीटे श्वास ओर खास ॥ १२ ॥ प्रथम दूसरो तीसरो, ताव चोथीयो जाय ॥ शुळ बहोतेर दूरे रहे, दादर खाज न रहाय ॥१३॥ वीस्फोटक गड गुबडां, कोढ अढारे दुर ॥ नेत्र रोग सब परीहरे, कंठमाळ चकचुर ॥ १४ ॥ चींतामणीके जापसें रोग शोग मीट जाय, चेतन पार्श्व नामको, समरो मन चीत लाय ॥ १५ ॥

(चोपाइ.)

मन शुद्धे समरो भगवान, भय भंजन चिंतामणी ध्यान ॥ भूत प्रेत भय जावे दुर, जाप जपे सुख संपति पूर ॥ १६ ॥ डाकण शाकण व्यतंर देव, भय नहीं लागे पारस सेव ॥ जळचर थलचर उरपर जीव, इनको भय नही समरो पीव ॥ १७ ॥ वाघ सिंह-को भय नहीं होय, सर्प गोह आवे नहि कोय ॥ वाट घाटमे रक्षा करे, चिंतामणी चिंता सब हरे ॥ १८ ॥ टोणा टामण जादु करे, तुमारो नाम लेतां सब डरे ॥ ठग फां-सीगर तस्कर होय, द्वेषी दुशमन नावे कोय ॥ १९ ॥ भय सब भागे तुमारे नाम, मन वंछित पुरो सब काम ॥ भय नीवारण पुरे आश, चेतन जप चिंतामणी पास ॥२०॥

(दोहा.)

चींतामणीके नामसें, सकळ सीद्धवे काम ॥ राज ऋद्धी रमणी मळे, सुख संपती बहु दाम ॥ २१ ॥ हय गय रथ पायक मळे, लक्ष्मीको नहीं पार ॥ पुत्र कलत्र मंगळ सदा, पावे शीव दरबार ॥ २२ ॥ चेतन चींता हरणको, जाप जपे तिन काळ॥ कर आंबिल षट मासको, उपजे मंगळ माळ ॥ २३ ॥ पारस नाम प्रभावथी, वाधे बळ बहु ज्ञान ॥ मनवंछित सुख उपजे, नित समरो भगवान ॥ २४ ॥ संवत अढारा उपरे, साडत्रिशको परिमाण ॥ पोष शुकल दिन पंचमी, वार शनिश्चर जाण ॥ २५ ॥ पढे गुणे जो भावशुं, सुणे सदा चित काय ॥

चेतन संपति बहु मळे, समरो मन वच काय ॥ २६ ॥

अथ श्री महावीर स्वामीनो छंद.

श्री सिद्धारथ कुळ शणगार, त्रिशला देवी सुत जग आधार ॥ शोभे सुंदर सोवन वान, शरण तमारुं श्री वर्द्धमान ॥ १ ॥ तुम नामे लहिये संपदा, तुम नामे मन वंछीत मुदा ॥ तुम नामे लहीये सनमान, शरण. ॥ २ ॥ दुर्जन दुष्ट वैरी वीकराळ, तुम नामे नासे ततकाळ ॥ तुम नामे दीन दीन कल्याण, शरण० ॥ ३ ॥ तुम नामे नावे आपदा, भूत प्रेत व्यंतर नही कदा ॥ रोग शोग चींता नवी जाण, शरण० ॥ ४ ॥ ग्रहादीक

पीडा नवी करे, नाम तमारुं जे अनुसरे ॥ धर्मसींह मुनी भाव मधान, शरण० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ श्री पांसठीया यंत्रनो छंद.

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

श्री नेमीश्वर संभव शाम, सुवीधी धर्म शांति अभीराम ॥ अनंत सुव्रत नमीनाथ

सुजाण, श्री जीनवर मुज करो कल्याण ॥ १ ॥ अजीतनाथ चंद्र प्रभु धीर, आदीश्वर सुपार्श्व गंभीर ॥ वीमळनाथ वीमळ जग जाण, श्री जीनवर० ॥ २ ॥ मल्लीनाथ जीन मंगळ रुप, पचवीश धनुष सुंदर स्वरुप ॥ श्री अरनाथ नमु वर्द्धमान, श्री जीनवर० ॥ ३ ॥ सुमती पद्म प्रभु अवतंस, वासु पुज्य शीतळ श्रेयांस ॥ कुंथुपार्श्व अभीनंदन भाण, श्री जीनवर० ॥ ४ ॥ इणीपरे जीनवर संभारीये, दुःख दारीद्र वीघ्न नीवारिये ॥ पच्चीशे पांसठ परमाण, श्री जीनवर० ॥ ५ ॥ इम भणतां दुःख नावे कदा, जो निज पासे राखो सदा ॥ धरीये पंचतणुं मन ध्यान, श्री जिनवर० ॥ ६ ॥ श्री जिनवर नामे वंछित मळे, मनवंछित सहु आशा फळे ॥ ध-

मेसिंह मुनि नाम निधान, श्री जिनवर० ॥ ७ ॥ इति० ॥

अथ श्री नवकारनो छंद.

सुख कारण भवियण, समरो नित नवकार ॥ जिनशासन आगम, चौद पुरवनो सार ॥ १ ॥ ए मंत्रनो महीमा, कहेता न लहुं पार ॥ सुरतरु जिम चिंतित, वंछित फळ दातार ॥ २ ॥ सुरदानव मानव, सेवा करे करजोड, भुविमंडळ विचरे, तारे भवीयण कोड ॥ ३ ॥ सुरछंदे विलसे अतिशय जास अनंत ॥ पद पहेले नमीये, अरिगंजन अरिहंत ॥ ४ ॥ जे पनरे भेदे, सिद्ध थया भगवंत ॥ पंचमि गति पहोत्या, अष्ट करम करी

अंत ॥ ५ ॥ कळ अकळ स्वरुपी, पंचानंतक देह ॥ जिनवर पाय प्रणमुं, बीजे पद वळी एह ॥ ६ ॥ गच्छभार धुरंधर, सुंदर शशि-हर शोभ ॥ करे सारण वारण, गुण छत्रीशे थोभ ॥ ७ ॥ श्रुत जाण शीरोमणि, सागर जिम गंभीर ॥ त्रिजे पद नमीये, आचारज गुण धीर ॥ ८ ॥ श्रुतधर गुण आगर, सुत्र भणावे सार ॥ तप विधि संयोगे, भांखे अर्थ विचार ॥ ९ ॥ मुनीवर गुण जुत्ता, कहिये ते उवझाय ॥ पद चोथे नमीये, अह-निश तेहना पाय ॥ १० ॥ पंचाश्रव टाळे, पाळे पंचाचार ॥ तपसी गुणधारी, वारे विषय विकार ॥ ११ ॥ त्रस थावर पीयर; लोक मांही जे साध ॥ त्रिविधे ते प्रणमुं, पर-मारथ जिणे लाध ॥ १२ ॥ अरि करि हरि

सायणि, डायणि भूत वैताळ ॥ सावि पाप पणासे, वाधे मंगळ माळ ॥ १३ ॥ इण समर्यो संकट, दूर टळे तत्काळ ॥ इम जंपे जिन प्रभ, सुरि शिष्य रसाळ ॥ १४ ॥ इति ॥

अथ श्री वीरजीन छंद.

श्री सीद्धारथ कुळ दीपकचंद, त्रीशळा देवी राणीनो नंद ॥ कोमळ कंचन वरण शरीर, मनवंछीत पूरण महावीर ॥ १ ॥ कृपानाथ करी करुणा घणी, मुज सामु जुओ शासन धणी ॥ त्रीभुवननाथ आयो अवतीर, मन० ॥ २ ॥ अनंत बळी तप दुक्कर कीया, सवी कर्मकुं दावानळ दीया ॥ खम दम सम धीमानने धीर, मन० ॥ ३ ॥ चु-

माळीशे चेला किया, एकज दिनमे महाव्रत दीया ॥ गौतम सरीखा हुआ वजीर, मन० ॥ ४ ॥ समवसरण ां सुण्यो अधीकार, अमृत वाणीरुप दीदार ॥ दीठै हरखे हैडु हीर, मन० ॥ ५ ॥ एक पळ धरे जो प्रभुजीनुं ध्यान, पग पग प्रगटे पुण्य नीधान॥ वचन मीठां जीम मीसरी खीर, मन० ॥ ६ ॥ चेन पामे चींता चकचुर, देखी दुश्मन नासे दूर ॥ दीन दीन वाधे संपत्ती शीर, मन० ॥ ७ ॥ तुम नामे भव सायर तरे, तुम नामे सवी कारज सरे ॥ ऋधी वृद्धी पामे हीर चीर, मन० ॥ ८ ॥ चींतामणी जीम जीनवर जाप, क्रोड भवोना कापे पाप ॥ रोग शोग नासे पर पीड, मन० ॥ ९ ॥ वैशाख शुदि दशम दिन जाण, प-

भुजी पाम्या केवळ नाण ॥ सायर जेसा होत गंभीर, मन० ॥ १० ॥ संवत अढार तेत्रीशमें ताम, मेडत नगर किया गुण ग्राम, षटकायाना प्रभुजी पीर, मन० ॥ ११ ॥ प्रभु पावापुरीमां मुगती गया, ऋषि रायचंद कहे करज्यो मया ॥ पहोंचाडो मुज भव जळ तीर, मन० ॥ १२ ॥ इति ॥

पार्श्वनाथनो छंद (त्रोटक वृत्तम.)

प्रणमामि सदा प्रभु पार्श्वजीनं, जिन नायक दायक सुखधनं ॥ घनचारु मनोहर देहधरं, धरणीपति नित्य सुसेव करं ॥ १ ॥ करुणारस रंजित भव्यफणी, फणी सप्त सुशोभित मौलिमणि ॥ मणिकंचन रुप त्रिकोट

घटं, घटिता सुर किन्नर पार्श्वतटं ॥ २ ॥ तटिनी पती घोष गंभीर स्वरं, शरणां गत विश्व अशेषनरं ॥ नरनारी नमस्कृत नित्य मुदा, पद्मावति गावती गीत सदा ॥ ३ ॥ सततेंद्रिय गोप यथा कमठं, कमठासुर वारुण मुक्तहठं ॥ हठहेलितकर्म कृतांत बळं, बळधाम दरंदळ पंकजळं ॥ ४ ॥ जळ जद्रुय पत्र प्रभानयनं, नयनं दित भव्यतरी शमनं, मनमथ मही रुह वान्हिसमं, समता गुण रत्न-मयं परमं ॥ ५ ॥ परमार्थ विचार सदा कुशळं, कुशळं कुरु मे जिन नाथ अलं ॥ अ-ळिनी नळिनी नळ नीळ तनं, तनुता प्रभु पार्श्वजिनं शुघनं ॥ ६ ॥

(कळश द्रुतविलंबित्तम.)

सुधन धान्य करं करुणापरं, परमसिद्धि करं दददा धरं ॥ वरतरं अश्वसेन. कुळोद्भवं, भवभ्राता प्रभु पार्श्वजिनंशिवं ॥७॥ इति.

शांतिनाथनो छंद.

सदा शांतीजी आश पुरो हमारी, करुं वीनती अंग उच्छाह धारी, दयावंतनुं दुःख-दारिद्र हारी, कृपावंत तुं करत कल्लोलकारी ॥ १ ॥ महावीपुल मतीवंत ए जीनराया, खटकाय राखे सदा छत्रछाया, महामोह मिथ्यातना मान मोडी, जीन मुक्ति पोहत्या कर्मकंठ तोडी ॥ २ ॥ भडभुत वैताळ भय

जाय दोडी, जग मांहे तुम सम नहीं कोइ जोडी; सदा सिद्ध दाता नमुं कुटील छोडी, तुम नामे कल्याण कोडान कोडी ॥ ३ ॥ तुम नामे सुर असुर भय दुर नासे, धनधान धोरी धर अधिक वासे; गज केसरी अनळ दळ भय न होय ॥ अतीसे करी एहवी रीत जोय ॥ ४ ॥ गुण ग्यान करता किम पार लहीए, रसना करी एक लव लेश कहीए; महा विमळ नाण चारित्र दंशी, भणे संत गोविंद मुनीज संसी ॥ इति शांतीजीन स्तवन ॥

महावीर छंद.

चोवीसमा महावीर शुरवीर महाधीर,

वाणी मिठी दूध खीर सिद्धारथ नंदहे, नागिणीसि नारी जाणी, घटमां वैराग आणी योग लियो जग भाण, टाळया मोहफंदहे, चौद हजार संत तार दिया भगवंत, कर्मको कियो अंत, पाम्या सुख कंदहे ॥ कहे कवि चंद्रभाण, सुणो हो विवेकवान, महावीर कीया ध्यान उपजे आणंदहे ॥

चिंतामणीनो छंद.

सुगुरु चिंतामणी देव सदा ॥ मुज सकळ मनोरथ पुरमदा ॥ कमळागर दुर न होय कदा ॥ जपता प्रभु पार्श्व नाम यदा ॥ १ ॥ जळ अनळ मतंगज भय जावे ॥ अरि चोर निकट पण नहीं आवे ॥ सिंह सर्प

रोग न सत्तावे ॥ धन्य धन्य प्रभु पार्श्व जीन ध्यावे ॥ २ ॥ मछ कछ मगर जळ मांही भमै ॥ वडवानळ नीर अथाह गमै ॥ प्रहवण बैठा नर पार पमै ॥ नित्य प्रभु पार्श्व जीनंद नमै ॥ ३ ॥ विकराळ दावानळ विश्व दहै ॥ ग्रह वस्ती धन ग्रास आकाश ग्रहै ॥ तुम नाम लिया उपशांति लहै ॥ वन नीर सरोवर जेम वहै ॥ ४ ॥ झरतो मद लोक कलोल करे ॥ भ्रमरा गुंजावर भर रोस भरैं ॥ करि दुष्ट भयंकर दुरि करैं, श्रीपार्श्वनाथजीके समरैं ॥ ५ ॥ छाना छळ छिद्र विनाय छलैं ॥ यश वाश सुणी मन मांही जलै ॥ ते पिशुन्य पडे नित्य पाय तलै ॥ जपतां प्रभु वेरी जाय टीलैं ॥ ६ ॥ धन देखी निशाचर कोढ धसैं ॥ मुझ मंदिर

पैशक देन सुखे.।। अति उच्छव तास आ-
वास अखै ।। परमेश्वर पार्श्व जास परखैं ।।७।।
असराळ विदारण हाथ हटैं, गळलोळ जीहां
गज कुंभ घटै ।। मृगराज महा भय भ्रांति
मिटै ।। रसना जीन नायक जेह रटैं ।।
८ ।। फरतो चीहुं फेर फुंफार फाणि ।। धर्णेद्र
धसैं धर रीस घणी ।। भय त्रास न व्यापे
तेंह तणी ।। धरतां चीत पार्श्वनाथ घणी
।। ९ ।। कफ कुष्ट जलोदर रोग कसें ।। गड
गुंबड देह अनेक ग्रसैं ।। विन वेषेज व्याधि
सब विनसैं; वामा सुत पार्श्व जे स्तवसैं ।।
१० ।। धरणिंद्र धराधिप सूर ध्यायो ।। प्रभु
पार्श्व २ करपायो ।। छबी रुप अनोपम जुग
छायो ।। जननी धन्य वामा सुत जायो ।।
११ ।। करतां जीन जाप संताप कटैं, दुख

दारिद्र दोहग सोहघटै ॥ हठ छोडी जीहां रिपु जोर हठैं ॥ पद्मावती पार्श्व जीहां प्रगटे ॥ १२ ॥ (ॐ नमो पार्श्वनाथाय ॥ धरणिंद्र पद्मावती सहिताय ॥ विषहर कुलयंग मंगलाय ॥ ॐ ह्रीँ श्रीँ चिंतामणी पार्श्वनाथाय ॥ ॥ मम मनोरथ पुरय स्वाहाः) ॥ मंत्राक्षर गाथा गुढ पढयो ॥ चिंतामणी जाणे हाथ चढयो, वळी मान महातम तेज बढयो ॥ श्री पार्श्वजीन स्तवन जेण पढयो ॥ १३ ॥ तिर्थपती पार्श्वनाथ तिलो ॥ भणतां जस वास निवास फळो ॥ मणी मंत्र सकोमळ होय मिलो ॥ अमाचे प्रभु पार्श्वआश फळो ॥ १४ ॥ लुंका गच्छ नायक लाभ कीए ॥ हित क्षेम करण गुरुनाम हिये ॥ दीन २ गछनायक सुख दीये ॥ किराति प्रभु पार्श्व सुख कीये. ॥ १५ ॥

पार्श्वनाथनो छंद.

प्रणमु पास जिणंद, दरसण दिठे आ-
णंद ॥ नगरी वणारसी ठाय, तीहां अश्वसेन
राय ॥ १ ॥ वामा तस पटराणी, रूपे रंभा-
समाणि; तसघर पास उपन, लाध्या चउद
सुपन ॥ २ ॥ पोसवदि दसमीसार, जनम्या
पार्श्व कुमार ॥ छपन कुमारिका आवे, स्तुति
करी गुण गावे ॥ ३ ॥ सर्वे सुरपती रंगे,
लइ गया मेरुने संगे; इंद्र सरवे तिहां मीली-
या, जनम मोच्छव करी वळीया ॥ ४ ॥
मुक्या माताजीनी पास, चिरंजीवो इम भा-
ख्य; ताते मोच्छव किधो, पार्श्व कुमार नाम
दिधो ॥ ५ ॥ जोवन वय जब जाणी, जोडे
प्रभावंति राणी, परणाव्या जीनराय, सेवे

सुरनर पाय ॥ ६ ॥ भोगतणा फळ लेही, दान सपच्छरी देइ; त्रणसें नरवर साथे ॥ संजम लीधो जगनाथे ॥ ७ ॥ तप संजम करमे वामी, जीनवर केवळ पामी ॥ पोत्या मुक्ति मोझार, जपता जयजयकार ॥ ८ ॥ एकसो वरसनुं आय, नवकर शोभे काय॥ तेवीशमा जीनराय, नामे नव निध थाय ॥ ९ ॥ पार्श्वे उपसर्ग चुरे, मन वंछित सुख पुरे; सफळ फळे तस आस, जे जाणसे प्रभु पास ॥ १० ॥ स्तवन सिद्ध सुखकारी भणशे जे नरनारी; भोज भणे करजोडी, पामे कल्याणनी कोडी ॥११॥ इति संपुर्ण. ॥

चोवीस तिर्थंकरनुं स्तवन.

श्री रीखभ अजीत संभव स्वामी, अ-

भीनंदनजी अंतरजामी, रागद्वेष दो क्षय क-
रणा, वंदु सोळे जीन सोवन वरणा ॥ १ ॥
सुमतीजीने सुपासो, प्रभु मुगत गया मेट्या
गर्भा वासो, दुर कीया जन्म मरणा, वंदू०
॥ २ ॥ शीतळ श्रेयांस जीनदोइ, प्रभुजी
चौदे राज रह्या जोइ, विमळ समत निर्मळ
करुणा, वंदू० ॥ ३ ॥ अनंत नाथजी अ-
नंतज्ञानी, जासु मनरीतो वात नहीं छानी,
धर्मजीको ध्यान रुदे धरणा, वंदु० ॥ ४ ॥
शांतिनाथजी शाताकारी, कुंथु नाथजीरी
जाउं हुं बलहारी, अरनाथ आतम उधरणा
वंदु० ॥ ५ ॥ महिमा घणी मल्लीनाथ तणी,
महावीरजी हुवा सासनना धणी; में झा-
ल्यां जारां चरणा, वंदु० ॥ ६ ॥ प्रभुरो
शरिर संपदा सुंदर सोहे, नीरखतां नयन

तुरत मोहे, चतुरांरा तो चीत हरणा, वंदु० ॥ ७ ॥ प्रभुजीनी दीप दीप रही देही, जाने सुरनर नीरख रह्या केइ, आंख्या तो हुइ जावे अमी झरणा, वंदु० ॥ ८ ॥ प्रभु जीरो मस्तक ले पग नखतांही, जीनरो शरीर वखाण्यो सूत्रमांही, चारुंही संग लेवे शरणां, वंदु० ॥९॥ तीन लोकरो रुप प्रभुजी पायो, बीजो मावडीए बेटो एसो नहीं जायो, चोसठ इंद्र भेटे चरणां, वंदु० ॥ १०॥ एक समुचे अरज सुणजो सोळे, रुषी रायचंदजी आयो आपरे ओळे, मारी आवा गमण दुःख दूर करणां, वंदु० ॥ ११ ॥ संवत अढारसें त्रीसे वरसे, कीयो नागोर चोमासो भाव सरसे, जारो भजन कीया भवसागर तरणां, वंदु सोळे जीन सोवन वरणां ॥ १२ ॥

तीर्थंकरनुं स्तवन.

प्रह उठी प्रभाते वंदु, पदम प्रभूजीना पायरे प्राणी; वासुपुज्यजी मारा मनमां वसीया, मारे कर्मी न रही कांयरे प्राणी, उपजे आनंद आठे जीन जपतां ॥ १ ॥ ए दोए जीनवर अवल्ल बीराजे, हिंगुल वरणां लालरे प्राणी; तीर्थ थापीने कर्मने कापी, प्रभु पाप कीया प्रेमालरे प्राणी उपजे० ॥ २ ॥ शुभ भावना ए मनमारे भाव्ये, तो आठ कर्म जाये तुटरे प्राणी; सुख संपदाने लील विलासो, भर्या भंडार अखुटरे प्राणी, उपजे० ॥३॥ चंद्र प्रभुजीने सुविधी जीनेश्वर, ए दोये वर्ण सफेदरे प्राणी; मोतीयां सरखी जारी देहीज दीपे, मुज देखतां अ-

धिक उमेदरे प्राणी. उपजे० ॥ ४ ॥ मुनी-
सुव्रतजी ने नेम जीणेश्वर, ए दोय शाम
वर्ण शरीरे प्राणी; इंद्रथकी पण अधिका दीपे,
दीठे हरखे हैडानो हीररे प्राणी ॥ उपजे०
॥ ५ ॥ मल्लीनाथ ने पार्श्व प्रभूजी, जाणे
नीलाते मोरनी पांखरे प्राणी; नीरखता तो
नयन न धापे, अमीय ठरे दोय आंखरे प्राणी.
उपजे० ॥ ६ ॥ रुप अनोपम अवल बीराजे,
जाणे हीरा जडीया हेमरे प्राणी, सुरजथी
जेम सवाया दीपे॥ केणीमां आवे केमरे प्राणी
उपजे० ॥ ७ ॥ शीवनगरी माहा साहीब
बेठा, हुं नवी जाणुं दुररे प्राणी; मुज मन-
डामां वसीया वालेसर, हुं समरुं उगमते सू-
ररे प्राणी, उपजे० ॥ ८ ॥ ए आठे अरि-
हंतने आगे, हुं तो अरज करुं करजोडरे

प्राणी, रुषी रायचंदजी कहे मारा मनना, पुरो सघळा कोडरे प्राणी. उपजे० ॥ ९ ॥ संवत अढारने वर्ष छत्रीशे, नागोर शेहेर चोमासरे प्राणी, प्रसाद पुज्य जेमलजी केरे, मारे हैडे ते हरख उल्लासरे प्राणी. उपजे आनंद आठे जीन० ॥ १० ॥

चोवीस तिर्थंकरनुं स्तवन.

रुषभ अजीद संभव अभीनंदन ॥ नीरंजन निराकार, सुमती पद्म सुपार्श्व चंद्रा प्रभू, मेटया विषय विकारो, श्रीजीन मुजने पार उतारो, प्रभु हुं चाकर चरणारो ॥ श्री जीन० ॥ सुविधी सीतळ श्रेयांस वासु पुज्य मुक्ति तणा दातारो, वीमळ अनंत धर्मनाथ

शांती जीन, साताकारी संसारो, श्री जीन० कुंथुं अरनाथ मल्ली मुनी सुव्रत, पाम्या भव-जळ पारो, नमी नेमनाथ पार्श्व महावीरजी सासनना सीरदारो ॥ श्री जीन० ॥ अगी-आर गणधर विशे वीहर मान, सर्व साधु अणगारो, अनंती चोवीशीने नित्य २ वंदु, कर गया खेवो पारो ॥ श्री जीन० ॥ अधम उधारण बीरुद सुणी प्रभु, शरण लीयो च-रणारो; अधम उधारण परमपदा पद, अ-जर अमर अवीकारो ॥ श्री जीन० ॥ राग द्वेष कर्म बीज जे बळीया, बाळी कीधां सर्व छारो, केवल ज्ञान ने केवळ दरशन, नीज गुण कीनो ठारो ॥ श्री जीन० ॥ दान शीयळ तप भावना भावो, दया धर्म तत्त्व सारो, रुषी लालचंदजी एणीपर विनवे, प्रभू मारो

करोने नीस्तारो ॥ श्री जीन मुजने पार उतारो ॥ इति चोवीस तिर्थंकरनुं स्तवन ॥

श्री नवकारनो छंद प्रारंभ.

(दोहा.)

वंछित पूरे विविध परे, श्री जिनशासन सार ॥ निश्चे श्री नवकार नित, जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अडसठ अक्षर अधिक फळ, नवपद नवे निधान ॥ वीतराग स्वयं मुख वदे, पंचपरमेष्टि प्रधान ॥२॥ एकज अक्षर एकज चित्ते, समर्यां संपति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातिक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकळ मंत्र शिर मुकुट मणी, सद्गुरु भाषित सार ॥ सो भवियां मन शुद्धशुं नित जपीए नवकार ॥ ४ ॥

(छंद हाटकी.)

नवकार थकी श्रीपाळ नरेसर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिव नाम कुमरने, सोवन पुरिसो सिद्ध ॥ नव लाख जपंतां नरक निवारे, पामे भवनो पार ॥ सो भवियां भत्ते; चोख्खे चित्ते, नित जपीए नवकार ॥ १ ॥ बांधी वडशाखा शिंके बेसी, हेठळ कुंड हुताश ॥ तस्करने मंत्र समप्यों श्रावके, ऊडयो ते आकाश ॥ विधि रीत जप्यो विषधर विष टाळे, ढाळे अमृत धार ॥ सो० ॥ २ ॥ बीजोरां कारण राय महाबळ, व्यंतर दुष्ट विरोध ॥ जेणे नवकारे हत्या टाळी, पाम्यो जक्ष प्रतिबोध ॥ नवलाख जपंतां थाये जिनवर, इशो छे अधिकार ॥ सो० ॥ ३ ॥ पल्लीपति शीख्यो

मुनिवर पासे, महामंत्र मन शुद्ध ॥ परभव ते राजसिंह पृथविपति, पाम्यो परिगळ ऋद्ध ॥ ए मंत्र थकी अमरापुर पहोत्यो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ४ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाळ ॥ दीठो श्री पास कूमारे पन्नंग, अधबळतो ते टाळ ॥ संभळाव्यो श्री नवकारस्वयं मुख, इंद्रभूवन अवतार ॥ सो० ॥ ५ ॥ मन शुद्धे जपतां मयणासुंदरी, पामी पीय संयोग ॥ इण ध्याने कष्ट टळयुं उंबरनुं, रक्तपित्तनो रोग ॥ निश्चेशुं जपतां नवनिधि थाए, धर्मतणो आधार ॥ सो० ॥ ६ ॥ घटमांही कृष्ण भूजंगम घाल्यो, घरणी करवा घात॥ परमेष्टि प्रभावे, हार फुलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कमळावतिये पिंगळ कीधो,

पापतणो परिहार ॥ सो० ॥ ७ ॥ गयणांगण जाति राखी ग्रहीने, पाडी बाण प्रहार॥ पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमुलक महिमा मंदीर, भवदुःख भंजणहार ॥ सो० ॥ ८ ॥ कंबळ ने संबळ कादव काढ्यां, शकट पांचशे मान ॥ दीधे नवकार गया देवलोके, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्र थकी संपति वसुधां तळे, विलशे जैन विहार ॥ सो० ॥ ९ ॥ आगे चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आदि न जाणे इम भांखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचे, समर्यां संपति सार ॥ सो० ॥ १० ॥ परमेष्टि सुर पद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंडरगिरि ऊपर परतख पे-

र्‍यो, मणिधर ने एक मोर ॥ सद्गुरुने सनमुख विधि समरंतां, सफळ जनम संसार ॥ सो० ॥ ११ ॥ शूळीकारो पण तस्कर कीधो, लोहखरो परसिद्ध ॥ तिहां शेठे नवकार सुणाव्यो, पाम्यो अमरनी ऋद्ध ॥ शेठने घर आवी विघ्न निवार्यां, सूरे करी मनोहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच सज्झाय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकित ॥ पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पाळो पंचाचार ॥ सो० ॥ १३ ॥

(कळश छप्पय.)

नित जपीए नवकार, सार संपति सुखदायक ॥ शुद्ध मंत्र ए शाश्वतो, इम जंपे

श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य भणीजे ॥ श्री उवझाय सुसाधु, पंच परमेष्टि थुणीजे ॥ नवकार सार संसार छे, कुशळलाभ वाचक कहे ॥ एक चित्ते आराधतां, विविध ऋधि वंछित लहे ॥१४॥ इति.

अथ श्री शांतिनाथनो छंद.

नगर हत्थिणापुर अति रे भलो, जिहां जनम्या तिर्थंकर त्रिभुवन तिलो ॥ राय पहुच्यो जैन खरो, श्री शांति जिनेश्वर शांति करो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सर्वारथसिद्ध थकीरे चवी, तत्र देश नगरमां शांति हवी ॥ शांतिजी नाम दियो सखरो, श्री शांति० ॥ २ ॥ विश्वसेन पिता अचिरा रे माया, जेणे चौद सुपन महोटां रे पाया ॥ जनम्या ती-

थंकर आमिय झरो, श्री शांति० ॥ ३ ॥ छप्पन कुमारिका उल्लास घणो, जेणे जनम महोच्छव कर्यो कुमर तणो ॥ चोसठ इंद्र आवी कळश भरो, श्री शांति० ॥ ४ ॥ भणावी बहोतेर कळा, जेणे सहस्र चोशठ परणी महीला ॥ छखंड साध्या एणीय परो, श्री शांति० ॥ ५ ॥ सहस पंचोतेर वरस कह्यां, चक्रवर्तिपणे घर वास रह्यां ॥ पछे मिटाइ दियो सघळो झगडो, श्री शांति० ॥ ६ ॥ एक सहस पुरुष साथे शिक्षा, श्री जिनवरजीए लीधी दिक्षा ॥ पछे सुर नर आवी पाय पडो, श्री शांति० ॥ ७ ॥ एक मास लगे छदमस्थ रह्या, शुदि पोश नोमे दिन केवळ लह्या ॥ भरणी नक्षत्र प्रभात खरो, श्री शांति० ॥ ८ ॥ प्रभुए मोहजाळ सवि

कापी, चतुर्विध संघ तीरथ थापी ॥ चोथो दूसम सूसम आरो, श्री शांति० ॥ ९ ॥ बाशठ सहस मुनिराज थया, वळी सहस नव्यासी हुइ आजियां ॥ प्रभु तारोने वळी आप तरो, श्री शांति ॥ १० ॥ दोय लाख नेवु सहस श्रावक गुणी, त्रण लाख त्याशी सहस श्राविका सुणी ॥ और चतुर्विध संघ खरो, श्री शांति० ॥ ११ ॥ चार हजार ज्ञानि जति, वळी त्रणशे हुवा विपुलमति ॥ नेवु गणधरनो पाप हरो, श्री शांति० ॥ ॥ १२ ॥ चार हजार त्रणशे रे कह्या, मुनि केवळ लहीने मुगति गया ॥ छ हजार मुनि-वैक्रेय धरो, श्री शांति० ॥ १३ ॥ चोवीशे वादी भारी, वळी आठशे चौद पूरवधारी ॥ आठ करमशुं जाइ लडो, श्री शांति० ॥

॥१४॥ नवपदवी मोटी रे कही, जेणे एकण भवमां छए लही ॥ एसो भरियो पुण्य घडो, श्री शांति० ॥ १५ ॥ पा पा लाख कुमर साधपणे, वळि अधलाख वरस रह्या राज्यपणे ॥ एक लाख वरसनो सर्व घडो, श्री शांति० ॥ १६ ॥ चाळीश धनुष उंची रे देही, वळि हेमवरणी उपमा रे कही ॥ दीठे दील दरियाव ठरो, श्री शांति० ॥ १७ ॥ जो नाम धरावो श्रावक यति, तो अनाचार सेवो रे मती ॥ परभवथी संती कांइ डरो, श्री शांति० ॥ १८ ॥ त्रिविध त्रिविधे जीव मति रे हणो, ए उपदेश छे जिनराज तणो ॥ मार्ग बताव्यो शुद्ध खरो, श्री शांति० ॥ १९ ॥ आ जीव रायने रंक थयो, वळि नरक निगोदमां बहु रे रह्यो ॥ रडवडीयो जेम

गेडि दडो, श्री शांति० ॥ २० ॥ चार गतिनां रे दुःख कह्यां, जिवे अनंति अनंति वार लह्यां ॥ पची रह्यो जेम तेल वडो श्री शांति० ॥ २१ ॥ श्रद्धा सहित तुमे तप तपो, भव्य जीवो सौ तुमे जाप जपो ॥ मार्ग मळ्यो छे निपट खरो, श्री शांति० ॥ २२ ॥ संथारो एक मास तणो, सम्मेतशिखर सिद्ध ठाम भणो ॥ नवशे मुनिशुं मुगति वरो, श्री शांति० ॥ २३ ॥ मृग लंछन सांति ध्यान रह्या, श्री शांति जिनेश्वर मुगति गया ॥ पछे मेट दिया सवि जन्म मरो; श्री शांति० ॥ २४ ॥ तुम नाम लिया सवि काज सरे, तुम नामे मुगति महेल मळे ॥ तुम नामे शुभ भंडार भरो, श्री शांति ॥ २५ ॥ ऋषि जेमलजीए एह विनति कही, मभु तोरा गु-

णनो पार नहीं ॥ मुज भव भवनां दुःख दूर हरो, श्री शांति० ॥ २६ ॥ इति. ॥

अथ श्री चार शरणां प्रारंभ.

प्रह उठीने समरियें, हो भवियण मंगळिक शरणां चार ॥ आपदा मटी संपदा हुवे, हो भवियण दोलतनां दातार ॥ हृद-दमां राखीए, हो भवियण मंगळिक शरणां चार ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अरिहंत सिद्ध साधु तणां, हो० केवळी भाषित धर्म ॥ ए शरणां नित ध्यावतां, हो० त्रुटे आठे कर्म ॥ हृ० ॥ हो० ॥ २ ॥ वाटे घाटे चालतां, हो० रात दिवस मोझार ॥ गाम नगर पुर विचरतां हो० विघ्न निवारण हार ॥ हृ० ॥ हो० ॥ ३ ॥ ए चारे सुखकारियां, हो० ए

चारे जगसार ॥ ए चारे उत्तम कह्यां हो०
ए चारे हितकार ॥ हृ० ॥ हो० ॥४॥ डायण
सायण भूतडां, हो० सिंह चित्राने शुर ॥
वैरी दुश्मन चोरटा, हो० रहे ते सघळा दुर
॥ हृ० ॥ हो० ॥ ५ ॥ राखो शरणांनी आ-
सता, हो० नेडो नही आवे रोग ॥ आणंद
वर्त्ते इण नामथी, हो० वहाळा तणो संयोग
॥ हृ० ॥ हो० ॥ ६ ॥ सुखशाता वर्त्ते घणी,
हो० जे ध्यावे नर नार ॥ परभव जातां
इण जीवने, हो० एह तणो आधार हृ० ॥
हो ॥ ७ ॥ मन चिंतित मनोरथ फळे, हो०
वर्त्ते कोड कल्याण ॥ शुद्ध मने ध्यावतां,
हो० निश्चे पद निरवाण । हृ० ॥ हो० ॥
॥ ८ ॥ इण सारिखो शरणो नहीं, हो० इण
सरीखो नही नाम, इण सरीखो मित्र नही,

हो० गाम नगर पुर ठाम ॥ हृ० ॥ हो० ॥ ९ ॥ दान शियळ तप भावना, हो० जगमे तत्व सार ॥ करो आराधो भावशुं, हो० पामो मोक्ष दुवार ॥ हृ० हो० ॥ १० ॥ जोड किधी छे जुगतिशुं, हो० पाली शेखा काळ ॥ रुषि चोथमलजी इम भणे हो० सुणजो बाळ गोपाळ ॥हृ०॥ हृ० ॥११॥इति.।

अथ श्री ज्वर (ताव) नो छंद.

(दोहा)

नमो आनंदपुर नगर, अजयपाळ राजन ॥ माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपा निधान ॥ १ ॥ सातरुप शक्ति हुओ, करवा खेल जगत ॥ नाम धरावे जूजुवा, पसर्यो तुं इत उत ॥ २ ॥ एकांतरो बेयांतरो, त्र-

इयो चोथो ताम, शीत उष्ण विषम ज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥

ए साते तुज नाम सुरंगा, जपतां पुरे कोडि उमंगा ॥ तें नाम्था जे जालिम जंगा, जगमां व्यापी तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगे भुपति सब रंका, त्रिभुवनमां वाजे तुज डंका ॥ माने नाहि तुं केहनी शंका, तुठ्यो आपे सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक सिद्ध तणा मद मोडे, असुर सुरा तुज आगल दोडे ॥ दुष्ठ धीठ्ठनां कंधर तोडे, नमी चाले तेहने तुं छोडे ॥ ६ ॥ आवंतो थरहर कंपावे, डाह्याने जिम तिम बहेकावे ॥ पहिलो तुं वेढमांथी आवे; सात शिरख पण शीत न जावे ॥ ७ ॥

हीं हीं हुं हुंकार करावे, पांसळियां हाडां ककडावे ॥ उनाळे पण अपल जगावे, तांप पहिरणमां मूतरावे ॥ ८ ॥ आशो कार्तीक मां तुज जोरो; हठथो न माने धागो दोरो ॥ देश विदेश पडावे सोरो, करे सबळ तुं तातो तोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीनां हाडां भंजे, पापीने ताडे करपंजे, भक्ति वत्सल भावे जो रंजे, तो शेवकने कोय न गंजे ॥ १० ॥ फोडक तोडक डमरु डाकं, सुरपति सरिखा माने हाकं ॥ धमके धुंसड धांसड धाकं, चढतो चाले चंचळ चाकं ॥ ११ ॥ पिशुन पछाडणं नही को तोथी, तुज जस बोल्या जाय न कोथी ॥ शी अणखील करो ए थोथी, बहेर करी अळगा रहो मोथी ॥ १२ ॥

भक्त थकी एवडी कां खेडो, अत्रळ अ-
मिना छांटा रेडो ॥ लाखा भक्तनो ए
निवेडो, महाराज मूको भुज केडो ॥ १३ ॥
लाजवशोमां अजया राणी, गुरु आण मानो
गुणखाणी ॥ घरे सीधावो करुणा आणी,
कहुछुं नाके लींटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र स-
हित ए छंद जे पढशे, तेहने ताव कदी नव
चढशे ॥ कांति कळा देही नीरोगं, लेहेशे
लक्ष्मी लीला भोगं ॥ १५ ॥

॥ कलश छप्पय ॥

ॐ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम
वदीजे ॥ आनंदपुर अत्रनीश, अजयपाळ
राखीजे ॥ अजया जात अढार वांचिये
साते बेटा ॥ जपतां एहिज जाप, भक्तशुं न

करे मेटा ॥ उतरे चढियो अंग, पळमें तुज वयणे मुदा ॥ कहे कांति रोग नावे कदा, सार मंत्र गणिये सदा ॥ १६ ॥ इति ज्वर-छंद समाप्तम् ॥

ए छंद सात वार, चौद वार, अथवा एकवीश वार सांभळे अथवा भणे, तो ताव जतो रहे ॥

अथ श्री महावीर स्वामीनो छंद.

सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधने मनथी दुर वारो ॥ संतोषवृत्ति धरो चित्तमांहि, राग द्वेषथी दुर थाओ उच्छाहिं ॥ १ ॥ पडया मोहना पासमां जेह प्राणी, शुद्ध तत्वनी वात तेणे न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमो छो, जिनमार्ग छंडी

भूला कां भमो छो ॥ २ ॥ अलोभी अमानी निरागी तजो छो, सलोभी समानी सरागी भजो छो ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमो छो, नदी गंग मूकी गळीमां पडो छो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ देव घाले गळे रुंढमाळा ॥ केइ देव उत्संगे राखे छे वामा, केइ देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेह जपमाळा, केइ मांसभक्षी महा वीकराळा ॥ केइ योगीणी भोगिणी भोग रागे, केइ रुद्राणी छागनो होम मागे ॥५॥ इशा देव देवीतणी आश राखे, तदा मुक्तिनां सुखने केम चाखे ॥ जदा लोभना थोकनो पार नाव्यो, तदा मधनो बिंदुओ मन्न भाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश राखे, तेह पींडने मन्न शुं लेइ चाखे ॥ दी-

न हीननी भीड ते केम भांजे,फुटयो ढोल होए कहो केम वाजे ॥७॥ अरे मूढ भ्राता भजो मोक्ष दाता, अलोभी प्रभुने भजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पींड शुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धि शुं जेह प्राणी कहे छे, सवि धर्म एकत्व भूलो भमे छे ॥ किहां सर्षवाने किहां मेरुधीरं, किहां कायराने किहां शुरवीरं ॥ ॥ ९ ॥ किहां स्वर्णथाळं किहां कुंभखंडं, किहां कोद्रवाने किहां खीरमंडं ॥ किहां खीर सिंधु किहां क्षारनीरं, किहां कामधेनु किहां छागखीरं ॥ १० ॥ किहां सत्यवाचा किहां कूडवाणी, किहां रंकनारी किहां रायराणी ॥ किहां नारकीने किहां देव भोगी, किहां इंद्रदेही किहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ कि-

हां कर्मघाती किहां कर्मधारी, नमो वीरस्वामी भजो अन्य वारी ॥ जिसी सेजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वामी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन्न राचे, ते जना मूढमां श्रेष्ठ शुं इष्ट छाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंभ रोशी, सजो पुण्य पोषी भजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार संसार असार पामी, आव्यो आश धारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तुहीं तुहीं तुहीं प्रभु परम रागी, भवफेरनी शृंखला मोह भागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजी अरज छे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय हुवो गुरु आज मेरो, विवेके लह्यो मैं प्रभु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति समाप्तम्. ॥

॥ अथ श्री वीरजिननां चउद स्वप्नुं स्तवन. ॥

रायरे सिद्धारथ घेर पटराणी, नामे त्रिशला सुलक्षणीए ॥ राजभुवन मांहे पलंगे पोढंतां, चउद सुपन राणीए लह्यांए ॥ १ ॥ पहेले रे सुपने गयवर दीठो, बीजे वृषभ सोहामणोए ॥ त्रीजे सिंह सुलक्षणो दीठो, चोथे लक्ष्मी देवताए ॥ २ ॥ पांचमे पंच वरणी फुलनी माळा, छठ्ठे चंद्र अमिय झर्यो ए ॥ सातमे सुरज आठमे ध्वजा, नवमे कळश अमिय भर्योए ॥ ३ ॥ पद्म सरोवर दशमे दीठो, खीरसमुद्र दीठो अगीयारमे ए ॥ देव विमान ते बारमुं दीठुं, रणजण घंटा वाजतां ए ॥ ४ ॥ रतननो राशि ते तेरमे

दीठो, अग्नीशिखा दीठी चउदमे ए ॥ चउद सुपन लही राणीजी जाग्यां, राय समोवड पोहोतलां ए ॥ ५ ॥ सुणोरे स्वामी में तों सुहणलां लाध्यां, पाछली रात रळीयामणी ए ॥ रायरे सिद्धारथ पंडित तेडया, कहोरे पंडित फळ एहनां ए ॥ ६ ॥ अम कुळमंडण तुम कुळ दीवो, धनरे महावीर स्वामी अवतर्या ए ॥ जे नर गावे ते सुख पावे, आनंद रंग वधामणां ए ॥ ७ ॥ इति समाप्तम् ॥

अथ श्री महावीरजिन छंद.

(त्रिभंगी छंद.)

जिनशासन स्वामी, अंतरजामी, शिवगति गामी सुखकारी ॥ जगमें जसवंता, श्री

भगवंता, सुगुण अनंता उपगारी ॥ सिद्धारथ कुळ आया, जगत सुहाया, शुभपळ जाया गुणधारी ॥ धन त्रिशला नंदन, कुळध्वज स्यंदन, जिन चरणनकी बालिहारी ॥ १ ॥ आसन कंपाया, सुरपति आया, शीश नमाया, शुभ भावे ॥ वैक्रियकी पासे, मेली उलासे, ले जिन तासें, गिरि आवे ॥ तिहां प्रभुजीनो, महोच्छव कीनो, फिर मुक दीनो ज्यां महत्तारी ॥ धन त्रिशला० ॥ २ ॥ युग वंदणा करके, निद्रा हरके, स्तवन उचरके, घर जावे ॥ भइ रवि उगाइ, भूधव तांइ, दासी वधाइ, दरसावे ॥ नृप महोच्छव कीयो, दानज दीयो, हर्षन हियो, नीहारी ॥ धन० ॥ ३ ॥ यौवन वय मांही, नारी व्हाही, अवसर पाही, जोग ग्रहे ॥ तपस्या तन तावे,

सम दम भावे, ध्यान सुध्यावे, कष्ट सहे ॥ प्रभु क्षमासागार, ज्ञान उजागर, गुण रत्नागर, अघ वारी ॥ धन० ॥ ४ ॥ शुद्ध संयम पाळे, दूषण टाळे ॥ शिवमग चाले, जग त्राता ॥ क्रोध मान ने माया, लोभ हठाया, मोह भगाया, अरि घाता ॥ शूकळ मन ध्याया; कर्म खपाया ॥ केवळ पाया, जिणत्रारी ॥ धन० ॥ ५ ॥ मुणि नाथ बडाइ, मन अकडाइ, आया चलाइ, प्रभु पासे ॥ विस्मय अति पाया, चित्त लजाया, गर्व गमाया, वीमासे ॥ प्रभु भर्म मीटाया जिन मग आया, संजम ठाया, तिण सारी ॥ धन० ॥ ६ ॥ परथम इंद्रभूति, पूरवधर श्रुति, त्रिपादि संयुति, फरमाया ॥ गणधर पद लीना, परम प्रवीना, सम दम भीना, तन ताया ॥ चुम्माळीसे कारा, गण,

घर इग्यारा, भये अणगारा, व्रतधारी ॥ ॥ धन० ॥ ७ ॥ चार तीरथ थाप्यां, पाप उथाप्यां, सुव्रत आप्यां, नर नारी ॥ केइ स्वर्ग सिधाया, केइ शिव पाया, श्री जिन-राया, हितकारी ॥ शैलेशी भावे, प्रभु शिव पावे, जगमें नावे, अविकारी ॥ धन० ॥ ८ ॥ प्रभु अलख निरंजन, भवदुःख भंजन, भविजन रंजन, किरपाळा॥ जे शुद्ध मनध्यावे, दुःख पुळावे, सुख उपावे, प्रतीपाळा ॥ कहे ऋषि तिलोका, नीरंतर धोका, देजो शिव थोका, भव पारी ॥ धन० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ श्री शांतिनाथ स्वामीनो छंद.

शांतीनाथको कीजे जाप, क्रोड भवोनां कापे पाप ॥ शांतीनाथनी म्होटो देव, सुरनर

सारे जेहनी सेव ॥ १ ॥ दूःखदारीद्र जावे दुर, सुख संपती होवे भरपुर ॥ ठग फांसीगर जावे भाग, बळती होवे शीतळ आग ॥२॥ राजलोकमां कीर्ति घणी, शांती जीनेश्वर माथे धणी ॥ जो ध्यावे प्रभुजीनुं ध्यान, राजा देवे अधीकुं मान ॥ ३ ॥ गडगुंबड पीडा मीट जाय, देखी दुश्मन लागे पाय ॥ सघळो भाग्यो मननो भर्म, पाम्यो समकीत काटयां कर्म ॥ ४ ॥ सुणो प्रभु मोरी अरदाश, हुं सेवक तमे पुरो आश ॥ मुजमन चिंतीत कारज करो, चींता आरति वीघ्न ज हरो ॥ ५ ॥ मेटो म्हारा आळ जंजाळ, प्रभु मुजने तुं नयण नीहाळ ॥ आपनी कीर्ति ठामो ठाम, सुधारो प्रभु म्हारां काम ॥ ६ ॥ जो नित्य नित्य प्रभुजीने रटे, मोती बंधा

फूला करे ॥ चेप लावण दोनुं जळ जाय, विण ओषध कट जावे छांय ॥ ७ ॥ शांतिनाथना नामथी थाय, आंखे तुट पडळ कट जाय ॥ कमळो पीळो जळ जळ झरे, शांती जीनेश्वर शाता करे ॥ ८ ॥ गरमी व्याधी मीटावे रोग, सयण मित्रनो मळे संयोग ॥ एहवा देव न दीसे ओर, नही चाले दुश्मन को जोर ॥ ९ ॥ लुंटारा सब जावे नास, दुर्जन फीटी होवे दास ॥ शांतीनाथनी कीर्ति घणी, कृपा करो तुमे त्रीभुवन धणी ॥१०॥ अरज करुंछुं जोडी हाथ, आपशुं नही कोइ छानी वात ॥ देखी रह्या छो पोते आप, काटो प्रभुजी म्हारां पाप ॥ ११ ॥ मुज मन चींतित करिये काज, राखो प्रभूजी म्हारी लाज ॥ तुम सम जग मांही नही कोय, तुम

भजवाथी शाता होय ॥ १२ ॥ तुम पास चले नही मरकी रोग, ताव तेजरो नांखे तोड ॥ मारी मीटाइ कीधी प्रभु संत, तुज गुणनो नही आवे अंत ॥ १३ ॥ तुमने समरे साधु सती, तुमने समरे जोगी जती ॥ काटो संकट राखो मान, अवीचळ पदनुं आपो स्थान ॥ १४ ॥ संवत अढार चोराणुं जाण, देश माळवो अधिक वखाण ॥ शेहेर जावरा चैतर मास, हुं प्रभु तुम चरणांकोदास ॥१५॥ रुषि रुगनाथजी कीधो छंद, काटो प्रभुजी म्हारा फंद ॥ हुं जोउं प्रभुजीनी वाट, मुज आरती चिंता सवीकाट ॥ १६ ॥

॥ छंद प्रकरण समाप्त ॥

अथ श्री दीवाळीनुं स्तवन.

पुरव दीशे हुइ पावापुरी ॥ धन धान्य रुद्धी स्मृद्धि शुं भरी ॥ हस्तीपाळ नामे तीहां भुपाळी ॥ वीर मुगते बीराज्या दीन दीवाळी ॥ १ ॥ गौतमे गुरुनी सेवा कीधी मनमानी ॥ एक रातमे हुवा केवळज्ञानी ॥ जीके चौद राज्य रह्या भाळो ॥ वीर० ॥२॥ अढारे राय हुवा भगता ॥ दोय दोय पासा कीधा लगता ॥ जीके वीर साभु रह्या भाळी ॥वीर०॥३॥ प्रभुए दोय दीनरो संथारो कीधो ॥ सोळ पहोर लगे उपदेश दीधो ॥ प्रभु मुगती गया कर्मने गाळी ॥ वीर० ॥४॥ प्रभुए त्रीशे वर्षे संयम लीधो ॥ नीज आतम काज सीद्ध कीधो ॥ वरस बेंताळीश दीक्षा

पाळी ॥वीर०॥५॥ प्रभुने सातसें चेला चौदसें चेली, ज्याने मुगती महेलमां दीया मेली ॥ जेणे कर्मना बीज दीयां बाळो ॥वीर०॥६॥ प्रभुने एक राणीने हुइ एक बेटी, ॥ जी के मुगती गया दुःख दीयां मेटो, जमाइ हुओ ज्यारो जमाळी ॥वीर०॥७॥ प्रभुने एक बहेनने एकज भाइ ॥ जी के स्वर्गे गया समकीत पाइ ॥ श्रावकनां व्रत शुद्धपाळी वीर० ॥ ८ ॥ रुषभदत्तने देवानंदा माता ॥ नयणे नीरखतां हुइशाता ॥ दोनुं मुगती गया कर्मने गाळी ॥ वीर ॥ ९ ॥ सीद्धारथ राजाने त्रीशला राणी ॥ जेणे संथारो कीधो समता आणी अच्युय देवलोक टांको दीयो झाळी ॥ वीर०॥१०॥ जेणी राते वीरे मुगती पामी ॥ केवळ पाम्या गौतम स्वामी ॥ ज्यारो जा-

पजपो नवकार वाळी ॥ वीर० ॥११॥ सुधर्मा स्वामी हुवा पाट धणी ॥ उथारी कीर्ती महीमा जोर घणी ॥ दयामारग दीयो अजवाळी ॥ वीर० ॥१२॥ ज्यारी पाट हूवा जंबु वैरागी ॥ रात परण्या प्रभाते आठे त्यागी, सोळ वर्षामे काटी कर्म जाळी ॥वीर० ॥१३॥ आठे भामनी वैरागे भीनी ॥ प्रभाते पीयु साथे दीक्षा लीनी ॥ अत्रीहड प्रीत सघळी पाळी॥वीर०॥१४॥प्रभवो पण राजानो बेटो ॥ जीके जंबु कुमर शुं हुवोरे भेटो ॥ पांचसें शुं वैराग पाम्यो ततकाळी॥ वीर०॥१५॥ वीशजीन समेत शीखर सीध्या ॥ अष्टापद गीरनार दोय सीध्या ॥ वासुपुज्य सीध्या चंपा चाली ॥वीर० ॥१६॥महावीर चोमासो कीयो पावापुरी ॥ कारतक वदी अमावासे

मुगती वरी ॥ भणतां सुणतां मंगळ माळी ॥वीर०॥१७॥ दीन दीवाळीनो पायो टाणो ॥ ता रात्री भोजन असनादिक नहीं खाणो ॥ ज ारो जाप जपो शीयळ पाळी॥वीर०॥१८॥ गुरुचेलानी जोडी सुरज शशी ॥ रुषी रायचंद कहे मारे मनडे वशी ॥ में जुगती शुं जोड जोडी टंकशाळी॥वीर०॥१९॥ पुज्य जेमलजी रह्या पासो ॥ शेहेर नागोरमें कीयो चोमासो ॥ संवत अढार वर्ष पीस्ताळी ॥ वीर० ॥ २० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामिनुं हालरियुं ॥

माता त्रिशला झुलावे पुत्र पालणे, गावे हालो हालो हालरवानां गीतरे ॥ सोना

रुपाने वळी रत्ने जडियुं पालणुं, रेषम दोरी घुघरी वागे छुम छुम रीतरे ॥ हालो, हालो हालो हालो रे म्हारा वीरने ॥ १ ॥ जिनजी पास प्रभुथी वरस अढीसें अंतरे, होशे चोविशमो तीर्थंकर जित परिणाम ॥ केशीस्वामी मुखथी एवी वाणी सांभळी, साची साची हुइ ते म्हारे अमृत वाणरे ॥ हा० ॥ ॥२॥ चौदे स्वप्ने होवे चक्री के जिनराज, वीत्या बारे चक्री नहीं हवे चक्रीराज, जिनजी पास प्रभुना श्री केशी गणधर ॥ तेहने वचने जाण्या चोवीशमा जिनराज, म्हारी कुखे आव्या त्रण भुवन शिरताज, म्हारी कुखे आव्या तरण तारण जिहाज ॥ हुं तो पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज रे ॥ हा० ॥ ॥ ३ ॥ मुजने डोहळा उपन्या बेसुं गज अंबा॰

दीए, सिंहासनपर बेसुं चामर छत्र धराय ॥ सहु लक्षण मुजने नंदन ल्हारा तेजनां, ते दिन संभारुं ने आनंद अंग न माय रे ॥ हा० ॥ ४ ॥ कर तळ पगतळ लक्षण एक हजारने आठ छे, नेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंघे लंछन सिंह बीराजतो, में तो पेहेले सुपने दीठो वीशवा-वीशरे ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदी वर्द्धनना तमे, नंदन भोजाइयोना देवर छो सुकुमाळ ॥ हसशे भोजाइओ कही दीयर म्हारा लाडका, हसशे रमशे ने वळी चुंटी खणशे गाल, हसशे रमशे ने वळी ठुंमा देशे गालरे ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा राजाना भाणेज छो, नंदन नवली पांचशे मामीना भाणेज छो, नंदन मामलीयाना भा-

णेजा सुकुमाळ ॥ हसशे हाथे उच्छाळी क-
हाने न्हाना भाणेजा ॥ आंख्यो आंजीने
वळी टपकुं करशे गालरे ॥ हा० ॥ ७ ॥
नंदन मामा मामी लावशे टापी आंगलां,
रतने जडीयां झुलडो मोती कसवी कोर ॥
निलां पीळां ने वळी रातां सरवे जातिनां,
पहेरावशे मामी म्हारा नंद कीशोर रे ॥हा०
॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखडली बहु
लावशे, नंदन गजुवे भरशे लाडु मोतीचुर ॥
नंदन मुखडां जोइने लेशे मामी भामणां
नंदन मामी कहेशे जीवो सुख भरपुररे ॥
हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी
साते सती, म्हारी भत्रीजीने ब्हेन तमारा
नंद ॥ ते पण गुंजे भरवा लाकणसाइ लावशे,
तुमने जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद रे

॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे लावशे लाख
टकानो घुघरो, वळी सूडा मेना पोपटने ग-
जराज ॥ साररू कोयल हंस तीतर ने वळी
मोरजी, मामी लावशे रमवा नंद तमारे का-
जरे ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी
जळ कळशे नवरावीया, नंदन तमने अमने
केळीघरनी मांह ॥ फूलनी वृष्टी कीधी योजन
एकने मांडले, बहु चिरंजीवी आशीश दीधी
तुमने त्यांह रे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमने मेरु
गिरिपर सुरपतीये नवराविया, निरखी नि-
रखी हरखी सुकृत लाभ कमाय ॥ मुखडा
उपर वारी कोटी कोटी चंद्रमा, वळी तनपर
वारी ग्रहगण समुदायरे ॥ हा० ॥ १३ ॥
नंदन नवला भणवा निशाळे पण मूकशुं, ग-
जपर अंबाडी बेसाडी म्होटे साज ॥ पसकी

भरशुं श्रीफळ फोफळ नागरवेलशुं, सुखडली लेशुं, निशाळीयाने काजरे ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला म्होटा थाशो ने परणावशुं, वहु वर सरखी जोडी लावशुं राजकुमार ॥ सरखा सरखी वेवाइ वेवाणुं पधरावशुं, वर वहु पोंखी लेशुं जोइ जोइने देदार रे ॥ हा० ॥ १५ ॥ पीयर सासर म्हारा वेहु पख नंदन उजळा, म्हारी कूखे आव्या तात पनोता नंद ॥ म्हारे आंगणे वुठया अमृत दूधे मेहुला, म्हारे आंगणे फळिया सुरतरु सुखना कंदरे ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणिपेरे गायुं माता त्रिशला सुतनुं हालरुं, जे कोइ गाशे लेशे पुत्र तणा साम्राज ॥ बीलीमोरा नगरे वरण्युं वीरनुं हालरुं, जयजय मंगळ होजो दीपविजय कविराजरे ॥ हा० ॥१७॥ इति ॥

अथ श्री जीव राशिनी सज्झाय.

हवे राणी पद्मावती, जीवराशि खमावे ॥ जाणपणुं जगते भलुं, एणीवेळाये आवे ॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥ अरिहंतनी साख ॥ जे में जीव विराधिया, चोराशी लाख ॥ ते मुज० ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वी तणा, सात अपकाय, सात लाख तेउकायना, साते वळीवाय ॥ ते मुज० ॥ ३ ॥ दशलाख प्रत्येक वनस्पति, चउद साधारण॥बीति चौरिंद्रिय जीवना, बे बे लाख विचार ॥ ते मुज० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ॥ चउद लाख मनुष्यना, ए लाख चोराशी ॥ ते मुज० ॥५॥ इणभवे परभवे सेवीयां, जे पाप अढार ॥ त्रिविध त्रिविधे करी परिहरुं, दुर्गतिनां दातार ॥ ते

मुज० ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या, मृषावाद ॥ दोष अदत्तादानना, मैथुन उनमाद ॥ ते मुज० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेळ्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ॥ मान माया लोभ में कियां, वळी राग ने द्वेष ॥ ते मुज० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दुहव्या, दीधां कूडां कलंक ॥ निंदा कीधी पारकी, रति अरति निशंक ॥ ते मुज० ॥ ९ ॥ चाडी कीधी पारकी, कीधो थापण मोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, भलो आण्यो भरोंसो ॥ ते-मुज० ॥ १० ॥ खाटकीने भवे में किया, जीवना वध घात ॥ चडीमार भवे चरकलां, मार्यां दिननें रात ॥ ते मुज० ॥ ११ ॥ काजी मुल्लाने भवे, पढी मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जभ्मे किया, कीधां पाप अघोर ॥ ते

मुज० ॥ १२ ॥ माछीने भवे माछलां, झाल्यां जळवास ॥ धींवर भील कोळी भवे, मृग पाड्या पास ॥ ते मुज० ॥ १३ ॥ कोटवाळने भवे में किया, आकरा कर दंड ॥ बंधीवान मराविया, कोरडा छडी दंड ॥ ते मुज० ॥ १४ ॥ परमाधामीने भवे, दीधां नारकी दुःख ॥ छेदन भेदन वेदना, ताडन अति तिख्ख ॥ ते मुज० ॥ १५ ॥ कुंभारने भवे में किया, नीमाह पचाव्या ॥ तेली भवे तल पीलीया, पापे पिंड भराव्या ॥ ते मुज० ॥ १६ ॥ हाळी भवे हळ खेडीयां, फोड्यां पृथ्वीनां पेट ॥ सूड निदान कियां घणां, दीधा बळद चपेट ॥ ते मुज० ॥ १७ ॥ माळी भवे रोप रोपिया, नानावीध वृक्ष ॥ मूळ पत्र फळ फुलनां, लाग्यां पाप अलक्ष ॥ ते

मुज० ॥ १८ ॥ अदोवाइयाने भवे, भर्यो अधिका भार ॥ पोठी उंट कीडा पडया, द-या नाणी लगार ॥ ते मुज० ॥ १९ ॥ छीं-पाने भवे छेतर्या, कीधां रंगण पास ॥ अग्नि आरंभ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास ॥ ते मुज० ॥ २० ॥ शुरपणे रण जुझतां, मार्यां माणस वृंद ॥ मदिरा मांस माखण भख्यां, खाधां मूळ ने कंद ॥ ते मुज० ॥ २१ ॥ खाण खणावी धातुनी, पाणी उल्लेच्यां ॥ आरंभ कीधा अति घणा, पोते पापज संच्या ॥ ते मुज० ॥ २२ ॥ अंगार कर्म कीया वळी, धरमे दवज दीधा ॥ सम खाधा वीतरागना, कुडा कोसज कीधा ॥ ते मुज० ॥ २३ ॥ बिल्ली भवे उंदर गळ्या, गिरोळी हत्यारी ॥ मूंढ गमार तणे भवे, में जूं लींख

मारी ॥ ते मुज० ॥ २४ ॥ भाडभुंजा तणे भवे, एकेंद्रिय जीव ॥ जार चणा घउं शेकिया, पाडंता रीव ॥ ते मुज० ॥२५॥ खांडण पीसण गारना, आरंभ अनेक ॥ रांधण इंधण अग्निनां कीधां पाप उद्वेग ॥ ते मुज० ॥ २६ ॥ विकथा चार कीधी वळी, सेव्या पंच प्रमाद ॥ इष्ट वियोग पडाविया, रुदन विषवाद ॥ ते मुज० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावक तणां, व्रत लेइने भाग्यां ॥ मुळ अने उत्तर तणा, मुज दुषण लाग्यां ॥ ते मुज० ॥ ॥ २८ ॥ साप वींछी सिंह चीतरा, शकराने समळी ॥ हिंसक जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सवळी ॥ ते मुज० ॥२९॥ सूवावडी दूषण घणां, वळी गर्भ गळाव्या ॥ जीवाणी ढोळ्यां घणां, शीळव्रत भंजाव्यां ॥ ते मुज०

॥ ३० ॥ भव अनंत भमतां थकां कीधो देह सबंध, त्रिविधे त्रिविधे करी वोसिरुं, तीण शुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३१ ॥ भव अनंत भमतां थकां, कीधा परिग्रह सबंध ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोशिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥ ३२ ॥ भव अनंत भमतां थकां, कीधा कुटुंब सबंध ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोशिरुं, तिणशुं प्रतिबंध ॥ ते मुज० ॥३३॥ इणिपरे इह भव परभवे, कीधां पाप अखत्र ॥ त्रिविधे त्रिविधे करी वोशिरुं, करुं जन्म पवित्र ॥ ते मुज० ॥ ३४ ॥ एणि विधे ए आराधना, भावे करशे जेह ॥ समय सुंदर कहे पापथी, वळी छुटशे तेह ॥ ते मुज० ॥ ३५ ॥ राग वैराडी जे सुणे, एह त्रीजी ढाळ ॥ समय सुंदर कहे पापथी, छुटे ततकाळ ॥

ते मुज० ॥ ३१ ॥ इति समाप्तम् ॥

॥ अथ श्री महावीरस्वामीनुं चोढालीयुं ॥ ढाल १ ली. ॥

सिद्धारथ कुळे तुं उपन्यो, त्रिशलादे थारी मात जी ॥ वरशी दान देइ करी, संयम लीधो जगनाथ जी ॥ थें मन मोह्युं महावीर जी ॥ १ ॥ कंचन वरणी छे कायजी ॥ नयन न धापे जी निरखतां, दिठडे आवे छे दायजी ॥ थें मन० ॥२॥ आप एकिला संयम आदर्यो, उपन्यो चोथो रे ज्ञान जी ॥उत्कृष्ट तप थें आदर्यो, धरता निर्मळ ध्यान जी ॥ थें मन० ॥ ३ ॥ उग्र विहार थें आदर्यो, केइ वास रह्या वनवास जी ॥ केइ

वासा वस्तिये रह्या, न रह्या एक ठामे चो-
मास जी ॥ थें मन० ॥ ४ ॥ प्रभु पहेलो
चोमासो थें कियो, अट्ठी गाम मोझार जी ॥
दुजो वाणीज गाम में; पंच चंपा सुखकार
जी ॥ थें मन० ॥ ५ ॥ पंच पृष्ठ चंपा कर्यां,
विशाळा नगरीमां तीन जी ॥ राजगृहीमां
चौदे कर्यां, नालंदे पाडे लयलीन जी ॥
थें मन० ॥ ६ ॥ छ चोमासां मिथिळा क-
र्यां, भद्रिकानगरीमां दोय जी ॥ एक क-
र्यां रे आलंभिया, सात्रार्थि नगरी एक होय
जी ॥ थें मन० ॥ ७ ॥ एक अनारज देश-
मां, अपापा नगरी एक जाण जी ॥ एक
कर्यां पावापुरि में, जठ्ठे पहोत्या निरवाण
जी ॥ थें मन० ॥ ८ ॥ हस्तीपाळ राजा
इम वीनवे, हुं तुम चरणारो दास जी, एक

शाळा म्हारे सूझती, आप करोने चोमास जी ॥ थें मन ॥ ९ ॥ चाळीश चोमासां शहेरमां, दाख्यां देश नगरनां नाम जी ॥ एक अनारज देशमां, एक चोमासुं वळी गाम जी ॥ थें मन० ॥ १० ॥ प्रभु गाम नगर पुर विचर्या, भव्य जीवारां भाग्य जी ॥ मारग बताव्यो मोक्षनो, कियो उपगार अथाग जी ॥ थें मन० ॥ ११ ॥ साडाबार वरसां लगे, उपर आधो रे मास जी ॥ छद्मस्थ रह्या प्रभु एटलुं, पछी कर्यो केवळज्ञान प्रकाश जी ॥ थें मन ॥ १२ ॥ वर्ष बयाळीश पाळियो, संयम साहस धीर जी ॥ त्रीश वरस घरमां रह्या, मोक्ष दायक महावीर जी ॥ थें मन० ॥ १३ ॥ पावापुरिमां पधारिया, नर नारी हुआ उल्लास जी ॥

ऋषि रायचंदजी इम वीनवे, हुं आयो प्रभु-जीने पास जी ॥ थें मन० ॥ १४ ॥ संवत अढार गुणचालीशमे, नागोर शेहर चोमास जी ॥ पूज्य जेमलजी प्रसादथी, एह करी अरदास जी ॥ थें मन० ॥ १५ ॥ इति. ॥

॥ ढाल २ जी. ॥

शासन नायक वीर जिणंद, तीरथनाथ जाणे पुनम चंद ॥ चरणे लागे ज्यारे चो-सठ इंद्र, सेवा करे ज्यारी सुर नर वृंद ॥ थें अबको चोमासो स्वामिजी अठेकरो जी, थें पावापुरिसें पग आघो मति धरो जी, अठे करो, अठे करो, अठे करो, जी, थें चरम चोमासो स्वामिजी अठे करो जी

॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हस्तिपाळ राजा वि-
नवे करजोड, पूरो प्रभुजी म्हारा मनरा हो
कोड ॥ शीश नमाय ऊभो जोडी हाथ, क-
रुणा सागर वाजो कृपाजी नाथ ॥ थें अ-
बको० ॥ २ ॥ रायनी राणी विनवे राजलोक,
पुण्य जोगे मळ्यो सेवानो संजोग ॥ मन
वांछित सहु माळियां जी काज; थें मया
करी मुज साम्हुं जुवो जिनराज ॥ थें
अबको० ॥ ३ ॥ श्रावक श्राविका कइ नर
नार, मळी मळी विनति करे वारंवार ॥
पावापुरिमां पधार्या वितराग, प्रगटी पु-
ण्याइ म्हारा म्होटा जी भाग्य ॥ थें अ-
बको० ॥ ४ ॥ वळि हस्तिपाळ राजा वि-
नवे भूपाळ, प्रभु जी थें छो दीन दयाळ
॥ सूझती एक म्हारे म्होटी छे शाळ, हवे

लागी गयो छे वरषा जी काळ ॥ थें अब को० ॥ ५ ॥ मानी विनती प्रभु रह्या चोमास, पावापुरिमां हुओ हरष उल्लास ॥ गौतम गणधर गुरांजीने पास, निशि दिन ज्ञाननो करेजी अभ्यास ॥ थें अबको० ॥ ॥ ६ ॥ साधु अनेक रह्या करजोड, सेवा करे सदा होडाजी होड ॥ चौद हजार चेला रत्नारी माळ, दीक्षा लीधी छोडी माया जंजाळ ॥ थें अबको० ॥ ७ ॥ वाडि चेली चंननबाळाजी जाण, हुइ कुमारि महा सती चतुर सुजाण ॥ मोतीनी माळा छत्रीश हजार ॥ सघळी में वडी साधवी ए शिरदार ॥ थें अबको० ॥ ८ ॥ च्यारुइ संघ सेवा नित्य करे, प्रभुजीने देखी देखी अंखीयां ठरे ॥ नव मल्लिने नव लच्छी जी

राय, ज्यारां दर्शन केरी चित्तमें चाय ॥ थें अबको० ॥ ९ ॥ संघ सघळा रे हुइ मन रंग रळी, पुण्य योगे प्रभुजी नी सेवा मळी ॥ ऋषि रायचंदजी विनवे जोडी हाथ, थें करुणासागर वाजो कृपाजीनाथ ॥ थें अबको० ॥ १० ॥ शहेर नागोरमें कियोजी चोमास, प्रभुजी देज्यो मुने सुगतिनो वास ॥ हुं सेवक तुमे साहिब स्वाम, म्हारे अवर देवाशुं नहि कोइ काम ॥ थें अबको० । ११॥

॥ ढाळ २ जी. ॥

शासन नायक श्री महावीर, तीरथनाथ त्रिभुवन धणी ॥ पावापुरिमें कियो चरम चोमास, हुइ मोक्षदायकरी महिमा घणी ॥ गौतमने मेळ दियो महावीर, देवशर्माने प-

तिबोधवा ॥ १ ॥ उतराध्ययननां अध्ययन छत्रिश, कारतक वदि अमावास्ये कह्यां ॥ एकशोने वळी दश अध्ययन, सुत्र विपाक तणां लह्यां ॥ गौतमने० ॥ २ ॥ पोसा किधा श्री वीरजीनी पास, देश अढारना राजीया ॥ नव मल्लिने नव लच्छीजी राय, वीरना भगता वाजीया ॥ गौतमने० ॥ ३ ॥ प्रभु शासनना शिरदार, सर्व संघने संतोषने ॥ सोळ पहोर लगे देशना दीध, पछी वीर बीराज्या मोक्ष में ॥ गौतमने० ॥ ४ ॥ तिन वरसने साडा आठ मास, चोथा आराना बाकी रह्या ॥ दिन दोय तणो संथार, मौन रही मुगते गया ॥ गौतमने० ॥ ५ ॥ इंद्र आव्या जी चित्त उदास, देव देवीना साथमें ॥ जाणे झग मग झग रही ज्योत, अ-

मावश्यानी रात में ॥ गौतमने० ॥ ६ ॥
मुगति पहोत्या एका एक, सातसे हुवा ज्यारे
केवली ॥ चौदसे साधावियां हुइ सिद्ध, हुं
सहुने वांदु मनरळी ॥ गौतमने० ॥ ७ ॥

रह्या त्रीश वरस घर मांय, वर्ष बेंताळि सं-
यम पाळीयो ॥ प्रभु जग तारण जगदीश,
दया मार्ग अजुवाळीयो ॥ गौतमने० ॥ ८ ॥
होजी देव देवी ने वळि इंद्र, निर्वाण तणो
महोच्छव कीयो ॥ अरिहंत नो पडियो वी-
जोग, सुर नरनो भरियो हैयो ॥ गौतमने०
॥ ९ ॥ साधु साधवी करता शोक, श्रावक
श्राविका पण घणा ॥ भरत क्षेत्रमां पडियो
वीजोग, आज पछी अरीहंततणो ॥ गौतमने०
॥ १० ॥ पछी बेठा सुधर्म स्वामी पाट, चा-
रुइ संघ चरण सेवता ॥ ज्यारी पाळता

अखंडित आण, सेवा करे देवीने देवता ॥
॥ गौतमने० ॥ ११ ॥ मुगते पहोत्या श्री
महावीर, प्रभु सुख पाम्या छे शाश्वतां ॥
ऋषि रायचंदजी कहे एम, म्हारे अरिहंत
वचननी आसता ॥ गौतमने० ॥ १२॥ इति.॥

॥ ढाल ४ थी. ॥

श्री महावीर पहोत्या निर्वाण, गौतम-
स्वामीए वातज जाणी ॥ १ ॥ गुरांजी थें मने
गोडे न राख्यो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मु-
गति जावणरो नाप न दाख्यो ॥ गुरांजी०
॥ २ ॥ हुं सघळा पेहला हुवो थारो चेलो,
इण अवसर आघो किम मेल्यो ॥ गुरांजी०
॥ ३ । प्रभु तुम चरणे म्हारो चित्त लाग्यो,
पण थें मुने मेल दियो आगो ॥ गुरांजी०

॥ ४ ॥ मुने दरशन आपरो लागतो प्यारो, आप पहोत्या निर्वाण मुने मेल दियो न्यारो ॥ गुरांजी० ॥ ५ ॥ आपे तो मुजशुं अंतर राख्यो, पिण मे म्हारा मनरो दरद न दाख्यो ॥ गुरांजी० ॥ ६ ॥ हुं आडो मांडीने न झालत पल्लो, पण साहिब काम कियो तुमे भल्लो ॥ गुरांजी० ॥ ७ ॥ हुं तुमने अंतराय न देतो, मुगतिमें जग्या वेंहची न लेतो ॥ गुरांजी० ॥ ८ ॥ हुं संकडाइ न करतो कांइ, आप साथे हुं मोक्षमें आइ गुरांजी ॥ ९ ॥ अब हुं पुछा करशुं किण आगे, प्रभु म्हारो मन एक थाशुंज लागे ॥ गुरांजी० ॥ १० ॥ म्हारो सांसो कहो कुण टाळे, आप विना पाखंडीना मद कुण गाळे ॥ गुरांजी०॥११॥ हुं तो चौदे पूरव ने चौनाणी, पिण मोहनी

कर्मे लपेड्यो आणी ॥ गुरांजी० ॥ १२ ॥
इसा गौतमस्वामीये क्रिया विळपात, ए मो-
हनी कर्मनी अचरिज वात ॥ गुरांजी०
॥ १३ ॥ हवे मोहनी कर्म दूरे टाळी, गौ-
तमस्वामीए सुरती संभाळी ॥ वीतराग
राग द्वेषशुं वीत्या. ॥ १४ ॥ ए आंकणी ॥
महारा चित्तमां आइ गइ चींता ॥ वीतराग०
॥ १५ ॥ तिणि वेळा निर्मळ ध्यानज ध्या-
यो, केवळज्ञान गौतमस्वामी पायो ॥ वी-
तराग० ॥१६॥ बार बरस रह्या केवळज्ञानी,
वात ज्याशुं कांइ नव रही छानी ॥वीतराग०
॥ १७ ॥ गौतेम पण कियो मुगतिमें
वासो, संसारनो सर्व देखे तमासो ॥ वीत-
राग० ॥ १८ ॥ जेणि राते मुगति गया
वर्द्धमान, इंद्रभूतिने उपन्युं केवळज्ञान ॥

वीतराग० । १९ ॥ तिण दिनथी ए वाजी दीवाळी, महोटो दिन ए मंगळ माळी ॥ वीतराग० ॥ २० ॥ रात दिवाळीनो शियळ थें पाळो, वळि रात्रिभोजन करवो टाळो ॥ वीतराग० ॥ २१ ॥ ऋषि रायचंद कहे सुणो हो सुज्ञानी, दयारुप दीवाळी थें लेज्यो मानी ॥ वीतराग० ॥ २२ ॥

॥ कळश. ॥ श्री शासन नायक सुगति दायक दया मारग अजुवाळियो ॥ श्री गौतमस्वामी, मुगति गामी; कियो चित वल्लभ चोढाळियो ॥ २३ ॥ संवत अढारे गुणचाळीशे, नागोर चोमासो निर्मळ मने ॥ पूज्य जेमलजी प्रसादे, संपूर्ण कियो दिवाळी दिने ॥ २४ ॥ इति समाप्तम् ॥

अथ श्री लघु साधु वंदनानी सज्झाय.

साधुजीने वंदना नित नित कीजे, प्रह उगमते सूर रे प्राणी; निच गतिमां ते नवि जावे, पावे रिद्धि भरपूर रे प्राणी ॥ सा० ॥ १ ॥ मोटा ते पंच महाव्रत पाले, छकायरा प्रतिपालरे प्राणी; भ्रमर भिक्षा मुनि सूझती लेवे, दोष बयालिश टालरे प्राणी ॥ सा० ॥ २ ॥ रिद्धि संपदा मुनि कारमी जाणे, दीधी संसारने पूंठरे प्राणी; एरे पुरुषारी वंदगी करतां, आठे करम जाये तुट रे प्राणी ॥ सा० ॥ ३ ॥ एक एक मुनिवर रसना त्यागी, एकेका ज्ञान भंडार रे प्राणी; एक एक मुनिवर वैयावच वैरागी, एना गुणनो नावे पाररे प्राणी ॥ सा० ॥ ४ ॥ गुण सत्तावीस करीने दीपे, जीत्या परिसा बा-

वीसरे प्राणी; बावन तो अनाचरिण टाले, तेने नमावुं मारुं शीशरे प्राणी ॥ सा० ॥५॥ झाज समान ते संत मुनेश्वर भव्य जीव बेसे आयरे प्राणी; पर उपकारी मुनि दाम न मागे, देवे ते मुगती पोचायरे प्राणी ॥ सा॥ ६ ॥ ए चरणे प्राणी शातारे पावे, पावे ते लील विलासरे प्राणी; जन्म जरा अने मरण मिटावे, नावे फरी गर्भावासरे प्राणी ॥ सा० ॥७॥ एक वचन ए सतगुरु केरो, जो बेसे दीलमांयरे प्राणी; नरक गतिमां ते नहि जावे, एम कहे जीनरायरे प्राणी ॥ सा० ॥ ८ ॥ प्रभाते उठीने उत्तम प्राणी; सुणो साधारो व्याख्यान रे प्राणी; ए पुरुषारी सेवा करतां, पावे ते अमर विमान रे प्राणी ॥ सा० ॥ ९ ॥ संवत अढार ने वर्ष

अढत्रीसे, बुसी ते गाम चोमास रे प्राणी; मुनि आसकरणजी एणीपेरे जंपे, हुंतो उत्तम साधारो दास रे प्राणी; साधुजीने वंदणा नित नित कीजे ॥ १० ॥ समाप्तम् ॥

अथ श्री साधु वंदना लिख्यते.

नमु अनंत चोवीशी, ऋषभादिक महावीर; आर्य क्षेत्रमां घाली धर्मनी सीर ॥ १ ॥ महा अतुल्य बलिनर, शूरवीर ने धीर, तीर्थ प्रवर्त्तावी, पहोत्या भवजल तीर ॥२॥ श्रीमंधर प्रमुख, जघन्न तीर्थंकर बीश; छे अढीद्वीपमां, जयवंता जगदीश ॥ ३ ॥ एक शोने शितेर, उत्कृष्टा पदे जगीश, धन्य महोटा प्रभुजी, जेहने नमावुं शीश ॥ ४ ॥ केवली दोय कोडी, उत्कृष्टा नव कोड; मुनि

दोय सहस्र कोडी, उत्कृष्ट नव सहस्र क्रोड ॥ ५ ॥ विचरे विदेहे, महोटा तपस्वी घोर, भावे करी वंदु, टाले भवनी खोड ॥ ६ ॥ चोवीशे जिनना, सघळा ए गणधार; चउदसेंने बावन, ते प्रणमुं सुखकार ॥ ७ ॥ जिनशाशन नायक, धन्य श्री वीर जिणंद; गौतमादिक गणधर; वर्त्ताव्यो आणंद ॥ ८ ॥ श्री रिषभदेवना, भरतादिक सो पूत; वैराग्यमन आणी, संयम लियो अदभूत ॥ ९ ॥ केवळ उपराजी, करि करणी करतुत; जिनमत दीपावी, सघळा मोक्ष पहुंत ॥१०॥ श्री भरतेश्वरना, हुवा पटोधर आठ, आदित्य जशादिक, पहोंत्या शिवपुर वाट ॥ ॥११॥ श्री जिन अंतरना, हुवा पाट असंख्य; मुनि मुक्ति पहोंत्या, टाली कर्मनो बंक

॥ १२ ॥ धन्य कपिल मुनिवर, नमी नमुं अणगार; जेणे ततक्षण त्याग्यो, सहस्त्र रमणी परिवार ॥ १३ ॥ मुनि हरिकेशिबल चित्त मुनिश्वर सार, शुद्ध संयम पाळी, पाम्या भवनो पार ॥ १४ ॥ वळी इखुकार राजा, घेर कमळावती नारः भगु ने जसा, तेहना दोय कुमार ॥१५॥ छये छति रिद्धि छांडीने, लीधो संयम भार; इण अल्पकाळमां, पाम्या मोक्ष द्वार ॥ १६ ॥ वळी संजती राजा, हरण आहिडे जाय; मुनिवर गद् भाली, आण्यो मारग ठाय ॥ १७ ॥ चारित्र लइने, भेटया गुरुना पाय; क्षत्री राज ऋषीश्वर, चर्चा करी चित्त लाय ॥१८॥ वळी दशे चक्रवर्ति, राज्य रमणी ऋद्धि छोड; दशे मुक्ति पहोंत्या, कुलने सोभा

चहोड ॥ १९ ॥ इण अवसर्प्पिणीमां, आठ राम गया मोक्ष; बलभद्र मुनिश्वर, गया पंचमे देवलोक ॥ २० ॥ दशार्णभद्र राजा, वीर वांद्या धरि मान; पछे इंद्र हठायो, दियो छकाय अभेदान ॥ २१ ॥ करकंडु प-मुख, चारे प्रत्येक बोध; मुनि मुक्ति पहोत्या जीत्या कर्म महा जोध ॥ २२ ॥ धन्य महोटा मुनिवर, मृगापुत्र जगीश; मुनिवर अनाथी, जीत्या रागने रीश ॥ २३ ॥ वली समुद्रपाल मुनि, राजिमति रहेनेम; केशीने गौतम, पा-म्या शिवपुर क्षेम ॥ २४ ॥ धन्य विजयघोष मुनि, जयघोष वली जाण; श्री गर्गाचार्य, पहोत्या छे निर्वाण ॥ २५ ॥ श्री उत्तराध्यय-नमां, जिनवरे कर्यां वखाण; शुद्ध मनसें ध्यावो, मनमें धिरज आण ॥ २६ ॥ वली

खंधक सन्यासी, राख्यो गौतम स्नेह; महा-
वीर समीपे, पंच महाव्रत लेह ॥ २७ ॥
तप कठीण करीने, झोंशी आपणी देह;
गया अच्युत देवलोके, चवी लेशे भव छेह
॥ २८ ॥ वली ऋषभदत्त मुनि, शेठ सुद-
र्शन सार; शिवराज ऋषीश्वर, धन्य गांगेय
अणगार ॥ २९ ॥ शुद्ध संयम पाली, पाम्या
केवल सार; ए चारे मुनीवर, पहोत्या मोक्ष
मोझार ॥ ३० ॥ भगवंतनी माता, धन्य धन्य
सती देवानंदा; वली सती जयंति, छोडी
दिया घरफंदा ॥ ३१ ॥ सती मुक्ति पहों-
त्यां, वली ते वीरनी नंद; महा सती सुद-
र्शना, घणी सतियोना वृंद ॥ ३२ ॥ वली
कार्तिक शेठे, पडिमा वही शुरवीर; जम्यो
महोरा उपर, तापस बळती खीर ॥ ३३ ॥

पछी चारित्र लीधुं, मंत्री एक सहस्र आठ धीर; मरी हुआ शक्रेंद्र, चवी लेशे भव तीर ॥ ३४ ॥ वली राय उदायन, दियो भाणेजने राज; पछी चारित्र लइने, सार्यां आतम काज ॥ ३५ ॥ गंगदत्तमुनि आणंद, तरणतारण जीहाज; कुशल मुनि रोहो, दियो घणाने साज ॥ ३६ ॥ धन्य सुनक्षत्र मुनिवर, सर्वानुभुति • अणगार; आराधिक हुइने, गया देवलोक मोझार ॥ ३७ ॥ चविमुक्ति जाशे, वलि सिंह मुनिश्वर सार; बीजा पण मुनिवर, भगवतीमां अधिकार ॥ ॥३८॥ श्रेणिकना बेटा, महोटा मुनिवर मेघ; तजी आठ अंतेउरी, आण्यो मन संवेग ॥ ॥ ३९ ॥ विरपें व्रत लेइने, बांधी तपनी तेग; गया विजय विमाने, चवि लेशे शिव वेग ॥

४० ॥ धन्य थावर्चा पुत्र, तजी बत्रिसे नार;
तेनी साथे निकल्या. पुरुष एक हजार ॥४१॥
सुकदेव सन्याशी, एक सहस्त्र शिष्य लार;
पंचशयशुं सेलक, लिधो संयमभार ॥ ४२ ॥
सर्व सहस्र अढाइ, घणा जीवोने तार; पुंडर-
गिरि उपर, कियो पादोपगमन संथार
॥ ४३ ॥ आराधिक हुइने, किधो खेवो
पार; हुवा महोटा मुनिवर,नाम लिया निस्तार
॥४४॥ धन्य जिनपाल मुनिवर, दोय धनावा
साध; गया प्रथम देवलोके, मोक्ष जाशे
जाराध ॥ ४५ ॥ श्री मल्लिनाथना छ मीत्र,
महाबळ प्रमुख मुनिराय; सर्वे मुक्ति सिधा-
व्या, महोटी पदवी पाय ॥ ४६ ॥ वाळि जि-
तसत्रुराजा, सुबुद्धि नामे प्रधान; पोते चा-
रित्र लेइने, पाम्या मोक्ष निधान ॥ ४७ ॥

धन्य तेतालि मुनिवर, दियो छकाय अभेदा-
न; पोटिला प्रतिबोध्या, पाम्या केवलज्ञान
॥ ४८ ॥ धन्य पांचे पांडव, तजी द्रौपदी
नार; स्थिवरनी पासे, लिधो संयम भार ॥
४९ ॥ श्री नेमिवंदननो, एहवो अभीग्रह की-
ध; मास मासखमण तप, शेत्रुंजय जई सिद्ध
॥५०॥ धर्मघोष तणा शिष्य, धर्मरुचि अण-
गार; किडियोनी करुणा, आणि दया रस
सार ॥ ५१ ॥ कडुवा तुंबानो किधो सघळो
अहार; सर्वार्थसिद्ध पहोत्या, चावि लेशे भव-
पार ॥ ५२ ॥ वली पुंडरिक राजा, कुंड-
रीक डगियो जाण; पोते चारित्र लेइने,
न घाली धर्ममां हाण ॥ ५३ ॥ सर्वार्थसीद्ध
पहोंत्या, चावि लेशे निर्वाण; श्री ज्ञातासू-
त्रमां, जिनवरे कर्या वखाण ॥ ५४ ॥ गौत-

मादिक कुमर, सगा अढारे भ्रात; सर्व अं-
धक विष्णु सुत, धारणी ज्यारी मात ॥
५५ ॥ तजी आठ अंतेउरी, काढी दिक्षानी
वात; चारित्र लेइने, कीधो मुक्तिनो साथ
॥ ५६ ॥ श्री अनेक सेनादिक, छये सहोदर
भाय; वसुदेवना नंदन, देवकी ज्यारी माय
॥ ५७ ॥ भद्दीलपुर नगरी, नाग गाहावइ
जाण; सुलसा घेर वाधिया, सांभली नेमिनी
वाण ॥ ५८ ॥ तजी बत्रीश बत्रीश अंतेउरी,
निकलीया छटकाय; नल कुबेर समाणा,
भेटया श्री नेमिना पाय ॥ ५९ ॥ करी छठ
छठ पारणां, मनमें वैराग्य लाय; एक मास
संथारे मुक्ति विराज्या जाय ॥ ६० ॥ वली
दारुक सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय; वली
कुपर अनादृष्टि, गया मुक्तिगढ मांय ॥६१॥

वसुदेवना नंदन, धन्य धन्य गजसुकुमाल;
रुपे अति सुंदर, कळावंत वय बाळ ॥ ६२ ॥
श्री नेमि समीपे, छोडया मोह जंजाल; भी-
क्षुनी पडिमा, गया मशाण महाकाल ॥
॥६३॥ देखी सोमील कोप्यो, मस्तके बांधी
पाल; खेरना खीरा, शीर ठविया असराल
॥ ६४ ॥ मुनि नजर न खंडी, मेटी मननी
झाळ॥ परीसह सहीने, मूक्ति गया ततकाल ॥
॥६५॥ धन्य जाली मयाली, उवयालादिक
साध; संबने प्रद्युम्न, अनीरुद्ध साधु अगाध
॥६६॥ वली सचनेमी दृढनेमि, करणी कीधी
बाद; दशे मुनि मुगते पहोंच्या, जिनवर वचन
आराध ॥६७॥ धन्य अर्जुनमाली, कर्यो क
दाग्रह दूर; वीरपे व्रत लेइने, सत्यवादी हुवा
शुर ॥६८॥ करी छठ छठ पारण, क्षमा क-

री भरपूर, छ मास मांही, कर्म कियां चकचुर ॥ ६९ ॥ कुमर अइमुत्ते, दीठा गौतम स्वाम; सुणी वीरनी वाणी, कीधो उत्तम काम ॥ ७० ॥ चारित्र लइने, पहोंत्या शिवपुर ठाम; धुर आदि मकाइ, अंत अलक्ष मुनि नाम ॥ ७१ ॥ वळी कृष्णरायनी, अग्रमहीषी आठ; पुत्र वहु दोये, संच्या पुण्यना ठाठ ॥ ७२ ॥ यादवकुल सातेयां, टाळी दुःख उचाट, पहोंत्या शिवपुरमें, ए छे सूत्रनो पाठ ॥ ७३ ॥ श्रेणिकनी राणी, काळियादिक दश जाण; दशे पुत्र वियोगे, सांभळी वीरनी वाण ॥ ७४ ॥ चंदनबाळापे, संजम लेइ हुवा जाण; तप करी देह झोशी, पहोंत्या छे निर्वाण ॥ ७५ ॥ नंदादिक तेरे, श्रेणिक नृपनी नार; सघळी चंदनबाळापे, लीधो

संजम भार ॥ ७६ ॥ एक मास संथारे, पहो-
त्या मुक्ति मोझार; ए नेवुं जणानो, अंत-
गडमां अधिकार ॥ ७७ ॥ श्रेणिकना बेटा,
जालियादिक तेवीस; विरपे व्रत लेइने, पा-
ल्यो विश्वावीश ॥ ७८ ॥ तप कठीन करीने,
पूरी मन जगीश; देवलोके पहोत्या, मोक्ष
जाशे तजी रीस ॥ ७९ ॥ काकंदिनो धन्नो,
तजी बत्रीसे नार; महावीर समीपे, लीधो
संजम भार ॥ ८० ॥ करी छठ छठ पारणां,
आयंबिल उछीत्त अहार; श्री वीरे वखा-
ण्या, धन्य धन्नो अणगार ॥ ८१ ॥ एक मास
संथारे, सर्वार्थसिद्ध पहोंत; महाविदेह क्षे-
त्रमां करशे भवनो अंत ॥ ८२ ॥ धन्नानी रीते,
हुवा नवे संत; श्री अनुत्तरोववाइमां, भांखी
ग[illegible] भगवंत ॥ ८३ ॥ सुबाहु प्रमुख, पांच

पांचसें नार; तजी वीरपें लीधां; पंच महाव्रत सार ॥ ८४ ॥ चारित्र लेइने, पाल्यो निरतिचार, देवलोके पहोंत्या, सुखविपाके अधिकार ॥ ८५ ॥ श्रेणिकना पौत्रा, पौमादिक हुवा दस; वीरपें व्रत लइने, काढयो देहनो कस ॥८६॥ संयम आराधी, देवलोकमां जइ वश; महाविदेह क्षेत्रमां मोक्ष जाशे लेइ जश ॥ ८७ ॥ बलभद्रना नंदन, निषधादिक हुवा बार; तजी पचाश अंतेउरी, त्याग दियो संसार ॥ ८८ ॥ सहु नेमि समिपे, चार महाव्रत लीध; सर्वार्थसिद्धि पहोंत्या, होशे विदेहे सिद्ध ॥ ८९ ॥ धन्नो ने शालिभद्र, मुनिश्वरोनी जोड, नारीनां बंधन, ततक्षण नाख्यां तोड ॥ ९० ॥ घर कुटुंब कबीलो, धन कंचननी क्रोड, मास मासखमण तप, टाळशे

भवनी खोड ॥ ९१ ॥ श्री सुधर्मस्वामीना शि-
ष्य, धन्य धन्य जंबुस्वाम; तजी आठ अंते
उरी, मातपिता धन धाम ॥ ९२ ॥ प्रभवा-
दिक तारी, पहोंत्या शिवपुर ठाम; सूत्र प्र-
वर्तावी, जगमां राख्युं नाम ॥ ९३ ॥ धन्य
ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना नंद; शुद्ध अभि-
ग्रह पाळि, टाली दीयां भव फंद ॥९४॥ वली
खंधक ऋषिनी, देह उतारी खाळ, परीसह
सहीने, भव फेरा दिया टाल ॥ ९५ ॥ व-
ली खंधक ऋषिना, हुवा पांचसें शिष्य,
घाणीमां पिल्या, मुक्ति गया तजी रीस ॥९६॥
संभुतिविजय शिष्य, भद्रबाहु मुनीराय;
चउद पुरवधारी, चंद्रगुप्त आण्यो ठाय
॥ ९७ ॥ वली आर्द्रकुमार मुनि, स्थूलीभद्र
नंदिषेण, अरणिक अइमुत्तो, मुनिश्वरोनी

श्रेण ॥ ९८ ॥ चोवीसें जिनना मुनिवर, संख्या अठावीस लाख; उपर सहस्र अडतालीस, सूत्र परंपरा भांख ॥ ९९ ॥ कोइ उत्तम वांचो, मोढे जयणा राख; उघाडे मुख बोल्यां, पाप लागे इम भांख ॥ १०० ॥ धन्य मरुदेवी माता, ध्यायुं निर्मळ ध्यान; गज होदे पायुं, निर्मळ केवलज्ञान ॥ १०१ ॥ धन्य आदेश्वरनी पुत्री, ब्राह्मी सुंदरी दोय; चारित्र लेइने, मुक्ति गयां सिद्ध होय ॥१०२॥ चोवीसे जिननी, वडी शिष्यणी चोवीस; सती मुक्ति पहोंत्यां पूरी मन जगीस ॥१०३॥ चोवीसें जिननी, सर्व साधवी सार, अडतालीस लाख ने आठसें शितेर हजार ॥ १०४ ॥ चेडानी पुत्री, राखी धर्मशुं प्रीत; राजिमती विजया, मृगावती सुवि-

नित ॥ १०५ ॥ पद्मावती मयणरेहा, द्रौपदी दमयंती सीता; इत्यादिक सतियो, गइ जन्मारो जीत ॥ १०६ ॥ चोवीसे जिनना साधु साधवी सार; गया मोक्ष देवलोके, हृदये राखो धार ॥ १०७ ॥ इण अढीद्वीपमां, घरडा तपस्वी बाल; शुद्ध पंच महाव्रत धारी; नमो नमो तिण काल ॥ १०८ ॥ ए जतियो सतियोनां, लीजे नित प्रते नाम; शुद्धे मन ध्यावो, एह तरणनो ठाम ॥ १०९ ॥ ए जतियो सतियोशुं, राखो उज्वल भाव; एम कहे ऋषि जेमलजी, एह ज तरणनो दाव ॥ ११० ॥ संवत अढारने, वरस सातो शिरदार; गढ झालोरमां एह कह्यो अधिकार ॥ १११ ॥ समाप्तम् ॥

॥ अथ वैराग्य उपदेशक दोहा. ॥

दया सुखनी वेलडी, दया सुखनी खाण ॥ अनंत जीव मुग्ते गया, दया तणा फळ जाण ॥ १ ॥ हींसा दुःखनी वेलडी हींसा दुःखनी खाण ॥ अनंत जीव नरके गया, हींसा तणा फळ जाण ॥ २ ॥ चेतोरे भवी प्राणीया, ए संसार असार ॥ स्थीरता कोइ दीसे नहीं, धन जोबन परीवार ॥ ३ ॥ धर्म करो तमे प्राणीया; धर्म थकी सुख होय ॥ धर्म करंता जीवने, दुःखीया न दीठा कोय ॥४॥ जीव दया पाळी सहीं, पाळी छे छ काय ॥ वंस्ता घरनो प्राहुणो, मीठां भोजन खाय ॥ ५ ॥ जीव दया पाळी नहीं, पाळी नहीं छ काय ॥ सूना घरनो प्राहुणो, जेम आव्यो

तेम जाय ॥ ६ ॥ रत्न पडयुं छे बजारमां, रह्यो गरद लपटाय ॥ मुरख जाणे कांकरो, चतुरे लीयो उठाय ॥ ७ ॥ चौटा केरे बजारमें, लांबा पान खजुर ॥ चडे तो चाखे प्रेमरस, पडे तो चकना चुर ॥ ८ ॥ ए शीखामण साची कही, सर्वने हीतकार ॥ कांइक दया करुणा राखजो, तमे सांभळ्यानुं परीमाण ॥ ९ ॥ खरो मारग वीतरागनो, सुक्ष्म जेना भेद ॥ शाणा थइने सरदजो; मनमां राखो उमेद ॥ १० ॥ डगाव्या डगजो मती, निश्चय राखजो मन ॥ हींसाथी रहेजो वेगळा, कहेवाशो धन धन ॥ ११ ॥ ढील न कीजे धर्मनी, तप जप लीजे लुंट ॥ जेशी सीसी काचकी, जाय पलकमें फुट ॥ १२ ॥ दुक्ष्म आरो पंचमो, निश्चळ राखजो मन ॥

थोडामां नफो घणो, जेम कुंडा मांही रतन ॥ १३ ॥ साधु चंदन बावना, शीतळ जाको अंग ॥ लेहेर उतारे भुजंगकी, देवे ज्ञानको रंग ॥ १४ ॥ साधु बडे परमारथी, मोटो जीनको मन ॥ भर भर मुष्टी देतहे, धर्म रुपीयो धन ॥ १५ ॥ हळु करमी जीवने, रुचे ए उपदेश ॥ खरो मारग वीतरागनो, जेमां कुड नही लवलेश ॥ १६ ॥

॥ सज्झाय प्रकरण समाप्त ॥



श्री भक्तामर स्तोत्र.

(वसंततिलका वृत्तम्.)

भक्तामरप्रणतमौलिमणि प्रभाणा,
मुद्योतकं दलितपापतमो वितानम् ॥
सम्यक् प्रणम्य जिन पादयुगं युगादा,
वालंबनं भवजले: पततां जनानाम् ॥ १ ॥

यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबोधा
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥
स्तोत्रैर्ज्जगत्रितयचित्तहरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥ २ ॥

बुध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ,
स्तोतुं समुद्यतमतिर्विगतत्रपोऽहम् ॥
बालं विहाय जल संस्थितमिंदुबिंब,
मन्यःक इच्छातिजनः सहसा ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥

वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान्,
कस्ते क्षमःसुरगुरुप्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥
कल्पांतकालपवनोद्धत नक्रचक्रं,
कोवा तरीतुमलमंबुनिधिं भुजाभ्याम् ॥ ४ ॥

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगत शक्तिरपि प्रवृत्तः ॥
प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगी मृगेंद्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्मां ॥
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारुचाम्रकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥
त्वत्सं स्तवेन भवसंतति संनिबद्धं,
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम् ॥
आक्रांतलोकमालि नीलमशेषमाशु,

सूर्यांशुभिन्नमिवशार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥
मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद,
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात् ॥
चेतो हरिष्यतिसतां नलिनीदलेषु,
मुक्ता फलद्युतिमुपैति ननुदाबिंदुः ॥ ८ ॥
आस्तां तव स्तवनमस्त समस्तदोषं,
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानिहंति ॥
दुरे सहस्त्रकिरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥
नात्यद्भूतं भुवनभूषणभूतनाथ,
भूतैर्गुणैर्भुवि भवंतमभिष्टुवंतः ॥
तुल्याभवंति भवतोननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं, यइह नात्मसमंकरोति ॥ १० ॥
दृष्ट्वा भवंतमनिमेष विलोकनीयं,
नान्यत्र तोषमुपयातिजनस्य चक्षुः ॥

पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्धसिंधोः,
क्षारं जलं जलनिधेःरशितुं कइच्छेत् ॥११॥
यैः शांतरागरुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामभूत ॥
तावंतएव खलु तेप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥
वक्त्रं क ते सुरनरोरगनेत्रहारि,
निःशेषनिर्जितजगत्रितयोपमानम् ॥
बिंबं कलंकमलिनं क निशाकरस्य,
यद्वासरे भवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥
संपूर्णमंडल शशांक कलाकलाप,
शुभ्रा गुणास्त्रि भुवनं तव लंघयंति ॥
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं,
कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टम् ॥ १४ ॥
चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांग नाभि,

नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥
कल्पांतकाळमरुता चळिताचळेन,
किं मंदराद्रिशिखरं चळितं कदाचित् ॥ १५ ॥
निर्धूमवर्त्तिरपवर्जिततैळपूरः,
कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥
गम्योन जातु मरुतां चळिताचळानां,
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥१६॥
नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥
नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभावः,
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र ळोके ॥१७॥
नित्योदयं दळितमोहमहांधकारं,
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांति,
विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥

किं शर्वरीषु शशिनाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्मुखेंदुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥
निष्पन्नशालि घनशालिनि जीव लोके,
कार्यं कियज्जलधरैर्जलभार नम्रैः ॥ १९ ॥
ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु ॥
तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्वं,
नैवंतु काचशकले किरणाकुलेपि ॥ २० ॥
मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन्मनोहराति नाथ भवांतरेपि ॥ २१ ॥
स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता ॥
सर्वादिशो दधति भानि सहस्ररश्मि,

प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,
मादित्यवर्णममलं तमसः पुरस्तात् ॥
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं,
नान्यः शिवःशिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥२३॥

त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर मनंतमनंगकेतुम् ॥
योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानंस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रयशंकरत्वात् ॥
धातासिधीर शिवमार्ग विधेर्विधानात्,
व्यक्तंत्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥२५॥

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहरायनाथ,
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ॥

तुभ्यं नम स्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिनभवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥
को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै,
स्त्वंसंश्रिता निरवकाशतया मुनीश ॥
दोषैरुपात्तविविधाश्रय जातगर्वैः
स्वप्नांतरेपिन कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥
उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख,
माभाति रूपममलं भवतोनितांतम् ॥
स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमोवितानं,
बिंब रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्ति ॥ २८ ॥
सिंहासने मणिमयुखशिखाविचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम् ॥
बिंबं वियद्विलसदंशुलतावितानं,
तुंगोदयाद्रिशिरसीवसहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥
कुंदावदात चलचामरचारुशोभं,

विभ्राजते तव वपुः कलधौतकांतम् ॥
उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार,
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शांतकौभम् ॥ ३० ॥
छत्र त्रयं तव विभाति शशांककांत,
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकरमतापम् ॥
मुक्ताफलमकरजालविवृद्ध शोभं,
प्रख्यापयंत्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥
गंभीरताररवपुरितदिग्विभाग,
त्रैलोक्यलोकशुभसंगमभूतिदक्षः ॥
सद्धर्मराजजयघोषणघोषकःसन्,
खे दुंदुभिर्ध्वनति ते यशसः मवादी ॥ ३२ ॥
मंदारसुंदर नमेरुसुपारिजात,
संतानकादिकुसुमोत्करवृष्टिरुद्धा ॥
गंधोदबिंदुशुभमंदमरुत्मपाता,
दिव्या दिवःपतति ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥

शुंभत्प्रभावलयभुरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रयद्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती ॥
प्रोद्यत् दिवाकरनिरंतरभुरिसंख्या,
दीप्त्याजयंत्यपि निशामपि सोमसौम्याम् ।३४।
स्वर्गापवर्गगममार्गविमार्गणेष्ट,
सद्धर्मतत्वकथनैकपटुस्त्रिलोक्यां ॥
दिव्यध्वनिर्भवति ते विशदार्थसर्व,
भाषास्वभावपरिणामगुणैःप्रयोज्यः ॥ ३५ ॥

उन्निद्रहेमनवपंकजपुंजकांति,
पर्युल्लसन्नखमयूख शिखाभिरामौ ॥
पदौ पदानि तव यत्र जिनेंद्र धत्तः;
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३६ ॥

इत्थं यथा तव विभुतिरभुज्जीनेंद्र,
धर्मोपदेशनविधौन तथा परस्य ॥
याहक्प्रभा दिनकृतः प्रहतांधकारा,

तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोऽपि ॥ ३७ ॥

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल,

मत्त भ्रमद् भ्रमर नादविवृद्धकोपम् ॥

ऐरावताभमिभमुद्धतमापतंतं,

दृष्ट्वाभयं भवतिनो भवदाश्रितानाम् ॥ ३८ ॥

भिन्नेभकुंभगलदुज्वल शोणिताक्त,

मुक्ताफलप्रकर भूषित भूमिभागः ॥

बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि,

नाक्रामति क्रमयुगा चलसंश्रितं ते ॥ ३९ ॥

कल्पांतकालपवनोद्धतवह्निकल्पं,

दावानलं ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिंगम् ॥

विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतंतं,

त्वन्नामकीर्त्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ४० ॥

रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनील,

क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतंतम् ॥

आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक,
स्त्वन्नामनागदमनीहृदियस्यपुंसः ॥ ४१ ॥
वल्गतुरंगगजगर्जितभीमनाद,
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनां ॥
उद्यादिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्तनात्तमइवाशुभिदामुपैति ॥ ४२ ॥
कुंताग्रभिन्नगजशोणित वारिवाह,
वेगावतारतरणातुरयोधभीमे ॥
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा,
स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लभंते ॥ ४३ ॥
अभोनिधौ क्षुभितभीषणनक्रचक्र,
पांठीनपीठभयदोल्वणवाडवाग्नौ ॥
रंगत्तरंगशिखरस्थितयानपात्रा,
स्त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४४ ॥
उद्भूतभीषणंजलोदर भारभुग्नाः,

शोच्यांदशामुपगताश्चुत जीविताशाः
त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहा,
मर्त्या भवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥ ४५ ॥
आपादकंठ मुरुशृंखलवेष्टितांगा,
गाढं बृहन्निगडकोटि निघृष्टजंघाः ॥
त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरंतः
सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४६ ॥
मत्त द्विपेंद्रमृगराज दवानलाहि,
संग्राम वारिधिमहोदरबंधनोत्थम् ॥
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४७ ॥
स्तोत्रस्रजं तव जिनेंद्र गुणै र्निबद्धां,
भक्त्या मयारुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥
धत्ते जनो य इह कंठगतामजस्रं,
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४८ ॥

॥श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथस्तोत्र॥

(शार्दूलछंद.)

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं
चन्द्ररोचिर्मयं । किं लावण्यमयं
महामणिमयं कारुण्यकेलिमयम् ॥
विश्वानन्दमयं महोदयमयं शोभा-
मयं चिन्मयं । शुक्लध्यानमयं वपु-
र्जिनपतेर्भूयाद्भवालम्बनम् ॥ १ ॥

भावार्थः—श्री जीनेंद्र भगवाननुं शरीर अहा ! कपुर जेवुं श्वेत, अमृत जेवुं मीष्ट, चंद्रनी कान्ति जेवुं शीतळ अने प्रकाशीत, सुंदर मोटा मणी जेवुं तेजस्वी, कारुण्यतानी भूमीकारूप, समग्र विश्वने आनंदमय, महा उदय-

वाळुं, शोभावाळुं, सचीत स्वरुप, शुक्ल ध्यानमां निमग्न, एवा श्री जिनेन्द्र भगवान संसारना आधार रुप हो. ॥ १ ॥

पातालं कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन्। दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणिंच विस्मापयन् ब्रह्माण्डं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लोलयन्। श्रीचिन्तामणि पार्श्वसंभवयशोहंसश्चिरं राजते ॥२॥

भावार्थः—पाताळमां पण प्रवेश करी रहेलो, पृथ्वीने उज्वळ करतो, आकाशमां सर्व स्थळे व्याप्त थतो, दिशाओना चक्रने पण उल्लंघी जतो, देव दानवोने विस्मय पमाडतो, त्रणे जगतने सुख आपतो, समुद्रमां श्वेत फी-

णथी शोभायमान जळने डहोळी नांखतो; एवो श्री पार्श्वनाथ चिंतामणीनो यशरुपी हंस चीरंकाळ शोभे छे. ॥ २ ॥

पुण्यानां विपणिस्तमोदिनमणिः कामेभकुम्भे सृणि मोंक्षे निस्सरणिः सुरेन्द्रकरिणी ज्योतिः प्रकाशारणिः ॥ दाने देवमणिर्नतोत्तमजनश्रेणिः कृपासारिणी । विश्वानन्दसुधाघृणि र्भवभिदे श्रीपार्श्वचिन्तामणिः ॥३॥

भावार्थः—पुण्यना हाट (भंडार) रुप, पापरुपी अंधकारमां सूर्यरुप, विषयरुपी हाथीने वश करवामां अंकुशरुप, मोक्षमां गमन करवा मांटे निसरणीरुप, आत्मज्ञान रुप ज्योतीने प्र-

काश आपवामां अरणीना वृक्ष समान, दान देवामां इन्द्र समान, एमनी (श्री पार्श्वनाथनी) आगळ नमन करी रहेली सज्जन पुरुषोनी पंक्तिने कृपानी नदी समान, विश्वमां आनंदरुपी अमृतना तरंग समान श्री पार्श्वचिंतामणी (भगवान) संसारसमुद्रनो नाश करनार आपज छो. ॥ ३ ॥

श्रीचिन्तामणिपार्श्वविश्वजनतासंजीवनस्त्वं मया। दृष्टस्तात ततः श्रियः समभवन्नाशक्रमाचक्रिणम्॥ मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवाञ्छितं। दुर्दैवं दुरितंच दुर्दिनभयं कष्टं प्रणष्टं मम॥ ४॥

भावार्थः—हे तात ! (हे श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ !) आखा विश्वना जीवनरुप, सच्चीदानंद श्री चिंतामणी पार्श्वनाथ ज्यारथी मने आपनां दर्शन थयां छे, त्यारथीज इन्द्र देव तथा चक्रवर्ति पर्यंतनी समृद्धी मने प्राप्त थइ छे. मारा हस्तमांज मुक्तिरुपी देवी क्रीडा करी रही छे, मारी विविध प्रकारनी मननी अभिलाषाओ सिद्ध थइ छे, अने मारुं दुर्दैव, मारुं पाप अने मारुं दुःख तथा मारो दारीद्रतानो भय समूळ नाश पाम्यो छे. ॥ ४ ॥

यस्यप्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जग— जंघालः कलिकालकेलिदलनो मोहान्धविध्वंसकः ॥ नित्योद्योतपदं समस्तकमलाके-

लिगृहं राजते । स श्रीपार्श्वजिनो जनेहितकृते चिन्तामणिः पातु माम् ॥ ५ ॥

भावार्थः—हे अतिशय प्रतापवान् सूर्यरुप, अति उत्कृष्ट जगत्रुपी धामने तथा कळीकाळना महिमाने दहन करनारा, मोहरुपी अंधकारनो नाश करनारा, अने जेनुं समस्त प्रकारनी समृद्धी धारण करनार पद हमेश शोभी रह्युं छे एवा श्री पार्श्वनाथ भगवान जगतना जीवोनुं हीत करनार चिंतामणी मारुं रक्षण करो. ॥५॥

विश्वव्यापितमो हिनस्ति तरणिर्बालोपि कल्पाङ्कुरो । दारिद्राणि गजावलीं हरिशिशुः काष्ठानि बह्नेः

कणः ॥ पीयूषस्य लवोपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो । मूर्त्तिः स्फूर्त्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्त्तुं क्षमा ॥ ६ ॥

भावार्थः—सूर्य बाल्यावस्थामां होवा छतां पण विश्वमां व्यापी रहेला अंधकारनो नाश करे छे, कल्पवृक्षनो एकज अंकुर (फणगो) दारिद्रतानो नाश करवामां समर्थ छे, सिंहनुं एक नानुं बाळकज हाथीओना समूहनो नाश करे छे, अग्निनो एक सूक्ष्म कण काष्टना जथ्थाने भस्मवत् करी नांखे छे, अमृतनुं एकज बिंदु रोगने निर्वंश करे छे; तेज प्रमाणे हे विभो ! मनुष्योनी मतिमां स्फुरणा करनारुं तमारुं शरीर त्रणे जगतनां दुःखो हणवाने माटे समर्थ छे. ॥ ६ ॥

श्रीचिन्तामणिमन्त्रमाँ…तियुतं
ह्रीँकारसाराश्रितं । श्रीमर्हँनमिऊ-
णपाशकलित त्रैलोक्यवश्यावहम् ॥
द्वेधाभूतविषापहं विषहरं श्रेयःप्रभा
वाश्रयं । सोल्लासं वसहाङ्कितं जिन-
फुलिङ्गा—नन्दनं देहिनाम् ॥ ७ ॥

भावार्थः—ॐ शब्दनी आकृतिवाळो ह्रीँ-
कारथी युक्त श्री मर्हँनमिउण ना मंत्रथी बद्ध
थयेलो त्रणे लोकने वश वर्तावनार, विषयरूपी
झेरनो नाश करनार, कल्याणकारक, प्रभाव-
वाळो, व, स, ह, इत्यादि अक्षरोथी युक्त एवा
मनुष्य मात्रने आनंदरूप श्री चिंतामणी नामनो
मंत्र छे. ॥ ७ ॥

ऱ्ह्रीँश्रीँकारवरं नमोक्षरपरं ध्यायन्ति ये योगिनो—हृत्पद्मे विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिन्तामणिसंज्ञकम् ॥ भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे दक्षिणे । पश्चादष्टदलेषुतेशिवपदंद्वित्रैर्भवैर्यान्त्यऽहो.८

भावार्थः—ह्रीँ श्रीँ इत्यादि आकारथी युक्त मंत्रनुं जे योगीओ हृदयकमळमां अधिष्टाता पार्श्वनाथ भगवानना चिंतामणीनी संज्ञावाळो जेनी पूर्वमां नमो मुकेलो छे एवो ह्रीँ श्रीँकारादि उत्तम वर्णयुक्त मंत्रने हृदयकमळमां धारण करीने कपाळने विषे, डाबा हाथने विषे, नाभिमां अने घणे भागे जमणा हाथमां अने त्यार

पछी आठे दळोने विषे ध्यान धरे छे ते त्रे त्रण भव पछी मोक्ष धाममां सिद्धारे छे. ए शुं आश्चर्यजनक नथी ! ॥ ८ ॥

(स्त्रगधरा छंद.)

नो रोगा नैव शोको न कलहकलना नारिमारिप्रचारो—नैवाधिर्नासमाधिर्नच दरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो ॥ नो शाकिन्यो ग्रहा नो न हरिकरिगणा व्यालवैतालजाला—जायन्ते पार्श्वचिन्तामणिनतिवशतः प्राणिनां भक्तिभाजाम् ॥ ए ॥

भावार्थ—जे भक्तिवान प्राणीओ श्री चिंतामणी पार्श्वनाथमां पोतानी वृत्ति जोडे छे,

तेओने रोग, शोक, क्लेश, अशान्ति, भय, पाप दुष्ट दारिद्रपणुं, शत्रुद्वारा उपजती व्याधि, तथा शाकिनी, भूत, पिशाच विगेरे तथा हाथी तथा सिंहना समुहो दुःखरुप थइ शकतां नथी॥९॥

(शार्दूल छंद.)

गीर्वाणद्रुमधेनुकुम्भमणयस्त-
स्याङ्गणे रङ्गिणो--देवा दानवमानवाः
सविनयं तस्मै हितध्यायिनः ॥ ल-
क्ष्मीस्तस्य वशा वशेव गुणीनां ब्रह्मा-
ण्डसंस्थायिनी । श्रीचिन्तामणिपा-
र्श्वनाथमनिशंसंस्तौतियोध्यायते १०

भावार्थः- जे प्राणी श्री चिंतामणी पार्श्व-नाथनी हमेश स्तुति करे छे तथा ध्यान धरेछे,

तेना आंगणामां रागादि आनंद थया ज करे छे. तेने कल्पवृक्ष, कामदुर्धा धेनु पारसमणी इत्यादि अलौकिक पदार्थ प्राप्त थायछे देवदानव अने मनुष्यो सुद्धां विनयथी तेना हितनुं ज चिंतवन कर्या करे छे. गुणवान पुरुषोने आ ब्रह्मांडमां प्राप्त थती समस्त लक्ष्मी तेने वश वर्ते छे. ॥ १० ॥

(मालिनी छंद.)

इति जिनपतिपार्श्वः पार्श्वपार्श्वाख्ययक्षः प्रदलितदुरितौघः प्रीणितप्राणिसार्थः त्रिभुवनजनवांच्छादानचिन्तामणिकः । शिवपदतरुबीजं बोधिबीजं ददातु ॥ ११ ॥

भावार्थः—आ प्रमाणे जीनपति पार्श्वनाथ भगवाननी पासे रहेनारो पार्श्व नामनो यक्ष, जेनां पापकर्मो नष्ट थइ गयां छे, अने ते भगवाने जनसमुदायने संतुष्ट कर्यां छे, अने जे त्रणे भुवननी वांच्छा पुरवामां चिंतामणी समान छे, ते मोक्षपद रुपी वृक्षनुं बीजरुप समकीत मने अर्पण करो !! ॥ ११ ॥

॥ इतिश्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथस्तोत्रं समाप्तम् ॥

॥ स्तोत्र प्रकरण समाप्त ॥



श्री दश वैकालीक सूत्रनुं,

१—२—३—४ अध्ययन.

धम्मो मंगल मुक्कठं, अहिंसा संजमोतवो ॥ दैवावितंनमंसंति, जस्स धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहादुमस्स पुप्फेसु, भमरो आवीयइ रसं ॥ नयपुर्फ किलामेइ, सोयापिणेइ अप्पयं ॥ २ ॥ एमेए समणामुत्ता, जेलोए संतिसाहुणो ॥ विहंग माव पुप्फेसु, दाणभत्तेसणेरया ॥ ३ ॥ वयंच वीत्तिं लभामो, नय कोइ उवहम्मइ ॥ आहागडेसु रीयंते, पुप्फेसुभमराजहा ॥ ४ ॥ महुकार समा बुद्धा, जेभवंति अणिस्सिया ॥ नाणा पिंडरयादंता ॥ तेणवुच्चंति साहुणो ॥ ५ ॥ त्तिबेमि ॥ १ ॥

अध्ययन बीजुं.

कहं नु कुज्जा सामण्णं, जो कामे न निवारए ॥ पए–पए विसीयन्तो, संकप्पस्स वसं गओ ॥ १ ॥ वत्थ–गन्ध–मलंकार, इत्थीओ सयणाणि य ॥ अच्छंदा जे न भुजन्ति, न से " चाइ " त्ति वुच्चई ॥ २ ॥ जेय कन्ते पिए भोए, लद्धे विप्पिट्ठि–कुव्वई ॥ साहीणे चयइ भोए, से हु " चाइ " ती वुच्चई ॥ ३ ॥ समाए पेहाए परिव्वयन्तो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा ॥ न सा महं नो वि अहं पि तीसे, इच्चेव ताओ विणएज्ज रागं ॥ ४ ॥ आयावयाही ! चय सोगमल्लं !, कामे कमाही ! कमियं खु-दुःखं; ॥ छिन्दाहि दोसं ! विणएज्ज रागं ! ॥ एवं सुही होहिसि सम्पराए ॥ ५ ॥ प-

खन्दे जलियं जोइ, धुम–केउं दुरासयं ॥ नेच्छन्ति वन्तयं भुत्तं, कुले जाया अगन्धणे ॥ ६ ॥ धिरत्थु ते जसो–कामी, जो तं जीविय–कारणा ॥ वन्तं इच्छासि आवेउं ! सेयं ते मरणं भवे ॥ ७ ॥ अहं च भोग–रायस्स, तं च सि अन्धग वण्हिणो ॥ मा कुले गन्धणा होमो, संजमं निहुओ चरं ॥ ८ ॥ जइ तं काहिसि भावं, जा–जा दीच्छसि नारिओ ॥ वायाविद्धो व्व हडो, अट्ठियप्पा भविस्ससि ॥ ९ ॥ तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाए सुभासियं ॥ अंकुसेण जहा नागो, धम्मे सम्पडिवाइओ ॥ १० ॥ एवं करंन्ति सम्बुद्धा, पण्डिया पवियक्खणा ॥ विणियट्टन्ति भोगेसु, जहा से पुरिशुत्तमो ॥ ११ ॥ त्ति बेमि ॥ २ ॥

अध्ययन त्रीजुं.

संजमे सुहियप्पाणं, वीप्पमुक्काण ताइणं ॥ ते सिमेयमणाइण्णं, निग्गन्थाणं महेसिणं ॥ १ ॥ उद्देसियं १ कीयगडं २ नियागं ३ अभिहडाणिय ४ ॥ राइ-भत्ते ५ सिणाणेय ६ गन्ध ७ मल्ले ८ य वीयणे ९ ॥ २ ॥ सन्निही गिहि-मत्ते य, रायपिण्डे किमिच्छए ॥ सम्बाहण दन्त-पहोयणा य, सम्पुच्छण देह-पलोयणा य ॥ ३ ॥ अट्ठावए य नाली ये छतस्स य धारणट्ठाए ॥ ते गिच्छं पाहणा पाए, समारम्भं च जोइणो ॥ ४ ॥ सेज्जायर पिण्डं च, आसन्दी पलियंकए ॥ गिहन्तर निसेज्जा ये, गाहस्सूव्वट्टणाणि य ॥ ५ ॥ गिहिणो वेयावडियं, जाइ आजीव-वत्तिया ॥ तत्तानिव्वुड-भोइत्तं, आउर-स्सरणाणि य ॥ ६ ॥ मुलए सिंगबेरे य, उच्छु-खण्डे अ-

निव्वूडे ॥ कन्दे मुल य सच्चित्ते, फले बीए य आमए ॥ ७ ॥ सोवच्चले सिन्धवे लोणे रोमा लोणं य आमए ॥ सामुद्दे पंसु-खारे य, काला-लोणे य आमए ॥ ८ ॥ धुवणे त्ति·

वमणे य, वत्थी—कम्म विरेयणे ॥ अंज्जणे दन्तवणे य, गायाभंग—विभूसणे ॥ ९ ॥ स·व्वमेयमणाइण्णं, निग्गन्थाणं महेसिणं ॥ सं·जमम्मि य जुत्ताणं, लहुभूय विहारिणं ॥ १० ॥ पंचासव परिन्नाया, ति गुत्ता छसु संजया, पंच-निग्गहणा धीरा, निग्गन्था उज्जु दंसिणो ॥ ११ ॥ आयावयन्ति गिम्हेसु, हेमंतेसु अ-वाउडा ॥ वासासु पडिसंलीणा, संजया सु-समाहिया ॥ १२ ॥ परिसह-रिऊ दन्ता, धुय मोहा जिइन्दिया ॥ सव्व—दुक्ख पहीणट्ठा, पक्कमन्ति महेसिणो ॥ १३ ॥ दुक्कराइं करि·

त्ता णं, दुस्सहाइं सहेत्तु य ॥ के इत्थ देव-
लोगेसु, केइ सिझ्झन्ति नीरया ॥ १४ ॥ ख-
वित्ता पुव्व-कम्माइं, संजमेण तवेण य ॥ सि-
द्धि-मग्गमणुप्पत्ता, ताइणो परिनिव्वुडे ॥१५॥
त्तिबेमि ॥ ३ ॥

अध्ययन चोथुं.

सुयं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं। इह खलु छज्जीवणिया नामझ्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नता ॥ सेयं मे अहिज्जिउं अझ्झयणं धम्म-पन्नत्ती ॥ कयरा खलु सा छज्जीवणिया नाम-झ्झयणं समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया सुयक्खाया सुपन्नत्ता॥सेयं मे अहिज्जिउं अझ्झयणं धम्मपन्नत्ती ? ॥

इमा खलु सा छज्जीवणिया नामज्झयणं, तंजहा । पुढविकाइया १ आउकाइया २ तेउकाइया ३ वाउकाइया ४ वणस्सइकाइया ५ तसकाइया ६ पुढवि चित्तमन्तखाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता अन्नत्थ सत्थपरिणएणं, आउ चित्तमन्तखाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं, तेउ चित्तमन्तखाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं, वाउ चित्तमन्तखाया अणेग-जीवा पुढो-सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं, वणस्सइ चित्तमन्तखाया अणेग-जीवापुढो-सत्ता अन्नत्थ-सत्थ-परिणएणं, तंजहा । अग्ग-बीया मूलबीया पोरबीया खन्धबीया बीयरुहा सम्मुच्छिमा, तण-लया वणस्सइ-काइया स-बीया चित्तमन्तखाया अणेगजीवा पुढो-सत्ता अन्नत्थ

सत्यपरिणएणं ॥

से जे पुण इमे अणेगे बहवे तसा पाणा तं जहा । अण्डया पोयया जराउया रसया संसेइमा सम्मुच्छिमा उब्भिया ओववाइया जेसिं केसिंचि पाणाणं अभिक्कन्तं पडिक्कन्तं संकुचियं पसारियं रुयं भन्तं तासियं पलाइयं आगइ–गइ–विन्नाया.

जे य कीड–पयङ्गा जा य कुन्थु–पिपीलिया सव्वे बेन्दिया सव्वे तेइन्दिया सव्वे चउरिन्दिया सव्वे पञ्चिन्दिया सव्वे तिरिक्ख–जोणिया सव्वे नेरइया सव्वे मणुया सव्वे देवा सव्वे पाणा परमाहम्मिया ॥

एसो खलु छट्ठो जीव–निकाओ “ तस-काओ ” त्ति पवुच्चई ॥

इच्चेसिं छण्हं जीवनिकायाणं नेव सयं

दण्डं समारम्भेज्जा, नेवन्नेहिं दण्डं समारम्भावेज्जा, दण्डं समारम्भन्ते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा ॥

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

पढमे भन्ते महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं । सव्वं भन्ते पाणाइवायं पच्चक्खामि, से सुहमं वा वायरं वा तस वा थावरं वा नेव सयं पाणे अइवाएज्जा, नेवन्नेहिं पाणे अइवायावेज्जा, पाणे अइवायन्ते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडि-

क्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि; पढमे भन्ते महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं ॥ १ ॥

अहावरे दोच्चे भन्ते महव्वए मुसावायाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते मुसावायं पच्चक्खामि, से कोहा वा लोहा वा भया वा हासा वा नेव सयं मुसं वएज्जा, नेवन्नेहिं मुसं वायावेज्जा, मुसं वयन्ते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा; जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि; दोच्चे भन्ते महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं ॥ २ ॥

अहावरे तच्चे भन्ते महव्वए अदिन्नादा-

णाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते आदिन्नादाणं पच्च-क्खामि, से गामे वा नगरे वा रन्ने वा अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थुलं वा चित्तमन्तं वा अचित्तमन्तं वा नेव सयं अदिन्नं गेण्हेज्जा, नेवन्नेहिं अदिन्नं गेण्हावेज्जा अदिन्नंगेण्हं न्ते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जी-वाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेन्तं पि अन्नं न समणु-जाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि; तच्चे भन्ते मह-व्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ अदिन्नादाणाओ वेरमणं ॥ ३ ॥

अहावरे चउत्थे भन्ते महव्वए मेहुणाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते मेहुणं पच्चक्खामि, से दिव्वं वा माणुसं वा तिरिक्खजोणियं वा नेव सयं मेहुणं सेवेज्जा, नेवन्नेहिं मेहुणं सेवावे-

ज्जा, मेहुणं सेवन्ते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि; चउत्थे भन्ते महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं ॥ ४ ॥

अहावरे पञ्चमे भन्ते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं । सव्वं भन्ते परिग्गहं पच्चक्खामि, से अप्पं वा बहुं वा अणुं वा थूलं वा चित्तमन्तं वा अचित्तमन्तं वा नेव सयं परिग्गहं परिगेण्हेज्जा, नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगेण्हावेज्जा, परिग्गहं परिगेण्हन्ते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि

करेन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि; पञ्चमे भन्ते महव्वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ ५ ॥

अहावरे छट्ठे भन्ते वए राईभोयणाओ वेरमणं। सव्वं भन्ते राईभोयणं पच्चक्खामि, से असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा नेव सयं राइं भुञ्जेज्जा, नेवन्नेहिं राइं भुञ्जावेज्जा, राइं भुञ्जन्ते वि अन्ने न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि; छट्ठे भन्ते वए उवट्ठिओ मि सव्वाओ राईभोयणाओ वेरमणं ॥

इच्चेइयाइं पञ्च महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठयाए उवसम्पज्जित्ताणं विहरामि ॥ ६ ॥

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजय-विरय पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसा-गओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से पुढविं वा भित्तिं वा सिलं वा लेलुं वा ससरक्खं वा कायं ससरक्खं वा वत्थं हत्थेण वा पाएण वा कट्ठेण वा कलिञ्चेण वा अङ्गुलियाए वा सलागाए वा सलाग-हत्थेण वा नालिहेज्जा न विलिहेज्जा न घट्टेज्जा न भिन्देज्जा, अन्नं नालिहावेज्जा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिन्दावेज्जा, अन्नं आलिहन्तं वा विलिहन्तं वा घट्टन्तं वा भिन्दन्तं वा न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं

मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा संजयविरयपडिहयपच्चक्खाय—पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से उदगं वा ओसं वा हिमं वा महियं वा करगं वा हरतणुगं वा सुद्धोदगं वा उदओल्लं वा कायं उदओल्लं वा वत्थं ससिणिद्धं वा कायं ससिणिद्धं वा वत्थं नामुसेज्जा न सम्फुसेज्जा न आवीलेज्जा न पवीलेज्जा न अक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा, अन्नं नामुसावेज्जा न सम्फुसावेज्जा न आवीलावेज्जा न पवीलावे-

ज्जा न अक्खोडावेज्जा न पक्खोडावेज्जा न आयावेज्जा न पयावेज्जा, अन्नं आमुसन्तं वा सम्फुसन्तं वा आवीलन्तं वा पवीलन्तं वा अक्खोडन्तं वा पक्खोडन्तं वा आयावंतं वा पयावेन्तं वा न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ८ ॥

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा संजयविरय पडिहय–पच्चक्खाय–पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से अगणिवा इङ्गालं वा मुमुरं अच्चिं वा जालं वा अलायं वा सुद्धागणिं वा उक्कं वा न उञ्जेज्जा न घटेज्जा [न भिंदेज्जा] न उज्जालेज्जा [न पज्जालेज्जा] न निव्वा-

वेज्जा, अन्नं न उज्जावेज्जा न घट्टावेज्जा [न भिंदावेज्जा] न उज्जालावेज्जा [न पज्जलावेज्जा], न निव्वावेज्जा, अन्नं उज्जन्तं वा घट्टन्तं वा [भिंदंतं वा] उज्जालन्तं वा [पज्जालन्तं वा] निव्वावन्तं वा न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेन्तंपि अन्नं न समणुजाणामी तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ९॥

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा संजय—विरय—पडिहय पच्चक्खाय—पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से सिएण वा विहुयणेण तालि यण्टेण वा पत्तेण वा पत्त—भङ्गेण वा साहाए वा साहाभङ्गेण वा पिहुणेण वा पिहुण

हत्थेण वा चेलेण वा चेल-कण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा अप्पणो वा कायं बाहिरं वा वि पोग्गलं न फुमेज्जा न वीएज्जा, अन्नं न फुमावेज्जा न वीयावेज्जा, अन्नं फुमन्तं वा वीयन्तं वा न समणु जाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करेन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि तस्स भन्ते पडिक्कमामि निन्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १० ॥

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्खाय-पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसा-गओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से बीएसु वा बीय-पइट्ठेसु वा रूढेसु वा रूढ-पइट्ठेसु वा जाएसु वा जाय-पइट्ठेसु वा हरिएसु वा हरिय-पइट्ठेसु वा छिन्ने

सु वा छिन्न—पइट्ठसु वा सच्चित्ते सु वा सच्चि-त्त—कोल पडिनिस्सिएसु वा न गच्छेज्जा न चिट्ठेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा, अन्नं न गच्छावेजा न चिठावेजा न निसीयावेज्जा न तुयट्टावेज्जा, अन्नं गच्छन्तं वा चिट्ठन्तं वा नि-सीयन्तं वा तुयट्टन्तं वा न समणुजाणेज्जा, जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं वायाए काएणं न करेमि नकारवेमि करेन्तं पि अन्नं न समणुजाणामि, तस्स भन्ते पडिक्कमामि नि-न्दामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ ११ ॥

से भिक्खू वा भिक्खूणी वा संजय—वि-रय—पडिहेय पच्चक्खाय—पावकम्मे दिया वा राओ वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा, से कीडं वा पयङ्गं वा कुन्थुं वा पिपीलीय वा हत्थसि वा पायंसि वा बा-

हुंसि वा ऊरुंसि वा उदरंसि वा सीसंसि वा वत्थंसि वा [पडिग्गहंसि वा कम्बलंसि वा पायपुञ्छणंसि वा] रय हरणंसि वा गोच्छगंसि वा उण्डुयंसि वा दण्डगांसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारगांसि वा अन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए तओ संजयामेव पडिलेहिय पडिलेहिय पमज्जिय पमज्जिय गन्तमवणेज्जा,नो णं संघायमावज्जेज्जा। १२

अजयं चरमाणा उ पाण–भूयाइ हिंसई। बन्धई पावयं कम्मं, तं से होई कडुयं फलं ॥ १ ॥ अजयं चिट्ठमाणो उ पाण–भूयाइ हिंसई। बन्धई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ अजयं आसमाणो, उ पाण–भूयाइ हिंसई। बन्धइ पावय कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ३ ॥ अजयं सयमाणो उ पाण–भूयाइ हिंसई

। बन्धई पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४ ॥ अजयं भुञ्जमाणो उ पाण–भूयाइ हिंसई । बन्धइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ५ ॥ अजयं भासमाणो उ पाण–भूयाइ हिंसई । बन्धई पावयं कम्मं, तं से होई कडुयं फलं ॥ ६ ॥ कहं चरे ? कहं चिठे ? कहं आसे ? कहं सए ? । कहं भुञ्जन्तो भासन्तो, पावं कम्मं न बन्धइ ? ॥ ७ ॥ जयं चरे, जयं चिठे, जयं आसे, जयं सए । जयं भुञ्जन्तो भासन्तो पावं कम्मं न बन्धई ॥ ८ ॥ सव्व–भूयप्प–भूयस्स सम्मं भूयाइ पासओ ॥पिहिया सव्वस दन्तस्स पावं कम्मं न बन्धई९ पढमं नाणं तओ दया, एवं चिठइ सव्व–संजए । अन्नाणी किं काही किं वा नाहिइ छेयं पावगं ? ॥ १० ॥ सोच्चा जाणइ कल्लाणं सो-

ज्झा जाणई पावगं । उभयं पि जाणइ सोच्चा
जं सेयं तं समायरे ॥ ११ ॥ जो जीवे वि न
याणाइ अजीवे वि न याणइ । जीवाजीवे अ-
याणन्तो कहं सो नाही उ संजमं ? ॥ १२ ॥
जो जीवे वि वियाणाइ अजीवे वि वियाणइ ।
जीवाजीवे वियाणन्तो सो हु नाही उ संजमं
॥ १३ ॥ जया जीवमजीवे य दो वि एए
वियाणई । तया गइं बहुविहं सव्व—जीवाण
जाणई ॥ १४ ॥ जया गई बहुविहं सव्व—जी-
वाण जाणई । तया पुण्णं च पावं च बन्धं
मोक्खं च जाणइ ॥ १५ ॥ जया पुण्णं च
पावं च बन्धं मोक्खं च जाणई । तया निव्वि-
न्दए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ॥ १६ ॥
जया निव्विन्दए भोए जे दिव्वे जे य माणुसे ।
तया चयइ सम्भोगं सब्भिन्तर—बाहिरं ॥१७॥

जया चयइ सम्भोगं सब्भिन्तर–बाहिरं। तया मुण्डे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं ॥ १८ ॥ जया मुण्डे भवित्ताणं पव्वइए अणगारियं। तया संवरमुक्कठं धम्मं फासे अणुत्तरं ॥ १९॥ जया संवरमुक्कट्ठं धम्मं फासे अणुत्तरं। तया धुणइ कम्म-रयं अबोहि–कलुसं कडं ॥ २० ॥ जया धुणइ कम्म–रयं अबोहि–कलुसं कडं। तया सव्वत्त–गं नाणं दंसणं चाभिगच्छई ॥ २१ ॥ जया सव्वत्त–गं नाणं दंसणं चाभि-गच्छई। तया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली ॥ २२ ॥ जया लोगमलोगं च जिणो जाणइ केवली। तया जोगे निरुम्भित्ता सेलेसिं पडिवज्जाई ॥ २३ ॥ जया जोगे निरुम्भिता सेलेसिं पडिवज्जई। तया कम्मं खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरओ ॥ २४ ॥ जया कम्मं

खवित्ताणं सिद्धिं गच्छइ नीरउ । तया लोग
मत्थय-त्थो सिद्धो भवइ सासउ ॥ २५ ॥
सुह-सायगस्स समणस्स सायाउलगस्स नि-
गामसाइस्स । उच्छोलणा-पहोइस्स दुलहा
सोग्गइ तारिसगस्स ॥ २६ ॥ तवो-गुण-
पहाणस्स उज्जुमइ खन्ति-संजम-रयस्स ।
परीसहे जिणन्तस्स सुलहा सोग्गइ तारिसगस्स
॥ २७ ॥ (पच्छा वि ते पयाया खिप्पं
गच्छन्ति अमर-भवणाइं । जेसिं पो उ तवो
संजमो य खन्ती य बम्भचेरं च ॥) इच्चेयं
छ-ज्जीव-णियं सम्मादिट्ठी सया जए । दुलहं
लभित्तु सामण्णं कम्मुणा न विराहेज्जासि
त्ति बेमि ॥ २८ ॥४॥

श्री उत्तराध्ययन सूत्रनुं ३-४

अध्ययन.

चत्तारि परमंगाणि, दुल्लहाणीह जंतुणो ॥ माणुसत्तं सुई सद्धा, संजसंमि य वीरियं ॥ १ ॥ समावन्नाण संसारे, नाणा गुत्तासु जाइसु ॥ कम्मा नाणाविहा कट्टु, पुढो विस्संभया पया ॥ २ ॥ एगया देवलोएसु, नरएसुवि एगया ॥ एगया आसुरंकायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ ॥ ३ ॥ एगया खत्तियो होइ, तओ चंडाल बुक्कसो ॥ तओ कीड पयंगो य, तओ कुंथुं पिपीलिया ॥ ४ ॥ एवं–मावट्ट जोणीसु, पाणिणो कम्म किबिसा ॥ न निविज्जंति संसारे, सव्वेठ्ठसुव खत्तिया ॥ ५ ॥ कम्मसंगेहि संमुढा, दुक्खि-

या बहु वेयणा ॥ अमाणुसासु जोणीसु, वि-
णिहम्मंति पाणिणो ॥ ६ ॥ कम्माणं तु
पहाणाए, अणुपुव्वी कयाइओ ॥ जीवा
सोहि-मणुपत्ता, आययंति मणुस्सयं ॥ ७ ॥
मणुस्सं विग्गहं लध्धुं, सुई धम्मस्स दुल्लहा ॥
जं सोच्चा पडिवज्जंति, तवं खंति-महिंसयं
॥ ८ ॥ आहच्च सवणं लद्धुं, सद्धा परम दु-
ल्लहा ॥ सोच्चा नेयाउयं मग्गं, बहवे परिभ-
स्सई ॥ ९ ॥ सुई च लध्धु सध्धं च, वीरियं
पुण दुल्लहं ॥ बहवे रोयमाणावि, नो यणं
पडिवज्जए ॥ १० ॥ माणुसत्तंमि आयाओ,
जो धम्मं सोच्च सद्दहे ॥ तवस्सी वीरियं लध्धुं,
संवुडे निध्धुणे रयं ॥ ११ ॥ सोही उज्जुय-
भूयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्ठई ॥ निव्वाण
परमं जाइ, घयं सित्तेव पावए ॥ १२ ॥

विगिंच कम्मुणो हेउं, जमं सांचिणु खंतिए ॥ पाढवं सरीरं हिच्चा, उड्ढं पक्कमइ दिसं ॥१३॥ विसालसेहिं सीलेहिं, जख्खा उत्तर उत्तरा ॥ महासुक्काव दिप्पंता, मन्नंता अपुणच्चयं ॥ १४ ॥ अप्पिया देव कामाणं, कामरुव विउव्विणो ॥ उड्ढं कप्पेसु चिठ्ठंति, पुव्वा वास सया बहु ॥ १५ ॥ तथ्थ ठिच्चा जहा ठाणं, जख्खा आउख्खए चुया ॥ उवेंति माणूसं जोणिं, से दसंगऽभिजायइ ॥ १६ ॥ खेत्तं वत्थु हिरणं च, पसवो दास पोरुसं ॥ चत्तारि काम खंधाणि, तथ्थ से उववज्जए ॥ ॥ १७ ॥ मित्तवं नाइवं होइ, उच्चागोए य वन्नवं ॥ अप्पायंके महापन्ने, अभीजाये जसो बले ॥ १८ ॥ भुच्चा माणुस्सए भोए, अप्पडिरूवे अहाउयं ॥ पुव्वं विसुद्ध सद्धम्मे, के-

वलं बोहि बुज्झिया ॥ १९ ॥ चउरंगं दुल्लहं नच्चा, संजमं पडिवज्जिया ॥ तवसा धुय कम्मंस, सिद्ध हवइ सासए ॥ २० ॥ त्ति-बेमि ॥ ३ ॥

असंखयं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नत्थि ताणं ॥ एवं वियाणाही जणे पमत्ते ॥ किं नु विहिंसा अजया गीहिंति ॥ १ ॥ जे पावकम्मेहिं धणं मणुस्सा, समाययंती अमयं गहा य ॥ पहाय ते पास पयाठिए नरे, वेराणुबंद्धा नरयं उविंति ॥२॥ ॥ तेणे जहा संधिमुहे गहीए, स कम्मुणा किच्चइ पावकारी ॥ एवं पया पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ॥ ३ ॥ संसार मावन्न परस्स अट्ठा, साहारणं

जं च करेइ कम्म ॥ कम्मस्स ते तस्स उवेयं काले, न बंधवा बंधवयं उविंति ॥ ४ ॥ वि- त्तेण ताणं न लभे पमत्ते, इमंमि लोए अदुवा परत्था ॥ दीवप्पणठेव्व अणंतमोहे, नेयाउयं दट्ठू मदट्ठु मेव ॥ ५ ॥ सुत्ते सुयावि पडि- बुद्धजीवी, न वीससे पंडिय आसुपन्ने ॥ घोरा मुहुत्ता अबलं सरीरं, भारंडपक्खीव्व- चरे ऽप्पमत्तो ॥ ६ ॥ चरे पयाइं परिसंक माणो, जं किंचि पास इह मन्नमाणो ॥ ला- भंतर जीविय बूहइत्ता, पच्छा परिन्नाय म- लावधंसी ॥ ७ ॥ छंदं निरोहेण उवेइ मो- क्खं, आसे जहा सिक्खिय वम्मधारी ॥ पुव्वाइं वासाइं चरे ऽप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्प-मुवेइ मोक्खं ॥ ८ ॥ स पुव्व--मेवं न लभेज्ज पच्छा, एसोवमा सासएवाइयाणं ॥ विसीय ईसिढीले आउयंमि, कालोवणीए

सारिंस्स भेए ॥ ९ ॥ खिप्पं न सक्केइ वि-
वेग-मेउं, तम्हा समुठाय पहाय कामे ॥ स-
म्मीच लोगं समया महेसी, अप्पाण रक्खीव
चरे ऽप्पमत्तो ॥ १० ॥ मुहुं मुहुं मोहगुणे
जयंतं, अणेगरूवा समणं चरंतं ॥ फासा फू-
संति असमंजसं च, न तेसु भिक्खु मणसा
पओसे ॥ ११ ॥ मंदाय फासा बहु लोह-
णिज्जा, तहप्पगारेसु मणं न कुज्जा ॥ रक्खे-
ज्ज कोहं विणएज्ज माणं, मायं न सेवेज्ज प-
हेज लोहं ॥ १२ ॥ जे संखया तुच्छ परप्प-
वाइ, ते पेज्ज दोसाणुगया परज्झा ॥ ए ए
अह-म्मोत्ति दुगंछमाणा, कंखे गुणे जाव
सरिरस्स भेउ ॥ १३ ॥ त्तिबेमि ॥ ४ ॥

श्री महावीर स्तुति.

पुछिंसुणं समणा माहणाय, आगा-

रिणो या परातिथिया य, से केइ णेगंतं हिय धम्म माहु, अणोलिसं साहु समिक्खयाए ॥ १ ॥ कहं च नाणं कहं दंसणं से, सील कहं नायसुयस्स आसी, जाणा सिणं भिक्खु जहातहेणं, अहासुयं बुहि जहाणि संतं ॥ २ ॥ खेयन्ने से कुसले महेसी, अणंतनाणी य अणंत दंसी, जसंस्सिणो चक्खुपहेठियस्स, जाणाहि धम्मं चधिइ चपेहा ॥ ३ ॥ उड्ढं अहेयं तिरियं दिसासु, तसा य जे थावर जेह पाणा सेनिच्चनिच्चेहि सामिक्ख पन्ने, दीवेव धम्मं समियं उदाहु ॥ ४ ॥ से सव्वदंसी अभिभुयनाणी, निराम गंधे धिमं ठियप्पा, अणुत्तरे सव्व जगांसि वीजं, गंथा अतीते अभये अणाउ ॥ ५ ॥ से भुइ पन्नेअणिए अचारी, उहंतरे धीरे अणंत चक्खु,

अणुत्तरे तपइ सूरिए वा, वइरोयणिंदेव तमं-
पभासे ॥ ६ ॥ अणुत्तरं धम्मामिणं जिणाणं,
नेया मुणि कासव आसुपन्ने, इंदेव देवाणं
महाणु भावे, सह स्सणेताद्दिविणं विसिठ ॥
७॥ से पन्नया अखय सागरेवा, महोदहि वावि
अणंत पारे ॥ अणाइलेया अकसाइ भिक्खु,
सक्केवदेवाहिवइ जुइमं ॥ ८ ॥ से वीरिएणं प-
डिपुन्न विरिए, सुदंसणेवा नगसव्व सेठे,
सुरालएवासि मुदागरे से, विराय एणेगं गु-
णोववेए ॥ ९ ॥ सयं सहस्साणउ जोयणाणं,
तिकंडसे पंडग वेजयंते, सेजोयणे नवनवइ
सहसे, उद्धुस्सिए हेठं सहस्स मेगं ॥ १० ॥
पुठे नभे चिठइ भूमि वठिए, जंसूरियो अणु
परियट्टयंति, से हेमवन्ने बहु नंदणे य, जंसी
रइं वेदयंति महिंदा ॥ ११ ॥ से पव्वए सद-
महप्प गासे, विरायइ कंचण मठवन्ने, अणु-

त्तरे गिरिसुय पव्वदुगे, गिरिवरेसे जलिएव्व भोमे ॥ १२ ॥ महीए मझंमि ठिएण गिंदे, पन्नायते सूरिए सुद्ध लेसे, एवं सिरिएऊ स भूरि वन्ने, मणो रमे जोयइ अचि माली ॥ १३ ॥ सुदंसणं स्सेव जसो गिरिस्स, पवुच्चइ महओ पव्वयस्स, एतोवमे समणे नायपुत्ते, जाइ जसो दंसण नाण सीले ॥ १४ ॥ गिरिवरेवा निसहाय याणं, रुयएव सेठे वलयायताणं, तउवमे से जग भूइ पन्ने, मुणीण मझे तमुदाहु पन्ने ॥ १५ ॥ अणुत्तरं धम्म मुइ रइत्ता, अणुत्तरं झाणवरं झियाइं, सुसुक्क सुक्कं अपगंड सुक्कं, सखिंदु वेगं तवदात सुक्कं ॥ १६ ॥ अणुत्तरग्गं परमं महेसी, असेसकम्मं सुवि सोहइत्ता, सिद्धिं गइ साइ मणंत पत्ते, नाणेणं सीलेण य दंसणेणं ॥ १७ ॥

रूखे सुणाए जह साम लीवा, जंसिरइं वेद यंति सुवन्ना, वणे सुत्रा नंदण माहु शेठं, नाणेणं सीलेणं यभूइ पन्ने ॥ १८ ॥ थणिये वसद्दाण अणुत्तरे उ, चंदोवतारण महा- णुभावे, गंधसुवा चंदण माहु शेठं, एवं मुणीणं अपाडिन माहु ॥ १९ ॥ जहा सयंभू- ऊरहीण सेठे, नागे सुवा धरणिंद माहु सेठं ॥ खओद एवा रसवेजयंते, तवोवहाणे मुणि वेजयं ते ॥ २० ॥ हथिसुएरावण माहुणाए, सीहो मियाणं सलिलाणं गंगा, पखि सुवा गेरु लेवेणुं देवे, निव्वाण वादी निहनाय पुत्ते ॥ २१ ॥ जोहे सुणाये जह वीस सेणे, पुप्फेसुवा जह अरविंद माहु, खत्तीण सेठे जह दंत वक्के, इसीणं सेठे तह वद्धमाणे ॥ २२ ॥ दाणाणं सेठं अभय प्पयाणं,

सव्वेसुवा अणवज्जं वयंति, तवेसुवा उत्तम
बंभ चेरं, लोगुत्तमे समणे नायपुत्ते ॥
२३ ॥ ठितिण सेठा लव सत्तमावा, सभा
सुहम्माव सभाण सेठा, निव्वाण सेठा जह
सव्व धम्मा, ननायपुत्ता परमाथि नाणी
॥ २४ ॥ पुढो वपे धुणइ विगइ गेहीं, न-
स्संनिहं कुव्वइआ सुपन्ने, तरितुं समुदं च म-
हाभबोधं, अभयंकरे वीर अणंत चक्खु ॥
२५ ॥ कोहंच माणंच तहेव मायं, लोभं च-
उथं अज्झथ दोसा, ए आणिवंता अरहा महे-
सी, नकुवइपाव नकारवेइ ॥ २६ ॥ किरिया
किरियं वेणइ याणुवायं, अन्ना णियाणं प-
डियच्चठाणं, से सव्ववायं इतिवेद इता, उब-
ठीए धम्म सदीहरायं ॥ २७ ॥ सेवारिपा
हाथि सराइ भत्तं, उवहाणवं दुःख खयठी-

आये, लोगं विदित्ता आरं पारंच, सव्वं पभू वारिय सव्व वारं ॥ २८ ॥ सोच्चाय धम्मं अरिहंत भासियं, समाहियं अथपउ विशुद्धं, तं सद्दहंताय जणा अणाउ, इंदेव देवाहि आगामिस्संति ॥ २९ ॥ तिबेमि ॥

॥ श्री प्रस्तावीक गाथाओ प्रारंभ ॥

पंच महव्वय सुव्वय मुलं, शमणामणा इलसाहु सुचिन्नं ॥ वेर वीरामण पजवसाणं, सव्व समुद्दमहोदधी तिथ्थं ॥ १ ॥ त्तिथ्थं करेहिं सुदेसिय मग्गं ॥ नरगतिरिख विव जीयं मग्गं ॥ सव्वं पवित्तं सुनिम्मिय सारं ॥ सिद्धि विमाणं अवं गुयदारं ॥ २ ॥ देवनरींद नमं सियपूइय ॥ सव्वजगुत्तम मंगळ मग्गं ॥ दुधरिसं गुण नायकमेक्कं ॥ मोख

पहस्स वडिंसग भूयं ॥ ३ ॥ देव दाणव गंधवा, जख रखस कीन्नरा ॥ बंभयारी नमंसंती, दुक्करं जे करिंती ते ॥ ४ ॥ एसधम्मे धुवे णीयए ॥ सासए जीणदेसिए ॥ सिझा सिझंति चाणेणं ॥ सिझिस्संति तहावरे, तिबेमी ॥ ५ ॥ अरिहंत सिद्ध पवयणं ॥ गुरुथेर, बहु स्सुय तवस्सीसु ॥ वछलयाय-तेसिं, अभिखनाणो वउगेय ॥ ६ ॥ दंसण विणय आवस्स एय, सीलवेय निरइयाए ॥ खणलव तवचीयाए, वेयावच्चे समाहिए ॥ ७ ॥ अपुव नाणग्गहणे, सुयभत्ति पवयणे पभावणया ॥ एएहिंकारणेहिं, तिथयरत्तंलहइ जीवो ॥ ८ ॥ जीणवयणे अणुरत्ता; जीणवयणं जे करंती भावेण ॥ अमला असंकीलिठा, ते हुंतिपरीत्त संसारी ॥ ९ ॥

एवंखु नाणिणोसारं, जंनहिंसइ कींचणं ॥ अहिंसा संजम च्चेव, एतावत्तं वियाणीया ॥ १० ॥ जाइंचवुद्धीं चइज्जपासं, भूतेहिं जाणे पडिलेह ायं ॥ तम्हा तिवीज्जो परमंति- णच्चा, सम्मत दंसी णकरेइ पावं ॥ ११ ॥ उमुच्च पासइह मच्चीएहीं, आरंभजीवी उभ- याणु पस्सी ॥ कामेसु गिद्धाणी चयंकरंति, संमिच्चमाणा पुणरेति गब्भं ॥ १२ ॥ सवणे नाणेय वीन्नाणे, पच्चख्खाणेय संजमे ॥ अ- णहनए तवे चेव, वोदाणे अकिरीया सिद्धी ॥ १३ ॥ सारं दंसणनाणं, सारंतव नियम संजम सीलं ॥ सारं जीणवर धम्मं; सारं संलेहणा मरणं ॥ १४ ॥ कल्लाण कोडि ज णणी, दुरंत दुरियारीवग्गणी ॒ णी " सं- सार जलहितरणी, ए गंच होइ जीव दया ॥ १५ ॥ आरंभे नत्थि दया, महीला संगे-

णनासए बंभं॥ संकाए सम्मत्त नासइ, पव्वजा अत्थगहणेणं ॥ १६ ॥ मज्जं विसय कसाया, निद्दा विकहाय पंचमी भणिया ॥ एए पंच पमाया, जीवा पडंति संसारे ॥ १७ ॥ लब्भंति वीमला भोए, लब्भंति सुर संपया ॥ लब्भंति पुत्त मित्तंच, एगोधम्मो न लब्भइ ॥ १८ ॥ एगो-हं नत्थिमे कोइ, नाह-मन्नस्स कस्सइ ॥ एवं अदीणमणसा, अप्पाण-मणुसासइ ॥ १९ ॥ एगोमे सासओ अप्पा, नाणदंसण संजुओ ॥ सेसामे बाहिराभावा, सव्वे संजोग लक्खणा ॥ २० ॥ नवी सुही देवता देवलोए, नवी सुही पुढवी पइराया ॥ नवि सुही सेठ सेणावइणं, एगंत सुही मुणि वीयरागी ॥ २१ ॥

अध्ययन संग्रह समाप्त.

पंच परमेष्ठी वंदणा.

(सवैया एकत्रीशा)

श्री अरिहंत देवने

नमुं श्री अरिहंत, करमाको कीयो अंत,
हुवासो केवळ पंथ, करुणा भंडारी है;
अतिसे चोतीसधार, पेंतीस वाणी उचार,
समजावे नरनार, पर उपगारी है;
शरीर सुंदर आकार, सूरजसो झळकार,
गुण है अनंत सार, दोष परिहारी है;
केतहै तिलोकरीख, मन, वच, काय करी;
ळळी ळळी वारंवार, वंदणा हमारी है.

श्री सिद्ध भगवंतने.

सकल करम टाळ, वशकर लीयो काल,
मुगतिसे रह्या माल, आतमाका तारी है;
देखत सकल भाव, हुवा है जगतराव;
सदाहि क्षायिक भाव, भये अविकारी है;

अचल अढल रुप, आवे नहि भवकूप,
अनुप सरुप ऊप, अैसी रिध धारी है;
केतहै तिलोकरीख, बतावो ए वास प्रभु,
सदाहि उगत सूर, वंदणा हमारी है.

श्री आचार्यजीने.

गुण है छतीश पूर, धारत धरम उर,
मारत करम क्रुर, सुमति विचारी है;
शुद्ध सो आचारवंत, सुंदर है रुपकंत,
भणिया सबी सिद्धांत, वांचणी सुप्यारी है;
अधिक मधुर वेण, कोइ नहि लोपे केण,
सकल जीवोका सेण, किरत अपारी है;
केत है तिलोक रीख, हितकारी देत शिख,
अैसे आचारज ताकु, वंदणा हमारी है,

श्री उपाध्यायजीने

पढत अगीआरे अंग, कर्मासु करे जंग,
पाखंडीको मान भंग, करण हुशीआरी है;

चउदे पूर्वधर, जाणत आगम सार,
भवियोके सुखकार, भ्रमणा निवारी है;
पढावे भाविक जण, थिर कर देत मन,
तप करी तावे तन, ममता निवारी है;
केत है तिलोकरीख, ज्ञान भानु पर तिख;
असे उपाध्याय ताकु, वंदणा हमारी है.

श्री साधुजीने.

आदरी संजम भार, करणी करे अपार,
सुमति गुपतिधार विकथा निवारी है;
जयणा करे छकाय, सावद न बोले वाय,
बुझाइ कषाय लाय, किरिया भंडारी है;
ज्ञान भणे आठे जाम, लेवे भगवंत नाम,
धरमको करे काम, ममताके मारी है;
केत है तिलोकरीख, कर्मा को टाळे विख,
असा मुनिराज ताकु, वंदणा हमारी है.

श्री गुरु देवने

जैसे कपडाको थान, दरजी बेतत आण,
खंड खंड करे जाण, देत सो सुधारी है;
काटके ज्युं सुत्रधार, हेमक कसे सुनार,
माटीके को जो कुंभकार, पात्र करे त्यारी है;
धरती के कीरसाण, लोह के लुहार जाण,
सील वाट सीला आण, घाट घडे भारी है;
केत है तिलोकरीख, सुधारे ज्युं गुरु शीष,
गुरु उपकारी, नित लीजे बलिहारी है.

गुरु मित्र गुरुमात, गुरु सगा गुरुतात,
गुरु भूप गुरु भ्रात, गुरु हितकारी है;
गुरु रवि गुरु चंद्र, गुरुपति गुरु इंद्र,
गुरु देव दे आणंद, गुरु पद भारी है;
गुरु दिठत ज्ञान ध्यान, गुरु दत दान मान;
गुरु देत मोक्ष थान, सदा उपकारी है;

केत है तिलोकरीख, भली भली दीनी शिख,
पल पल गुरुजीके, बंदणा हमारी है.

श्री चोवीस तीर्थंकरनी स्तुति.

रीखव अजीत जीननाथ, संभव अभिनंदना;
सुमती पद्म सूपार्श्व, चंद्रा प्रभु वंदना. १
सूबुद्धी शीतळ श्रीयंश, के वासूपुज्य ध्याइए;
विमळ अनंत धर्मनाथ, शांती गुण गाइए. २
कुंथु अरं च मल्लीनाथ, मुनीसुव्रत नीर्मळा,
नेमी अरीष्ट नेमीनाथ, पार्श्व महावीर भला. ३
ए चोवीशीना नाम, के नित्य प्रत्ये भजो;
हिंसा जुठ अदत्त, मैथुन परिग्रह तजो. ४
ए चोवीशीना नाम, के नित्य प्रत्ये ध्याइए;
जन्म मरण दुख दुर, मुक्ति पद पाइए. ५
वीशे वांदु वेरमाण, अगीयारे वांदु गणधरा;
बे करजोडी नामुं शीश, के साचा जीनेश्वरा. ६

कवीश्वर कहे करजोड, सूंणो रे भवी प्राणीया;
कर्महरण ए उपाय, के जगमें जाणीया. ७
साचो ते श्री जैन धर्म, व्यसन व्यशमें वस्यो;
चाल्यो कुकर्मनी चाल, चोर्याशीमां भटकीओ. ८
भम्यो अनंतो काळ, के धर्म विना कुगतिमां;
प्रभुजी करजो मुज उपर महेर, के मेलजो मुक्तिमां.

॥ चोवीश तीर्थंकरना नाम. ॥

१ श्रीरुषभदेव स्वामी.	१३ वीमलनाथ स्वामी.
२ अजीतनाथ स्वामी.	१४ अनंतनाथ स्वामी.
३ संभवनाथ स्वामी.	१५ धर्मनाथ स्वामी.
४ अभीनंदन स्वामी.	१६ शांतीनाथ स्वामी.
५ सुमतीनाथ स्वामी.	१७ कुंथुंनाथ स्वामी.
६ पद्म प्रभु स्वामी.	१८ अरनाथ स्वामी.
७ सुपार्श्वनाथ स्वामी.	१९ मल्लीनाथ स्वामी.
८ चंद्रप्रभु स्वामी.	२० मुनीसुव्रत स्वामी.

९ सुवीधीनाथ स्वामी.	२१ नमीनाथ स्वामी.
१० शीतलनाथ स्वामी.	२२ नेमीनाथ स्वामी.
११ श्रेयांसनाथ स्वामी.	२३ पार्श्वनाथ स्वामी.
१२ वासुपुज्य स्वामी.	२४ महावीर स्वामी.

॥ वीश वीहरमान तीर्थंकरनां नाम. ॥

१ श्रीमंधर स्वामी.	११ बज्रधर स्वामी.
२ युगमंधर स्वामी.	१२ चंद्रानन स्वामी.
३ बाहु स्वामी.	१३ चंद्रबाहु स्वामी.
४ सुबाहु स्वामी.	१४ भुजंगदेव स्वामी.
५ सुजात स्वामी.	१५ ईश्वर स्वामी.
६ स्वयंप्रभ स्वामी.	१६ नेमप्रभ स्वामी.
७ रुषभानन स्वामी.	१७ वीरसेन स्वामी.
८ अनंतवीर्य स्वामी.	१८ महाभद्र स्वामी.
९ सुरप्रभ स्वामी.	१९ देवजस स्वामी.
१० विसालप्रभ स्वामी.	२० अजीतसेन स्वामी.

नित्य नियम चिंतवना.

प्रथम चौद नियम विषे-गाथा.

सचित्त दव्व विगई, वाहण तंबोल वत्थ कुसुमेषु ॥ वाहण शयण विलेवण, बंभ दिशि नहाण भत्तेसु ॥ १ ॥

सचित्त-माटी, पाणी, अग्नि, वनस्पति, फळ, फूल, त्वचा, काष्ठ, मूळ, पत्र, बीज, अने जे कीधुं छेद्याने बे घडी थइ न होय ते तथा अग्नि प्रमुख बीजुं शस्त्र लाग्युं न होय; इत्यादिक सचित वस्तुनुं परीमाण करवुं.॥१॥ दव्व-जे वस्तु मुखमां जूदा जूदा स्वादने अर्थे नखाय छे, जेमके दातण, पाणी, विगेरे सचित्त तथा अचित द्रव्यनी गणत्री करवी

॥२॥ विगई–दूध, दहिं, घी, गोळ, तेल, तथा जे चीज कडाइमां तळाय छे; तेनुं मान करवुं ॥ ३ ॥ वाणह–पगरखा, तथा मोजा विगेरेनी गणत्री करवी ॥४॥ तंबोल–मुखवास, जेमके पान, सोपारी एलायची, लविंग, चुर्णादिकनुं वजन धारवुं ॥ ५ ॥ वत्थ–रेशमी, सुतराउ, शण, तथा उन विगेरेना वस्त्रनी गणत्री करवी ॥ ६ ॥ कुसुमेसु–जे वस्तु सुंघवामां आवे छे. जेम के पुष्प, छिकणी विगेरेनुं परिमाण करवुं ॥ ७ ॥ वाहण–हाथी, घोडा, बळद, गाडी, रथ, वहाण, बोट, ट्राम्वे विगेरे चरता, फरता, अने तरता वाहननो नियम करवो ॥ ८ ॥ सयण–सुवानी शय्या, पाट, पाटला, बिछाना विगेरेनी गणत्री करवी ॥ ९ ॥ विलेवण–जे वस्तु शरीर चोपडवामां आवे छे, जेमके पट्टी,

सुखड, चंदन विगेरे शरीरे विलेपन करवानी वस्तुना वजननुं माप करवुं ॥ १० ॥ बंभ-ब्रह्मचर्यनो नियम करवो ॥ ११ ॥ दिशि-पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उंचो, ने निचो ए छ दिशाए जवाना गाउनुं मान करवुं ॥ १२ ॥ नहाण-सर्वांगे नहावानी गणत्री करवी ॥ १३ ॥ भत्तेसु-जमतां भोजन पाणीनी वजननुं परिमाण करवुं ॥ १४ ॥ पृथ्वीकाय-माटी, मीठुं, खडी, खारो विगेरे पृथ्वीनां वजननुं परिमाण करवुं ॥ १५ ॥ अपकाय-नहावामां तथा वापरवामां काचा, तेमज उना पाणीनुं परिमाण करवुं ॥ १६ ॥ तेउकाय-चूला, दिवा, सगडी, विगेरेनी, गणत्री; तथा तेनाथी रांधेलुं जमवानो नियम धारवो ॥ १७॥ वाउकाय-पंखाथी, तथा लुगडाथी पवन ना-

खवो; फुंकवुं, हिंचवुं विगेरेनुं परिमाण करवुं ॥१८॥ वनस्पतिकाय—लीलोत्री, फळ, शाक, भाजी विगेरेनुं वजन धारवुं ॥ १९ ॥ त्रस-काय—हालता, चालता झीणां जंतुथी मांडीने बे इंद्रिय, तेइंद्रिय, चौइंद्रिय, पंचेंद्रिय रुप कोइ पण निरपराधी त्रस जीवने कुबुद्धिथी हणवा नहिं एवो नियम करवो ॥ २० ॥ असी—तर-वार, बंदुक, छरी, चप्पु, सुडी, विगेरे शस्त्रनुं परिमाण करवुं ॥ २१ ॥ मसी—कलम, रुश-नाइ, खडीयादिकनुं परिमाण करवुं ॥ २२ ॥ कृषी—घर, क्षेत्र, टांकु, भोंयरु, तळाव, वाव, कुवा विगेरेनी जमीन खोदवाना राचनुं तथा ते वापरवानुं परिमाण करवुं ॥ २३ ॥ उल्लु-णियाविहं—स्नान करीने शरीर लुंछवाना कपडानी गणत्री करवी ॥ २४ ॥ दंतणाविहं-

दातणनी गणत्री करवी ॥ २५ ॥ फळविहं-जे फळ नहावाना काममां आवे छे ते तथा वृक्षादिकना फळनी गणत्री करवी ॥ २६ ॥ अभंगणविहं-शरीरे तेल चोळवानुं परिमाण करवुं ॥ २७ ॥ उवट्टणाविहं-पिठी विगेरे चोळवानुं मान करवुं ॥ २८ ॥ पुष्पविहं-पुष्पादिक सुगंधी पदार्थनुं वजन धारवुं॥२९॥ आभरणविहं-दागीनादिकनुं मान करवुं॥३०॥ धूपविहं-अगरबत्ति विगेरेना धूपनुं मान करवुं ॥ ३१ ॥ पेजाविहं-औषध, चाह, काफी विगेरेनो कावो पीवानुं मान करवुं ॥ ३२ ॥ भख्खणविहं-सुखडी विगेरे भोजन विधिनुं परिमाण करवुं ॥ ३३ ॥ उदनविहं-काचा अन्नुं परिमाण करवुं ॥ ३४ ॥ सूपविहं-कठोळनुं परिमाण करवुं ॥ ३५ ॥ शाकविहं-

लीलां शाक, भाजी विगेरेनुं परिमाण करवुं ॥ ३६ ॥ महूरविहं—मेवो, वेल, मधुरां फळ विगेरेनुं परिमाण करवुं ॥ ३७ ॥ जमणाविहं जमवानुं भोजन, सुक्कु शाक विगेरेनुं परिमाण करवुं ॥ ३८ ॥ पाणी विहं—नहावानुं, वापरवानुं, तथा पीवाना पाणीनुं परिमाण करवुं ॥ ३९ ॥ उपरना पच्चखाण हमेशां यथाशक्तीए अवश्य करवां.

श्रावकना त्रण मनोर्थ विषे.

आरंभ परिग्रह तजी करी, क्यारे थउं व्रतधार ॥ अंत समय आलोयणा, करुं संथारो सार ॥ १ ॥

सागारी संथारो करवा विषे.

आहार शरीरने उपधी, पच्चखु पाप

अहार ॥ मरण हुवे तो वोसीरे, जीवुं तो आगार ॥ १ ॥

प्रसिद्ध कर्त्ताना नाम विषे दुहा.

त्रिजग त्राता प्रभू तने, वंदन वार हजार ॥
रुडा गरवा नामथी, थशे सदा जयकार॥१॥
बुद्धि हिण शुं करी शकुं, सत्रा सरञ्, सुखकार
दास त्रिभोवन एम कहे, भजो सदा किरतार॥

नित्य नियम प्रकरण समाप्त.

उपरना तेमज भीमशी माणेक विगेरेना छापेलां पुस्तको नि ेना शीरनामे मळशे.

त्रीभोवनदास रुगनाथदास शाह.

ठे. आकाशेठना कुवानी पोळ—अमदावाद.